কৃষ্ণকান্ত সন্দিকৈ ৰাজ্যিক মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়

Krishna Kanta Handiqui State Open University

Master Degree

SELF LEARNING MATERIAL

PG HN S3-02 (DSC)

SEMESTER III

उपन्यास साहित्य

HINDI

PG HN S3-02 (DSC)

TWO YEAR MASTER'S DEGREE COURSE

(CBCS in Accordance with NEP 2020)

SEMESTER- III

उपन्यास साहित्य

हिन्दी

Padmanath Gohainbaruah School of Humanities
KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

विषय विशेषज्ञ

प्रोफ़ेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम
प्रोफ़ेसर अमूल्य बर्मन, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय (सेवानिवृत विभागाध्यक्ष)
प्रोफ़ेसर भूषण पाठक, अध्यक्ष, बी.एस.कॉलेज, हाउली, बरपेटा

पाठयक्रम समन्वयक : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम, डॉ. उज्वल डेका बरुवा, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम,

एसएलएम् तैयारी टीम

इकाइयाँ	योगदानकर्ताओं के नाम
1, 2, 3, 11, 12, 13, 14	डॉ. अब्दुल लतीफ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक अध्यापिका, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय,
4, 5, 6, 7, 8, 9, 10	डॉ. अब्दुल लतीफ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, डॉ. टिंकू छेत्री, सहायक अध्यापिका, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय,

Editors Content : प्रांजल कुमार नाथ,सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम, डॉ.टिंकु छेत्री, सहायक अध्यापिका, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

Language : डॉ. नवकांत दास,सहायक अध्यापक एवं विभागाधक्ष्य, रंगापारा महाविद्यालय

डॉ. उज्वल डेका बरुवा, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम,

Structure & Format : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक अध्यापिका, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

July, 2025

This Self Learning Material (SLM) of the Krishna Kanta Handiqui State Open University is made available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-Share Alike 4.0 License (international)
http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.
Headquarters: Patgaon, Rani Gate, Guwahati - 781 017
City Campus: Resham Nagar, Khanapara, Guwahati - 781 006; www.kkhsou.in

अनुक्रमणिका

Page No

इकाई : 1 उपन्यास- भाग I **9-21**
उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप, उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास के प्रकार

इकाई : 2 उपन्यास- भाग II **22-37**
उपन्यास के प्रमुख तत्व, हिंदी उपन्यास का विकास

इकाई : 3 मैला आँचल (भाग-I) **38-54**
उपन्यासकार 'रेणु' का परिचय, मैला आँचल की कथावस्तु और पात्र परिचय

इकाई : 4 मैला आँचल (भाग-II) **55-66**
आंचलिकता से तात्पर्य, आंचलिकता के महत्वपूर्ण तत्व, मैला आँचल उपन्यास की आंचलिकता

इकाई : 5 मैला आँचल (भाग-III) **67-80**
'मैला आँचल' का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, 'मैला आँचल' का राजनीतिक संदर्भ, 'मैला आँचल' भाषा शिल्प

इकाई : 6 कर्मभूमि (भाग-I) **81-93**
उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय, प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय दृष्टि और सामाजिक चेतना, कर्मभूमि उपन्यास की कथावस्तु एवं समीक्षा

इकाई : 7 कर्मभूमि (भाग-II) **94-107**
कर्मभूमि उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य, कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित भारतीय मध्यवर्ग

इकाई : 8 कर्मभूमि (भाग-III) **108-120**
कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्र, प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त पक्ष और भाषा, कर्मभूमि उपन्यास की भाषा

इकाई : 9 गुनाहों का देवता (भाग-I) 121-136
उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' का परिचय, स्वातंत्योन्तर हिंदी साहित्य में धर्मवीर भारती का योगदान, गुनाहों का देवता उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

इकाई : 10 गुनाहों का देवता (भाग-II) 137-150
गुनाहों का देवता उपन्यास की मूल संवेदना और उद्देश्य, गुनाहों का देवता उपन्यास में संघर्ष के विविध आयाम, गुनाहों का देवता उपन्यास में मूल्यबोध

इकाई : 11 गुनाहों का देवता (भाग-III) 151-165
'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्र, पात्रों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का चित्रण, 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा-शैली, प्रतीक और बिंबों का प्रयोग

इकाई : 12 तमस (भाग-I) 166-178
उपन्यासकार 'भीष्म साहनी' का परिचय , 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

इकाई : 13 तमस (भाग-II) 179-190
'तमस' उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य, 'तमस' उपन्यास में प्रगतिशील जीवन मूल्य, 'तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता, 'तमस' उपन्यास में सामाजिक राजनैतिक परिवेश

इकाई : 14 तमस (भाग-III) 191-203
तमस उपन्यास का पात्र परिचय, 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली, 'तमस' उपन्यास में संवाद योजना

विषय प्रवेश

एम.ए. हिंदी के दो वर्षीय पाठ्यक्रम का तृतीय सेमेस्टर का 'उपन्यास' विषय-विशिष्ट मुख्य पाठ्यक्रम (DSC) अध्ययन के लिए प्रस्तुत है। यह पत्र हिंदी उपन्यास के सैद्धांतिक और आलोचनात्मक अध्ययन से संबंधित है। इसमें कुल चौदह इकाईयाँ शामिल हैं। यह एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जो उपन्यास को केवल कहानी कहने का माध्यम मानकर सीमित नहीं करता, बल्कि उसे सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और भाषाई संदर्भों से जोड़कर देखता है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर इक्कीसवीं सदी तक, हिंदी उपन्यास ने केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति तक सीमित रहकर नहीं, बल्कि समाज और जीवन के विविध पहलुओं को भी प्रतिबिंबित किया है। उपन्यास के अध्ययन से विद्यार्थी यह समझ पाते हैं कि किस प्रकार लेखक ने समाज, व्यक्ति, समय और परिस्थितियों का विश्लेषण अपनी रचना में किया है। इस पत्र में विभिन्न उपन्यासों, उनके लेखकों, कथावस्तु, पात्र, शैली, भाषा और विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि उन्हें उपन्यास को गहराई से समझने, आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने और साहित्यिक विश्लेषण में दक्ष बनाने के लिए प्रेरित करना भी है। यह पाठयक्रम छात्रों, शोधार्थियों और हिंदी साहित्य के गंभीर अध्येताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें उपन्यास के माध्यम से समाज, संस्कृति और मानव मनोविज्ञान की गहन समझ प्रदान करता है। प्रत्येक इकाई में 'अपनी प्रगति जांचें' शीर्षक से कुछ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न शामिल हैं और उनके उत्तर का रूपरेखा 'प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में नए-नए प्रश्नों और उनके समाधान के लिए आत्मविश्वास पैदा करना है। प्रत्येक इकाई में 'महत्वपूर्ण बिंदु' शीर्षक से प्रमुख तथ्यों और साहित्यिक दृष्टांतों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, इकाई के अंत में 'अधिक जानने के लिए पढ़ें' शीर्षक से कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूची दी गई है, जो प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अत्यावश्यक है। इस प्रकार यह पत्र उपन्यास को केवल साहित्यिक कथा नहीं बल्कि समकालीन समाज और मानव जीवन का अभिन्न साहित्यिक दर्पण और गंभीर अध्ययन का माध्यम सिद्ध करता है।

इकाई 1- इस 'उपन्यास- भाग I' इकाई में विद्यार्थियों को उपन्यास की विधा से परिचित कराया जाता है। इकाई की शुरुआत उपन्यास के शाब्दिक एवं व्यावहारिक अर्थ से की गई है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि उपन्यास एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो जीवन की विविध घटनाओं, अनुभूतियों और समाज के यथार्थ को व्यापक रूप में प्रस्तुत करती है। इकाई में विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई उपन्यास की परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि विचार, अनुभूति और यथार्थ का कलात्मक समन्वय है। इसके साथ ही इकाई में उपन्यास के प्रकारों का भी परिचय दिया गया है। अंतिम सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें, और अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं, जिनकी सहायता से शिक्षार्थी उपन्यास के अर्थ, स्वरूप, परिभाषा और प्रकार को विस्तारपूर्वक समझ सकेंगे।

इकाई 2- प्रस्तुत 'उपन्यास- भाग II' इकाई में विद्यार्थियों को उपन्यास के प्रमुख तत्वों तथा हिंदी उपन्यास के विकास की विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है। इकाई में उपन्यास के प्रमुख तत्वों का अध्ययन

कराया गया है। प्रत्येक तत्व उपन्यास की संरचना में अपना विशिष्ट योगदान देता है। साथ ही हिंदी उपन्यास के विकास-क्रम को स्पष्ट किया गया है। इसमें प्रारंभिक उपन्यासों से लेकर आधुनिक और समकालीन उपन्यासों तक की यात्रा का परिचय कराया गया है। यह इकाई विद्यार्थियों को उपन्यास के निर्माण की आंतरिक संरचना और उसके ऐतिहासिक विकास की समग्र दृष्टि प्रदान करती है। इससे शिक्षार्थी न केवल उपन्यास की कलात्मकता को समझ पाते हैं, बल्कि समाज और समय के संदर्भ में उसके महत्व को भी पहचानते हैं। जिसे पढ़कर विद्यार्थी उपन्यास के प्रमुख तत्वों और हिंदी उपन्यास के विकास की गहन समझ प्राप्त कर सकेंगे तथा इकाई से संबंधित प्रश्नों का सफल समाधान कर पाएंगे।

इकाई 3- 'मैला आँचल (भाग- I)' इकाई में विद्यार्थियों को हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' के जीवन, रचनात्मक व्यक्तित्व तथा उनके अमर उपन्यास 'मैला आँचल' से परिचित कराया जाता है । इसमें उनके जन्म, शिक्षा, साहित्यिक जीवन, रचनात्मक दृष्टि और प्रमुख कृतियों का उल्लेख किया गया है। साथ में कथावस्तु का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारतीय गाँव की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। इकाई में 'मैला आँचल' के प्रमुख पात्रों का भी परिचय दिया गया है जिनके माध्यम से रेणु ने भारतीय गाँव के विविध सामाजिक वर्गों और मनोवैज्ञानिक स्थितियों का सजीव चित्रण किया है। इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर शिक्षार्थी 'मैला आँचल' के कथानक और पात्रों को गहराई से समझ सकेंगे ।

इकाई- 4- प्रस्तुत 'मैला आँचल (भाग-II)' इकाई में विद्यार्थियों को उपन्यास साहित्य में आंचलिकता की अवधारणा, उसके प्रमुख तत्वों तथा फणीश्वरनाथ 'रेणु' के प्रसिद्ध उपन्यास 'मैला आँचल' में उसकी विशिष्ट अभिव्यक्ति से परिचित कराया जाता है। इकाई में 'आंचलिकता से तात्पर्य' एवं आंचलिकता के महत्वपूर्ण तत्वों का विश्लेषण किया गया है। साथ में 'मैला आँचल' उपन्यास की आंचलिकता का विशद विवेचन किया गया है। रेणु जी ने ग्रामीण जीवन को उसकी संपूर्ण जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है। गाँव की बोली, वहाँ के लोकगीत, त्यौहार, राजनीतिक हलचलें, जातीय संरचनाएँ और लोकविश्वास- सबका सजीव चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। इकाई में सम्मिलित विविध बिंदुओं को पढ़कर शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही सम्बंधित प्रश्नों का हल करने में सक्षम होंगे ।

इकाई-5- प्रस्तुत 'मैला आँचल (भाग-III)' इकाई में विद्यार्थियों को फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' के सामाजिक और राजनीतिक आयामों के साथ-साथ उसकी भाषा-शिल्प संबंधी विशेषताओं का अध्ययन कराया जाता है। इस इकाई का उद्देश्य यह है कि शिक्षार्थी समझ सकें कि यह उपन्यास केवल कथा नहीं, बल्कि स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय समाज का एक यथार्थ दस्तावेज है, जिसमें व्यक्ति और समाज दोनों के संघर्ष, परिवर्तन और चेतना का सजीव चित्रण किया गया है। सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है । जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे ।

इकाई-6- 'कर्मभूमि (भाग-I)' इकाई में विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के युगांतरकारी उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद के जीवन, साहित्यिक योगदान और उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'कर्मभूमि' से परिचित कराया जाता है। यह इकाई प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना और यथार्थवादी दृष्टि को समझने में विद्यार्थियों की सहायता करती है। साथ में 'कर्मभूमि' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा प्रस्तुत की गई है। यह इकाई विद्यार्थियों को यह समझने में सक्षम बनाती है कि 'कर्मभूमि' केवल एक कथा नहीं,

बल्कि एक विचारधारा है – जो व्यक्ति को कर्म और समाजसेवा के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। इस का अध्ययन छात्रों को इकाई से संबंधित संपूर्ण जानकारी देगा और वे प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे।

इकाई–7– प्रस्तुत 'कर्मभूमि (भाग–II)' इकाई में विद्यार्थियों को मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'कर्मभूमि' की मूल समस्या, उसके उद्देश्य तथा उसमें चित्रित भारतीय मध्यवर्ग के यथार्थ स्वरूप से परिचित कराया जाता है। कर्मभूमि' में चित्रित भारतीय मध्यवर्ग का विश्लेषण किया गया है। प्रेमचंद ने मध्यवर्ग को उस वर्ग के रूप में चित्रित किया है जो समाज के परिवर्तन का नेतृत्व करने में सक्षम होते हुए भी अक्सर भ्रम, स्वार्थ और द्वंद्व में उलझा रहता है। यह इकाई विद्यार्थियों को यह समझने में सक्षम बनाती है कि 'कर्मभूमि' उपन्यास में निहित समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समूचे समाज की नैतिक और सामाजिक चेतना से जुड़ी हैं। इससे शिक्षार्थी प्रेमचंद के यथार्थवादी दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों और समाज–सुधार की भावना को गहराई से समझ सकते हैं। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे ।

इकाई–8– इस 'कर्मभूमि (भाग–III)' इकाई में विद्यार्थियों को मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'कर्मभूमि' की मूल समस्या, उसके उद्देश्य तथा उसमें चित्रित भारतीय मध्यवर्ग की सामाजिक और मानसिक दशा से परिचित कराया जाता है। यह इकाई यह स्पष्ट करती है कि 'कर्मभूमि' केवल एक सामाजिक कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, राजनीतिक और धार्मिक संघर्षों का प्रतीकात्मक चित्रण है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में दिखाया है कि जीवन का वास्तविक मूल्य कर्म में निहित है – केवल विचार या उपदेश पर्याप्त नहीं, बल्कि उन्हें व्यवहार में लाना ही सच्चे जीवन का संकेत है। साथ में 'कर्मभूमि' में चित्रित भारतीय मध्यवर्ग के स्वरूप पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और विविध प्रश्नों का हल करने में सक्षम होंगे ।

इकाई–9– प्रस्तुत 'गुनाहों का देवता (भाग–I)' इकाई में विद्यार्थियों को हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार धर्मवीर भारती के जीवन, साहित्यिक योगदान और उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'गुनाहों का देवता' से परिचित कराया जाता है। यह इकाई विद्यार्थियों को यह समझने में सक्षम बनाती है कि 'गुनाहों का देवता' केवल कथा नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और नैतिकता के बीच के जटिल संबंधों का प्रतिबिंब है। इससे शिक्षार्थी उपन्यास के पात्रों, कथानक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों का गहन विश्लेषण कर सकते हैं। पाठ के अंत तक शिक्षार्थी इस इकाई की मुख्य अवधारणाओं को समझ पाएंगे और संबंधित प्रश्नों का समाधान कर सकेंगे।

इकाई– 10– 'गुनाहों का देवता (भाग–II)' इकाई में विद्यार्थियों को 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की मुख्य संवेदना, उसमें चित्रित संघर्ष के विविध आयाम और उपन्यास में निहित मूल्यबोध से परिचित कराया गया है। उपन्यास की केंद्रित संवेदना मानव मन की जटिलता और नैतिक द्वंद्व है। धर्मवीर भारती ने प्रेम, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के द्वंद को पाठक के समक्ष गहराई से प्रस्तुत किया है। उपन्यास में नैतिकता, आत्म–जागरूकता, सामाजिक जिम्मेदारी और आदर्शों का पालन प्रमुख मूल्यबोध के रूप में दिखाई देता है। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थियों को उपन्यास की भावनात्मक और नैतिक गहराई, संघर्ष की बहुआयामी प्रकृति और मानवीय मूल्यों की समझ प्राप्त होती है। अधिक जानने के लिए पढ़े एवं कुछ

अभ्यास प्रश्न इकाई के अंत में दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के बारे में जानेंगे और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर आसानी से दे पाएंगे।

इकाई-11- 'गुनाहों का देवता (भाग-III)' इकाई में विद्यार्थियों को धर्मवीर भारती के उपन्यास 'गुनाहों का देवता' की प्रमुख विशेषताओं और साहित्यिक विश्लेषण के पहलुओं से परिचित कराया जाता है। इकाई में उपन्यास के प्रमुख पात्र का अध्ययन किया गया है। इन पात्रों के माध्यम से उपन्यास में मानवीय संघर्ष, प्रेम, नैतिक द्वंद और सामाजिक दबावों का यथार्थ चित्रण किया गया है। साथ में उपन्यास की भाषा-शैली और प्रतीक और बिंबों पर प्रकाश डाला गया है। धर्मवीर भारती ने सरल, भावपूर्ण और मार्मिक भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें संवादों और वर्णनों के माध्यम से पात्रों की मनोस्थिति और सामाजिक परिवेश का सजीव चित्र प्रस्तुत होता है। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थियों को परीक्षाओं में पूछे जाने वाले विविध प्रश्नों को आत्मविश्वासपूर्वक हल करने में सहायता मिलेगी।

इकाई-12- 'तमस (भाग-I)' इकाई में विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यासकार भीष्म साहनी के जीवन, साहित्यिक योगदान तथा उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' से परिचित कराया जाता है। इकाई में उपन्यासकार भीष्म साहनी का परिचय प्रस्तुत किया गया है। साथ में 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया गया है। उपन्यास स्वतंत्रता के समय और विभाजन की पृष्ठभूमि में घटित घटनाओं को केंद्र में रखता है। यह इकाई विद्यार्थियों को 'तमस' के सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय पहलुओं को समझने में सक्षम बनाती है। अंत में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें, तथा अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं, जिनकी सहायता से विद्यार्थी उपन्यासकार भीष्म साहनी, 'तमस' की कथावस्तु और समीक्षा को गहराई से समझ सकेंगे और इकाई से जुड़े प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वासपूर्वक लिख पाएंगे।

इकाई-13- 'तमस (भाग-II)' इकाई में भीष्म साहनी के प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' का अध्ययन किया जाता है, जिसमें विभाजनकालीन भारतीय समाज की पीड़ा, विघटन और मानवता के संकट का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस इकाई में 'तमस' उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उपन्यास की मूल समस्या विभाजन के समय फैली धार्मिक असहिष्णुता, हिंसा और मानवीय मूल्यों के ह्रास से जुड़ी है। यह इकाई विद्यार्थियों को 'तमस' के माध्यम से विभाजनकालीन भारत की सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों, मानवीय संवेदनाओं और प्रगतिशील मूल्यों की गहराई से समझ प्रदान करती है। साथ ही विषय की मूल अवधारणाओं को आत्मसात करेंगे और उनका उपयोग प्रश्नों को हल करने में कर पाएंगे।

इकाई-14- 'तमस (भाग-III)' इकाई में भीष्म साहनी के प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' के विविध साहित्यिक आयामों - पात्रों, भाषा-शैली और संवाद योजना- का अध्ययन किया जाता है। इकाई में उपन्यास के पात्र परिचय पर चर्चा की गई है। 'तमस' में नायक-नायिका के साथ-साथ अनेक सहायक पात्र हैं, जो विभाजन की त्रासदी और सामाजिक विघटन को जीवंत रूप में चित्रित करते हैं। साथ में उपन्यास की भाषा-शैली और संवाद योजना का अध्ययन किया गया है। इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों को 'तमस' उपन्यास की संरचना, पात्रों की संवेदना, भाषा की विशेषता और संवादों की कलात्मकता से अवगत कराना है। जब छात्र इस इकाई को पढ़ेंगे, तो वे इसके बारे में बेहतर समझ विकसित कर पाएंगे और उससे जुड़े प्रश्नों को हल करने में भी सक्षम हो जाएंगे ।

इकाई-1 : उपन्यास (भाग I)

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप

1.4 उपन्यास की परिभाषा

1.5 उपन्यास के प्रकार

1.6 सारांश

1.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

1.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1.9 अभ्यास प्रश्न

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- उपन्यास शब्द की उत्पत्ति और उसके वास्तविक अर्थ को समझेंगे।
- उपन्यास के स्वरूप और उसकी विशिष्टताओं का अध्ययन करेंगे।
- उपन्यास की विभिन्न परिभाषाओं से अवगत होंगे।
- हिन्दी और अन्य भाषाओं के साहित्यकारों द्वारा दी गई उपन्यास की परिभाषाओं को जानेंगे ।
- उपन्यास के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- साहित्यिक विकास में उपन्यास विधा के महत्व और उपयोगिता को समझेंगे।

1.2 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की गद्य-विधाओं में उपन्यास एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विधा है, जिसने न केवल साहित्यिक जगत को समृद्ध किया है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों को भी गहराई से प्रभावित किया है। 'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति और उसके अर्थ पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन भर नहीं, बल्कि मानव-जीवन के विविध अनुभवों, संघर्षों और भावनाओं का सजीव चित्रण है। इसमें

व्यक्ति और समाज के रिश्तों, मानवीय मूल्यों और जीवन की यथार्थपरक समस्याओं को कथा-रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यही कारण है कि उपन्यास को आधुनिक साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा माना गया है।

उपन्यास के उदय के कारणों पर विचार करते हुए डॉ. गोपाल राय लिखते हैं- ''ईसवी सन् की पहली सहस्राब्दी में दुनिया की किसी भी भाषा में उपन्यास नहीं मिलता। संभवत: उपन्यास के उदय और विकास के लिए जो परिस्थितियां अपेक्षित थीं वे प्रथम सहस्राब्दी तक अस्तित्व में नहीं आयी थीं। उपन्यास के अनुकरण और पल्लवन के लिए जरूरी बुनियादी संरचना के रूप में गद्य का विकास और मुद्रण यंत्र का आविष्कार आवश्यक था। यूरोप में तेरहवीं शताब्दी में मुद्रण यंत्र का आविष्कार हुआ, जिससे गद्य के विकास में अभूतपूर्व तेजी आयी। सामंतवाद के स्थान पर पूंजीवाद के उदय का भी समय लगभग यही है। पूंजीवाद के साथ मध्यवर्ग का भी विकास हुआ, जिसने अपनी विशालता और बौद्धिक जागरूकता के कारण विशाल पाठक वर्ग का भी रूप ले लिया। चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप में मध्यवर्गीय पाठक वर्ग पैदा हो गया था, जिसने वहां उपन्यास के उदय के लिए बुनियादी संरचना के निर्माण में योग दिया। फलस्वरूप सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व ही यूरोप में उपन्यास अस्तित्व में आ गया।''

1.3 उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप:

उपन्यास' शब्द का प्रारम्भिक उपयोग एक समान रूप में नहीं हुआ था, बल्कि अलग-अलग भाषाओं और साहित्यिक परम्पराओं में इसके लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, मराठी भाषा में 'कादम्बरी' शब्द उपन्यास के रूप में प्रयुक्त होता था। इसी तरह गुजराती साहित्य में उपन्यास को 'नवलकथा' कहा जाता था। बांग्ला भाषा में अंग्रेज़ी के शब्द Novel का सीधा प्रभाव पड़ा और उसी के आधार पर 'उपन्यास' शब्द का प्रचलन शुरू हुआ। हिन्दी साहित्य पर बांग्ला साहित्य का गहरा प्रभाव माना जाता है। इस सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रभाव के कारण ही हिन्दी लेखन में भी उपन्यास के लिए 'उपन्यास' शब्द अपनाया गया। बांग्ला के प्रसिद्ध साहित्यकार भूदेव मुखोपाध्याय (भूदेव मुखर्जी) ने इस शब्द को प्रचलित करने में विशेष

योगदान दिया। उनकी एक प्रसिद्ध कृति 'ऐतिहासिक उपन्यास' है, जो सन् 1862 में प्रकाशित हुई थी। माना जाता है कि इसी ग्रंथ में पहली बार 'उपन्यास' शब्द का व्यवस्थित और साहित्यिक प्रयोग हुआ, जिसके बाद यह शब्द धीरे-धीरे हिन्दी में भी स्थापित हो गया। बालकृष्ण भट्ट ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'उपन्यास' में 'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति और उसके विभिन्न अर्थों पर विस्तार से विचार किया है। उनके अनुसार 'उपन्यास' शब्द तीन अवयवों से मिलकर बना है- उप + नि + आस । हिन्दी का 'न्यास' शब्द संस्कृत के न्यास॒ से निकला है। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत धातु अस् (रखना) में 'नि' उपसर्ग और 'घत्र' प्रत्यय लगने से हुई है। 'न्यास' का शाब्दिक अर्थ होता है रखना, स्थापित करना अथवा आरोपित करना। जब इसमें 'उप' उपसर्ग जोड़ा जाता है तो यह 'उपन्यास' बन जाता है, जिसका अर्थ होता है 'निकट रखना' या 'समीप में स्थापित करना'। भट्ट लिखते हैं कि अमरकोश में उपन्यास के कई अर्थ दिए गए हैं। वहां इसे वार्तालाप या बातचीत करने के अर्थ में भी समझा गया है। अमरकोश में इस आशय का उल्लेख मिलता है- 'उपन्यासस्तु वाङ्मुखम्', अर्थात उपन्यास का एक अर्थ संवाद या वार्ता भी है। इसी आधार पर बालकृष्ण भट्ट यह मानते हैं कि उपन्यास वह विधा है जिसमें मानव जीवन से जुड़े किसी भी तत्व या यथार्थ को कथन-योग्य रूप में पाठक के समीप रखा जाता है। संस्कृत साहित्य में भी 'उपन्यास' शब्द का उल्लेख मिलता है। संस्कृत के लक्षण-ग्रंथों में यह कहा गया है कि- ''उपन्यास प्रसन्नता प्रदान करने वाली कृति है।'' अर्थात उपन्यास वह रचना है जो जीवन की गूढ़ताओं को सरल रूप में प्रस्तुत कर मनुष्य को आनंद और संतोष प्रदान करती है।

हिन्दी साहित्य में 'उपन्यास' शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1875 के आसपास देखने को मिलता है। इस प्रयोग का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को दिया जाता है, जिन्होंने हिन्दी गद्य को एक नई दिशा देने का कार्य किया। आगे चलकर हिन्दी साहित्य में इस शब्द की प्रतिष्ठा को और गहराई मिली जब श्रीपत राय और भैरव प्रसाद गुप्त के संपादन में 'उपन्यास' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। यह पत्रिका अपने समय की प्रसिद्ध 'कहानी' पत्रिका के साथ साहित्यिक क्षेत्र में सामने आई और शीघ्र ही लेखकों तथा पाठकों के बीच लोकप्रिय हो गई। 'उपन्यास' शीर्षक वाली इस पत्रिका ने हिन्दी उपन्यास लेखन को एक नया मंच

प्रदान किया। इसने न केवल उपन्यासकारों को अपनी रचनात्मकता अभिव्यक्त करने का अवसर दिया बल्कि हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा के विकास और प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण भी तैयार किया।

उपन्यास और कहानी का संबंध गहरा है, पर दोनों एक नहीं है। दोनों में अंतर है। कहानी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में अनेक घटनाएँ होती हैं। उपन्यास के स्वरूप के बारे में संक्षेप में कहा जाए तो ये विशाल और व्यापक है। कहानी एक लघु रचना होती है, जिसमें मुख्य रूप से एक ही घटना या अनुभव को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है और पात्रों की संख्या सीमित होती है। इसका समय और कथानक संक्षिप्त और सीधे होते हैं, और उद्देश्य पाठक को मनोरंजन, शिक्षा या संदेश देना होता है। इसके विपरीत, उपन्यास एक लंबी और विस्तृत गद्य रचना है, जिसमें अनेक पात्र, घटनाएँ और उपकथाएँ होती हैं। उपन्यास में समय, स्थान और घटनाओं की विविधता अधिक होती है और यह मानव जीवन, समाज, संस्कृति, राजनीति और मनोविज्ञान जैसे व्यापक विषयों का विश्लेषण करता है। कहानी जहाँ सरलता और संक्षिप्तता के लिए जानी जाती है, उपन्यास जटिल कथानक और पात्रों के विकास के लिए जाना जाता है। मानव जीवन की यथार्थ और काल्पनिक चित्रण विभिन्न पात्रों के माध्यम से उपन्यास में होता है। साहित्यिक विधाओं में उपन्यास एक अपेक्षाकृत नई, आधुनिक और अत्यंत लोकप्रिय विधा मानी जाती है। यह वह साहित्यिक रूप है जिसमें जीवन के विभिन्न पक्षों को सम्पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। हेगेल और रैल्फ फॉक्स का मत है कि ''उपन्यास मध्यमवर्ग का महाकाव्य है।'' कथा कहने की प्राचीन परम्परा से भिन्न, उपन्यास आधुनिक सभ्यता की उपज है। अपने आरंभिक दौर में उपन्यास ने संस्कृत महाकाव्यों, मध्यकालीन प्रेमाख्यानों और इतिहास से लेकर आधुनिक काल तक का विकास क्रम तय किया है। समय के साथ सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक संरचनाओं में आए परिवर्तनों ने कथा रूपों और उनकी संरचना में भी नयापन लाया। प्रारंभिक काल के उपन्यास मुख्यत: मनोरंजन के उद्देश्य से लिखे गए थे, जिनमें यथार्थ का चित्रण बहुत सीमित रूप में मिलता है।

1.4 उपन्यास की परिभाषा

उपन्यास को भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने विविध रूपों में परिभाषित किया है, जो निम्न प्रकार हैं-



महत्वपूर्ण बिंदु

➢ साहित्यिक विधाओं में 'उपन्यास' सर्वाधिक नयी, आधुनिक और लोकप्रिय विधा है। उपन्यास वह साहित्यिक विधा है जिसमें जीवन को समग्रता के साथ चित्रित किया जाता है।

➢ उपन्यास को मराठी में 'कादंबरी' और गुजराती में 'नवलकथा' के नाम से जाना जाता है।

➢ आरम्भिक काल में उपन्यास मनोरंजन के लिए लिखे जाते थे, उनमें यथार्थ का चित्रण बहुत कम किया गया है।

भारतीय विद्वानों के अनुसार उपन्यास

प्रेमचंद उपन्यास को मानव चरित्र के साथ जोढ़कर देखने के पक्ष में है। वे उपन्यास को मानव चरित्र के रहस्यों को उद्घाटन करने वाला भी मानते हैं। उन्होंने उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है- 'मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के अनुसार - ''उपन्यास व्यक्ति के अपनी परिस्थतियों के साथ संबंध की अभिव्यक्ति के उत्तरोत्तर विकास का प्रतिनिधित्व करता है।''

डॉ. देवराज उपाध्याय ने उपन्यास को गद्य-साहित्य का अन्यतम रूप स्वीकार किया है। और उन्होंने उपन्यास का आधार 'कथा' को माना है। उन्होंने उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा- ''उपन्यास गद्य-साहित्य का अन्यतम रूप है, जिसका आधार कथा है- चाहे वह सीधे मनुष्य की हो या मनुष्येतर जीव और निर्जीव प्रकृति की, चाहे वह सच्ची हो या कल्पित।''

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी उपन्यास को परिभाषित करने का प्रयास किया है। शुक्ल जी ने उपन्यास को मानव जीवन के विविध रूपों से परिचय करानेवाला विधा मानते हैं। और इस मामले उन्होंने उपन्यास को इतिहास से भी आगे रखा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- ''मानव जीवन के अनेक रूपों का परिचय कराना उपन्यास का काम है। यह उन सूक्ष्म घटनाओं को प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न करता है, जिनमें मनुष्य का जीवन बनता है और जो इतिहास आदि की पहुँच से बाहर है।''



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार उपन्यास क्या है? स्पष्ठ कीजिए।

प्रश्न 2. उपन्यास का साहित्यिक अर्थ क्या है?

प्रश्न 3. उपन्यास और कहानी में क्या मुख्य अंतर है?

बाबू श्यामसुंदर दास उपन्यास को मनुष्य के वास्तविक जीवन से जोढ़कर देखते हैं। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि उपन्यास काल्पनिक कथा है। उनके अनुसार- ''उपन्यास मनुष्य जीवन के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने सिर्फ गद्यात्मक कृति को ही उपन्यास मानते हैं, पद्यात्मक कृति को नहीं। उन्होंने उपन्यास की व्याख्या इस प्रकार की है - ''उपन्यास से आजकल गद्यात्मक कृति का अर्थ लिया जाता है। पद्यबद्ध उपन्यास नहीं हुआ करते।''

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार उपन्यास

पाश्चात्य विद्वानों ने भी उपन्यास को अपने-अपने तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है। जिन्हें हम निम्न प्रकार रेखांकित कर सकते हैं-

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी ने उपन्यास को दीर्घकार काल्पनिक कथा के रूप में स्वीकार किया है, जिसमें पात्र वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। ''उपन्यास एक दीर्घाकार काल्पनिक कथा या आख्यान है, जिसके द्वारा एक कार्य-करण श्रृंखला में बँधे हुए कथानक में वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और कार्यों का चित्रण किया गया हो।''

डॉ. मूलर ने उपन्यास को जीवन की आलोचना मानते हैं। उनके अनुसार उपन्यास आदर्श हो अथवा यथार्थ मुख्य रूप से मानवीय अनुभव का निरूपण ही है। डॉ. मूलर उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- ''उपन्यास मूलत: मानवीय अनुभव का निरूपण है, चाहे वह यथार्थ हो अथवा आदर्श और इस प्रकार उपन्यास में अनिवार्यत: जीवन की आलोचना रहती है।''

इसी प्रकार फ्रॉस उपन्यास को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखने के पक्ष में है। फ्रॉस ने उपन्यास की व्याख्या करते हुए कहा है कि- ''उपन्यास उस गद्य आख्यान को कहा जाता है, जो यथार्थ जीवन का यथार्थवादी दृष्टि से अध्ययन करे।''

इस तरह भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास की अनेक परिभाषएँ

भिन्न-भिन्न रूपों में दी हैं। लेकिन इन परिभाषाओं से गुजरते हुए एक बात स्पष्ठ हो जाती है कि उपन्यास को किसी एक परिभाषा में बांधना संभव नहीं है। आज भी उपन्यास की भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ की जा रही है और आगे भी उपन्यास को लेकर चर्चाएँ होती रहेगी।

1.5 उपन्यास के प्रकार

उपन्यासों को हम विषयवस्तु के आधार पर, उपन्यास तत्व के आधार पर और शैली के आधार पर भाग कर सकते हैं। मूलत: उपन्यास को अनेक भागों में बांटा जा सकता है। उपन्यास के अनेक प्रकार हो सकते हैं। पर हम उपन्यास को मुख्यत: निम्न प्रकार विभाजित कर, उन पर विचार करेंगे।

1. **सामाजिक उपन्यास :** उपन्यासों में सामाजिक उपन्यास सबसे ज्यादा लिखा गया है। सामाजिक उपन्यास में सामाजिक समस्याओं, समाज में घटित घटनाओं, समाज में रह रहे मनुष्यों के सुख, दुख, समानता, विषमता आदि तमाम विषयों को समेटा जाता है। वस्तुत: सामाजिक उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार पाठकों सचेत करते हैं और इसके माध्यम से उपन्यासकार तमाम सामाजिक विसंगतियों दूर करने का प्रयास करते हैं।

   प्रेमचन्द पूर्व सामाजिक उपन्यासों में प्रमुख हैं- लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरू'(1882), श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा रचित 'भाग्यवती' (1877), बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी' (1882), अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'ठेठ हिंदी का ठाठ' (1899) आदि। इन उपन्यासों में सामजिक सुधार का स्वर प्रमुख रहा है।

   प्रेमचन्द युगीन उपन्यासकारों में प्रेमचंद के आलावा जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', सियारामशरण गुप्त, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', चतुरसेन शास्त्री आदि प्रमुख हैं।

   प्रेमचंद की लगभग सभी रचनाएँ सामाजिक समस्याओं से जुढ़ी हुई हैं। उनके द्वारा रचित उपन्यास क्रमश: 'सेवासदन' (1918), 'प्रेमाश्रम' (1921), 'रंगभूमि' (1925), 'निर्मला' (1927), 'गबन' (1931), 'कर्मभूमि' (1932), 'गोदान' (1936) आदि हैं। इन सारे उपन्यासों की कथावस्तु सामाजिक है। इन उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने हिन्दू-मुस्लिम समस्या, स्त्री समस्या, किसान समस्या आदि तमाम महत्वपूर्ण समस्याओं को उजागर किया है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' द्वारा रचित 'माँ' (1929), 'भिखारिणी' (1929), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा रचित 'दिल्ली का दलाल' आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंदोत्तर हिंदी सामाजिक उपन्यासों में प्रमुख हैं- फणीश्वर नाथ 'रेणु' द्वारा रचित 'मैला आँचल ', यशपाल का 'झूठा सच', नागार्जुन द्वारा रचित 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूँ', भीष्म साहनी का 'तमस', राही मासूम रजा का 'आधा गाँव, श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी', कमलेश्वर द्वारा रचित 'कितने पाकिस्तान', कृष्णा सोबती द्वारा रचित 'सूरजमुखी अँधेरे के', 'जिंदगीनामा', मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' आदि।

2. **ऐतिहासिक उपन्यास** : इस प्रकार के उपन्यास में इतिहास और कल्पना का समन्वय देखने को मिलता है। ऐतिहासिक घटनाओं, पात्रों और तथ्यों पर आधारित उपन्यासों को ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है। कुछ विद्वान् इसे इतिहास का साहित्यिक व्याख्या भी कहते हैं। डॉ. देवराज उपाध्याय ने ऐतिहासिक उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है- ''ऐतिहासिक उपन्यास के लिए इतिहास की रक्षा करने के साथ-साथ उसके स्वरूप को अपनी कल्पना द्वारा स्पष्ट करना भी आवश्यक है। यह ध्यान रखना चाहिए कि उपन्यास इतिहास का अंधानुकरण नहीं हो सकता, सबसे पहले वह उपन्यास है- साहित्यिक कथावस्तु। साथ ही वह इतिहास भी है, जिसकी मर्यादा की रक्षा करनी पड़ती है।... अत: ऐतिहासिक उपन्यास में अन्य उपन्यासों से अधिक प्रतिभा की आवश्यकता पड़ती है।''

हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रमुख हैं- रांगेय राघव द्वारा रचित 'मुर्दों का टीला', चतुरसेन शास्त्री द्वारा रचित 'वैशाली की नगरवधू', 'सोमनाथ' आदि।

3. **राजनीतिक उपन्यास :** राजनीति पर केंद्रित उपन्यास को राजनीतिक उपन्यास कहा जाता है। राजनीतिक उपन्यासों में राजनीति से संबंधित तमाम विसंगतियों को उजागर किया जाता है। प्राय: सभी राजनीतिक उपन्यासों में मिथ्या आश्वासन, जोड़-तोड़ की राजनीति, आतंक, गुंडागर्दी आदि विषयों को समेटा जाता है।

हिंदी के चर्चित राजनीतिक उपन्यासों में प्रमुख हैं- मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'महाभोज' (1979), राही मासूम रजा का 'कटरा बी आरजू', शंकर

पुणताम्बेकर द्वारा रचित 'एक मंत्री स्वर्ग लोक में', शिवसागर मिश्र का 'जनमेजय बचो' आदि।

4. **मनोवैज्ञानिक उपन्यासः** 'मनोविश्लेषण' से संबंधित उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास में 'काम' (Sex), अहं (Ego) और 'हीनता की भावना' के आधार पर पात्रों के व्यवहार पर बल देता है। यौन-वर्जनाओं का खुला चित्रण मनोवैज्ञानिक उपन्यास में होता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में तीन प्रकार की शैली को अपनाया जाता है। उदाहरण के लिए- पूर्वदीप्ति शैली, चेतना प्रवाह शैली और क्रोमोच्छेद शैली।

हिंदी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यास इस प्रकार हैं- 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'शेखर एक जीवनी' (1941), 'नदी के द्वीप' (1951), 'अपने अपने अजनबी' (1961), जैनेन्द्र के 'परख' (1929), 'सुनीता' (1934), 'त्यागपत्र' (1937), 'कल्याणी' (1939), 'विवर्त्त' (1953), 'मुक्तिबोध' (1965), 'अनाम स्वामी' (1974), 'दशार्क' (1985), इलाचंद्र जोशी द्वारा रचित- 'घृणामयी' (1929), 'संन्यासी' (1940), 'प्रेत और छाया' (1944) 'पर्दे की रानी' (1942), इसी प्रकार देवराज उपाध्याय का 'पथ की खोज' (1951), 'अजय की डायरी' (1960), 'मैं, वे और आप' (1969), 'बाहर-भीतर' (1954), 'रोड़े और पत्थर' (1958) आदि।

5. **आंचलिक उपन्यासः** 'अंचल' विशेष को लेकर लिखा गया उपन्यास आंचलिक उपन्यास कहलाता है। हिंदी में आंचलिक उपन्यास का जन्मदाता फणीश्वर नाथ 'रेणु' है। उनके द्वारा रचित उपन्यास 'मैला आँचल ' से हिंदी में आंचलिक उपन्यास का प्रारंभ माना जाता है।

विभिन्न विद्वानों ने आंचलिक उपन्यास को परिभाषित करने का प्रयास किया हैं। डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त के अनुसार- ''अंचल का अर्थ है जनपद या क्षेत्र। जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र बिंबात्मक चित्रण हो, उन्हें आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।''

डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के अनुसार- ''आंचलिक उपन्यास में किसी विशेष जनपद अंचल (क्षेत्र) के जनजीवन का समग्र चित्र होता है। समग्र का अर्थ है- भाषा, वेशभूषा, उत्पादन के साधन, प्रकार, विनिमय।''

इसी प्रकार डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने आंचलिक उपन्यास पर प्रकाश डालते

हुए लिखा है- ''आंचलिक उपन्यास किसी अंचल या प्रदेश-विशेष के वातावरण का सजीव रुप में प्रस्तुतीकरण है।''

डॉ. रामचंद्र तिवारी की परिभाषा इस प्रकार है- ''आंचलिक उपन्यासों में किसी पिछड़े हुए अज्ञात अंचल या किसी अपरिचित या अर्धपरिचित जाति के जीवन को पूरी सहृदयता के साथ चित्रित किया जाता है। आंचलिक उपन्यास रीजनल नॉवेल का समानार्थी माना जा सकता है। 'रीजनल नॉवेल' में किसी राष्ट्र के क्षेत्र-विशेष (अंचल) में रहने वालों के जीवन की उन विशेषताओं का अंकन किया जाता है, जो उसे निजता प्रदान करती हैं और जिनके कारण वह क्षेत्र अन्यों से भिन्न और विशिष्ट समझा जाता है।''

हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में प्रमुख हैं- फनीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित 'मैला आँचल ', रांगेय राघव का 'धरती मेरा घर', 'कबतक पुकारूँ', उदयशंकर भट्ट का सागर, लहरें और मनुष्य', शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरणी', भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़' आदि।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4. मराठी में उपन्यास के लिए कौन-सा शब्द प्रयुक्त होता था?



1.6 सारांश

उपन्यास हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण गद्य-विधा है, जिसमें मानव-जीवन के अनुभव, संघर्ष और समाज के विविध पक्ष यथार्थपरक ढंग से चित्रित किए जाते हैं। इसका स्वरूप समय के साथ बदलते हुए एक स्वतंत्र और परिपक्क विधा के रूप में स्थापित हुआ। विद्वानों ने उपन्यास को जीवन का दर्पण, कल्पना और यथार्थ का संगम कहा है। यूरोप में उपन्यास का विकास चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में होने लगा था। इसका एक बड़ा कारण था-मध्यवर्ग का जन्म। मध्यवर्ग के साथ-साथ मध्यवर्गीय पाठक वर्ग का भी जन्म हुआ। जिसके परिणामस्वरूप सत्रहवीं सदी के पहले ही यूरोप में उपन्यास असित्व में आ गया था। परिभाषा के स्तर पर अनेक विद्वानों ने उपन्यास की व्याख्या की है। किसी ने इसे जीवन का दर्पण कहा है, तो किसी ने इसे कल्पना और यथार्थ का सुंदर संगम बताया है। उपन्यास की परिभाषाओं में यह बात समान रूप से प्रकट होती

है कि यह विधा जीवन की जटिलताओं को कथा-संरचना के माध्यम से प्रस्तुत करती है और पाठक को चिंतन के लिए प्रेरित करती है। जहाँ तक प्रकारों की बात है, उपन्यास एक बहुरंगी विधा है। इसमें ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, ग्रामीण उपन्यास, प्रयोगात्मक उपन्यास आदि अनेक प्रकारों की रचनाएँ की गई हैं। प्रत्येक प्रकार अपने विशेष उद्देश्य और दृष्टिकोण को लेकर चलता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक उपन्यास समाज की विसंगतियों और समस्याओं पर प्रकाश डालता है, जबकि ऐतिहासिक उपन्यास अतीत की घटनाओं को कथात्मक रूप में पुनर्जीवित करता है। इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक उपन्यास व्यक्ति के अंतर्मन की गहराइयों का उद्घाटन करता है। इस प्रकार, उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन न होकर समाज और जीवन को गहराई से समझने का साहित्यिक माध्यम है।

1.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: पाश्चात्य विद्वानों ने भी उपन्यास को अपने-अपने तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है। जिन्हें हम निम्न प्रकार रेखांकित कर सकते हैं-

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी ने उपन्यास को दीर्घकार काल्पनिक कथा के रूप में स्वीकार किया है, जिसमें पात्र वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। ''उपन्यास एक दीर्घाकार काल्पनिक कथा या आख्यान है, जिसके द्वारा एक कार्य-करण श्रृंखला में बँधे हुए कथानक में वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और कार्यों का चित्रण किया गया हो।''

अधिक जानने के लिए 'उपन्यास की परिभाषा' को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

प्रश्न 2 का उत्तर: साहित्यिक अर्थ में उपन्यास वह गद्यात्मक रचना है जिसमें मानव जीवन, समाज और उसके विविध पक्षों का यथार्थ एवं कलात्मक चित्रण विस्तारपूर्वक किया जाता है।

प्रश्न 3 का उत्तर: कहानी अपेक्षाकृत छोटी होती है और एक ही घटना या भाव पर केन्द्रित रहती है, जबकि उपन्यास विस्तृत होता है और उसमें अनेक घटनाओं, पात्रों तथा परिस्थितियों का समन्वित रूप मिलता है।

प्रश्न 4 का उत्तर: मराठी में उपन्यास के लिए कादम्बरी शब्द प्रयुक्त होता था।

प्रश्न 5 का उत्तर: पहला ऐतिहासिक उपन्यासकार भूदेव मुखोपाध्याय को माने जाते हैं।



1.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- मधुरेश. (2018). हिन्दी उपन्यास का विकास. लोकभारती प्रकाशन।
- सुखदेव, डॉ. दिलीप. (2019). हिंदी उपन्यासों का विकास. अमेज़न इंडिया।
- मिश्र, रामकुमार. (2015). हिन्दी उपन्यास. इंटरनेट आर्काइव. https://archive.org/details/hindi-upnyas
- भट्ट, बालकृष्ण. (2018). उपन्यास : अर्थ, परिभाषा और प्रकार. इंफोसार्फ प्रकाशन।
- शर्मा, सी. एल. (2015). हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास. जीबीसी रामगढ़।
- कुमार, हरिश्चन्द्र. (2018). हिन्दी उपन्यास का विकास: Development of Hindi Novel. एक्सोटिक इंडिया आर्ट।
- शुक्ल, मंजु. (2025). बाल उपन्यास 'सुबह का सपना' का लोकार्पण. नवभारत टाइम्स।
- वर्मा, राजीव. (2018). उपन्यास की परिभाषा व हिन्दी उपन्यासों की विचारधाराएँ. IJIR-MPS।
- सिंह, अशोक. (2018). हिन्दी उपन्यास का इतिहास और स्वरूप. इंफोसार्फ प्रकाशन।
- मिश्रा, सुरेश. (2020). हिंदी उपन्यास- प्रकार और विशेषताएँ. राजकमल प्रकाशन

1.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. प्रेमचंद के अनुसार उपन्यास किसे कहते हैं?
2. मनोवैज्ञानिक उपन्यास किसे कहते हैं?
3. उपन्यास के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

4. सामाजिक यथार्थ का चित्रण किस प्रकार के उपन्यास में होता है?
5. उपन्यास किस विधा की रचना है?
6. हिन्दी में 'उपन्यास' शब्द का प्रथम प्रयोग किसने किया?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. भारतीय विद्वानों के अनुसार उपन्यास क्या है? व्याख्या कीजिए।
2. उपन्यास के अर्थ और स्वरूप पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. उपन्यास के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
4. उपन्यास को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
5. सामाजिक उपन्यास और ऐतिहासिक उपन्यास की विशेषताओं को समझाइए।
6. पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार उपन्यास क्या है? व्याख्या कीजिए।
7. उपन्यास और कहानी में अंतर स्पष्ट कीजिए, उदाहरण सहित।

******

इकाई-2 : उपन्यास (भाग II)

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 उपन्यास के प्रमुख तत्व

2.4 हिंदी उपन्यास का विकास

2.5 सारांश

2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

2.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

2.8 अभ्यास प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- उपन्यास की मूल संरचना को समझेंगे।
- कथानक, चरित्र, संवाद आदि तत्वों की पहचान कर पाएंगे।
- उपन्यास के कलात्मक पक्ष को जानेंगे।
- हिन्दी उपन्यास की ऐतिहासिक यात्रा का अध्ययन करेंगे।
- विभिन्न कालखंडों में उपन्यास की प्रवृत्तियों को समझेंगे।
- हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रमुख रचनाकारों की भूमिका को जानेंगे।

2.2 प्रस्तावना

उपन्यास आधुनिक साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जो न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि समाज, संस्कृति और व्यक्ति-जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाला माध्यम भी है। कथा-साहित्य के इस रूप में जीवन की विविध परिस्थितियों, मानव-मन की जटिलताओं तथा समाज की बदलती हुई परिस्थितियों का चित्रण गहराई से किया जाता है। उपन्यास के प्रमुख तत्वों में कथा, पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली और दृष्टिकोण को विशेष रूप से गिना जाता है। ये सभी तत्व मिलकर उपन्यास को प्रभावशाली और जीवंत बनाते हैं। कथा उपन्यास की रीढ़ होती है, पात्र उसके जीवंत चरित्र, संवाद

उसकी विश्वसनीयता, वातावरण उसका सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य और भाषा-शैली उसकी आत्मा कही जा सकती है। इस प्रकार उपन्यास के ये प्रमुख अवयव उसे संपूर्णता प्रदान करते हैं। हिंदी उपन्यास के विकास की यात्रा भी कम रोचक नहीं रही। प्रारम्भिक दौर में यह विधा मनोरंजन और सामाजिक सुधार के उद्देश्य से जुड़ी रही। देवकीनंदन खत्री, लाला श्रीनिवास दास और बालकृष्ण भट्ट जैसे रचनाकारों ने इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। इसके बाद प्रेमचंद ने उपन्यास को सामाजिक यथार्थ और आदर्शोन्मुखी दृष्टिकोण से जोड़ते हुए इसे एक गंभीर साहित्यिक रूप दिया। उन्होंने किसान, मजदूर, स्त्री और समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों को अपनी कथा का केंद्र बनाया। प्रेमचंद के बाद उपन्यास में विविध प्रवृत्तियाँ विकसित हुई-ऐतिहासिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, यथार्थवादी, सामाजिक और व्यक्तिवादी। जयशंकर प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा, शिवपूजन सहाय, सियारामशरण गुप्त, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु और अमृतलाल नागर जैसे रचनाकारों ने उपन्यास को नए आयाम दिए। इस प्रकार उपन्यास के प्रमुख तत्वों की समझ और उसके विकास की प्रक्रिया को जानना न केवल साहित्यिक अध्ययन के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज और समय के गहरे संबंधों को भी उजागर करता है। हिंदी उपन्यास की यह विकास-यात्रा हमें यह बताती है कि उपन्यास केवल कल्पना का संसार नहीं, बल्कि समाज की गति और यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाला दर्पण है।

2.3 उपन्यास के प्रमुख तत्व

उपन्यास के छः तत्व माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान भी इससे सहमत है।

1. कथावस्तु अथवा कथानक
2. पात्र और चरित्र-चित्रण
3. संवाद या कथोपकथन
4. देशकाल अथवा वातावरण
5. भाषा-शैली
6. उद्देश्य।

डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं- ''किसी भी उपन्यास में कुछ घटनाएँ और कार्यों का चित्रण होता है, उन बातों का वर्णन होता है जिन्हें व्यक्ति करते या झेलते हैं। यही घटनाएँ और कार्य उपन्यास के कथानक का निर्माण करते हैं तथा ये व्यक्ति उपन्यास के पात्र कहलाते हैं। इन पात्रों का पारस्परिक संलाप उपन्यास के तीसरे तत्व को जन्म देता है जिसे हम कथोपकथन कहते हैं। जिस स्थान पर और जिस समय में घटनाएँ घटित होती हैं, वे वातावरण का निर्माण करते हैं। अत: उपन्यास का चौथा तत्व वातावरण कहलाता है। उसका पाँचवा तत्व है शैली अर्थात् वह विधान जिसके द्वारा वह अपनी कथा प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त कलाकार की अपनी जीवन दृष्टि होती है, समस्याओं के प्रति अपना दृष्टिकोण होता है। उसी जीवन दृष्टि के आलोक में वह अपने उपन्यास की घटनाओं का ताना-बाना बुनता है, पात्रों को प्रस्तुत करता है। इसे हम उपन्यास का छठा तत्व-जीवन-दर्शन कह सकते हैं।''

1. **कथावस्तु अथवा कथानक:** उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख तत्व है कथावस्तु। इसके बिना उपन्यास की रचना संभव नहीं है। इसमें नाना प्रकार की घटनाओं का समावेश होता है। कथानक के बिना उपन्यास की कल्पना असंभव है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन कथानक को उपन्यास का प्राण स्वीकार करते हैं। उन्होंने कथानक पर विचार करते हुए लिखा है- ''कथानक घटनाओं का वह साधारण या जटिल ढाँचा है, जिसके द्वारा किसी उपन्यास की रचना होती है। बगैर कथानक के किसी भी उपन्यास की कल्पना करना ही मुश्किल है। यद्दपि आधुनिक युग में ऐसे भी उपन्यास लिखे जाते हैं जिनमें कथानक का नितान्त अभाव होता है या कथावस्तु अत्यंत सूक्ष्म तथा विरल होती है। यदि उपन्यास को उपन्यास बनाना है, तो उसके कथानक का महत्व अस्वीकार नही किया जा सकता। उपन्यास में और कुछ हो या न हो, कहानी अवश्य होती है। अत: कथावस्तु को उपन्यास का प्राण कहा गया है। ''उपन्यासकार किसी भी क्षेत्र से कथानक का चुनाव कर सकते हैं। वे अपने प्रतिभा के बल पर यथार्थ और कल्पना का समन्वय करता है और इस तरह एक व्यवस्थित कथा का निर्माण होता है।'' उपन्यासकार को जिन बातों का प्रत्यक्ष

अनुभव और ज्ञान न हो, उनके संबंध में पुस्तकों से या उस विषय के जानकार व्यक्तियों से वार्तालाप द्वारा सूचना तथा आवश्यक सामग्री के लिए इतिहास की पुस्तकों आदि पर निर्भर करना ही होगा। इस प्रकार सफल उपन्यासकार के लिए मनुष्य जाति और जगत का बहुमुखी अनुभव होना आवश्यक है, साथ ही उसमें उर्वर कल्पना का होना भी आवश्यक है जिसके बल पर वह वस्तुओं और व्यक्तियों का सजीव और सप्राण चित्र अंकित कर सके। कल्पना शक्ति के अभाव में लेखक वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव होते हुए भी सजीव अंकन न कर पायेगा और यदि उसमें कल्पना शक्ति है तो चीजों को बिना देखे केवल उनके विषय में पढ़कर या सुनकर भी वह उनका प्रभावशाली चित्रण कर सकेगा।'' एक सफल उपन्यास के कथानक मौलिक और रोचक होती है।

2. **पात्र और चरित्र चित्रण:** यह उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। एक सफल उपन्यास के लिए रचयिता को पात्रों और उनके चरित्र चित्रण पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। पात्रों के माध्यम से भी किसी उपन्यास के उद्देश्य का पता चलता है। पात्र हमेशा सहज-सरल और हमारे आसपास का लगना चाहिए, जिससे पाठक अध्ययन के वक्त पात्रों में खुद को देख सके। यह भी कहा जा सकता है कि उपन्यास के पात्रों और एक आम आदमी में एकरूपता हो।

चरित्र चित्रण के दो पद्धति स्वीकार किए जाते हैं- प्रत्यक्ष और परोक्ष। प्रत्यक्ष पद्धति के अनुसार रचनाकार खुद पात्रों की चारित्रिक विशिष्टताओं पर प्रकाश डालता है और उनके आचार-विचार, व्यवहार आदि पर अपना विचार व्यक्त करता है। जबकि परोक्ष पद्धति में लेखक पात्रों के बारे में कुछ नहीं कहता बल्कि पाठक ही अध्ययन द्वारा उन पात्रों से परिचय प्राप्त कर लेते हैं। पात्रों का चरित्र अस्वाभाविक नहीं होना चाहिए। उपन्यासकार को हमेशा इस अस्वाभाविकता से बचना चाहिए। ''वह पात्र का क्रमिक विकास प्रस्तुत करे आरंभ में पात्र के कतिपय गुण-दोषों का उल्लेख कर तदुपरांत विविध परिस्थितियों, प्रभावों, व्यक्तियों, अनुभवों और प्रतिक्रियाओं के मध्य उसके चरित्र का विकास दिखाए। पात्र का आकस्मिक चरित्र-परिवर्तन अविश्वसनीय होता है। दुष्ट का एक

रात में सज्जन हो जाना सम्भव तो है पर सामान्य नहीं । अत: लेखक को उससे बचना चाहिए; यदि चरित्र में परिवर्तन दिखाया जाए, तो वह क्रमिक, स्वाभाविक और सहज होना चाहिए । ....सफल चरित्र-चित्रण के लिए मानव-स्वभाव का सामान्य ज्ञान, मनुष्य के अंतर्मन का परिचय, उसके भावों, विचारों, राग-द्वेषों, अंत: सघर्षों की जानकारी के अतिरिक्त सहानुभूति, कल्पना- शक्ति तथा वर्ग विशेष की जानकारी अपेक्षित है।''

3. **संवाद या कथोपकथन:** जब किसी रचना में पात्रों आपस में बात-चीत करते हैं, तो उसे संवाद कहा जाता है। साहित्य के अन्य विधाओं में भी संवाद महत्वपूर्ण है। इसके संबंध पात्र तथा कथानक दोनों से हैं। पात्रों का परिचय एवं उनके चरित्र के बारे संवाद के माध्यम से ही जाना जा सकता है। कथा का विकास भी संवाद के माध्यम से होता है, उसी के अनुरूप उसकी भाषा होनी चाहिए । ''वार्तालाप के कारण हम पात्रों की भाव भूमि एवं परिवेश से परिचित होते हैं। इसमें हमे एक जीवंत सृष्टि का अनुभव होता है। पात्रों के वार्तालाप में हमें उनके दैनिक जीवन की झलक मिलती है । भाषा, बोली, जाति तथा प्रदेश आदि की विशेषताएँ वार्तालाप द्वारा ही प्रकट होती है और इन विशेषताओं से मण्डित वार्तालाप वास्तविकता का निर्माण करता है। वार्तालाप से नीरस प्रसंग भी सरस एवं ताजगीपूर्ण हो उठता है और वातावरण में नाटकीयता आ जाती है । सुकरात के विषय में प्रसिद्ध है कि वह अपने दार्शनिक विचारों की नीरसता को कथोपकथन के माध्यम से सरस बना देता था।''

संवाद सहज-सरल और पात्रों के अनुरूप होना चाहिए। इसके अतिरिक्त काल, परिस्थिति आदि का ख्याल रखना भी जरूरी है। इसलिए किसी भी रचनाकार को अपनी रचना में कथोपकथन को लेकर काफी सजग रहना पड़ता है।

4. **देशकाल या वातावरण:** वास्तव में वातावरण का संबंध उपन्यास की कथावस्तु से है। इसके अभाव में किसी भी कृति की रचना संभव नहीं है। वस्तुत: कथानक के विकास में देशकाल या वातावरण का योगदान महत्वपूर्ण है। वातावरण पर विचार प्रकट करते हुए श्री प्रखर लिखते हैं- ''कथानक की गतिविधि, पात्रों का व्यक्तित्व, कहानी का देशकाल

(अर्थात् वह जिस स्थान पर और जिस समय घटना होती हुई बताई गई है), कहानी की भाषा और शैली तथा कहानीकार के उद्देश्य को पाठक तत्कालिक रूप में अर्थात् कहानी पढ़ते-पढ़ते जिस प्रक्रिया द्वारा ग्रहण करने की चेष्टा करता है, उस प्रक्रिया का नाम वातावरण है।''



महत्वपूर्ण बिंदु-

- हिंदी में आंचलिक उपन्यास का जनक फनीश्वरनाथ 'रेणु' है।
- 'अज्ञेय' और जैनेन्द्र मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं।

सामाजिक उपन्यासों में वातावरण का जितना महत्व है, उससे ज्यादा महत्व आंचलिक और ऐतिहासिक उपन्यासों में है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितयाँ, स्थान, समय, रहन-सहन आदि सब देशकाल अथवा वातावरण के अंतर्गत आते हैं। डॉ. पारुकांत देसाई इस पर अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं-''देशकाल या वातावरण का चित्रण उपन्यास की वास्तविकता में वृद्धि करता है। मनुष्य बहुधा वातावरण की उपज होता है। अंग्रेज स्वभावत: रिज़र्ल्ड, अमरीकन व्यवसायी, जर्मन वैज्ञानिक एवं भारतीय धर्मभीरू होता है। गुजरात में हिसाबी के लिए 'अमदावादी' और मनमौजी या रंगीले व्यक्ति के लिए 'सूरतीलाला' शब्द प्रयोग होता है। स्थल की भाँति काल या समय भी व्यक्ति के वैचारिक धरातल को प्रकाशित करता है। सामन्तकालीन व्यक्ति का चिन्तन गांधीवादी नहीं हो सकता। अत: उपन्यास में भी देशकाल का महत्व बढ़ जाता है।''

5. **भाषा-शैली:** किसी भी सफल उपन्यास में भाषा और शैली योगदान महत्वपूर्ण है। हम अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक ध्वनि समूह का इस्तेमाल करते हैं, उसे ही भाषा कहते हैं तथा भावों की इस अभिव्यक्ति के लिए भाषा को हम जिस प्रकार इस्तेमाल करते हैं या जिस ढंग से व्यवहार करते हैं, उसे शैली कहा जाता है।

किसी भी रचनाकार को सहज-सरल शैली का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए जरुरी है रचनाकार का भाषा पर अच्छा अधिकार। यदि आवश्यक हो, तो लोकक्ति और मुहावरों प्रयोग करना चाहिए। शिक्षित और अशिक्षित पात्रों की भाषा में अंतर होना चाहिए। डॉ. प्रतापनारायण

टंडन शैली की महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-''शैली के द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार जिस ढंग से अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है, उसी को शैली कहते हैं। आधुनिक उपन्यासों की सफलता कुछ उसकी शैली पर ही निर्भर करती है।''

6. **उद्देश्य:** उद्देश्य को हम उपन्यास के अंतिम तत्व के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन, धन लाभ या यश लाभ नहीं है। साहित्य का उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि तमाम क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों उजागर करना और उसमें सुधार लाना। उपन्यास भी इससे अलग नहीं है।

2.4 हिंदी उपन्यास का विकास

प्रेमचंद को केंद्र में रखकर हिंदी उपन्यास को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता हैं-

1. प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास
2. प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास और
3. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास

1. प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद से पहले के हिन्दी उपन्यास मुख्यत: जीवन-मूल्यों और औपनिवेशिक भारत की परिस्थितियों पर केन्द्रित थे। इस दौर के उपन्यासों में दो प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं-पहली मनोरंजन और दूसरी समाज-सुधार तथा उपदेशपरकता। इस समय के अधिकांश उपन्यास सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी और जासूसी विषयों पर लिखे गए, जिनका सीधे-सीधे जनजीवन से गहरा सम्बन्ध नहीं था। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी कृति 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' में यह स्पष्ट किया है कि उपन्यास अपने आरम्भिक स्वरूप से ही सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। प्राय: विश्व साहित्य में उपन्यास तिलस्मी और चमत्कारप्रधान किस्सों से अलग होकर तब एक स्वतंत्र कला-रूप के रूप में स्थापित हुआ जब उसने 'रोमांस' से भिन्न होकर

समाज की विविध समस्याओं और विषमताओं को विषय बनाया। हिन्दी साहित्य में ये समस्याएँ एक ओर अपनी पारम्परिक रूढ़यों से उपजीं तो दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति की चुनौतियों से। इसी कारण देवकीनन्दन खत्री ने मनोरंजन की दृष्टि से 'चन्द्रकान्ता' (1898), 'चन्द्रकान्ता सन्तति' (1896),'नरेन्द्र मोहिनी' (1893) जैसे तिलस्मी उपन्यास लिखे, तो गोपालराम गहमरी ने 'सरकटी लाश' (1890), 'चक्करहार चूड़ी', 'जासूस की ऐय्यारी' (1914) जैसे जासूसी उपन्यासों की रचना की। इसी काल में ठाकुर जगमोहन सिंह ने 'श्यामास्वप्न' नामक रोमानी उपन्यास लिखा, जबकि लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षागुरु' (1882), बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886), 'एक अजान सौ सुजान' (1892) जैसे सामाजिक उपन्यासों की रचना की, जिनमें नायक के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तनों को उभारा गया। लज्जाराम शर्मा के 'स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी' में भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को पाश्चात्य संस्कृति की तुलना में सिद्ध किया गया। इस प्रकार, हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भिक चरण में लिखे गए उपन्यासों का मूल उद्देश्य मनोरंजन, शिक्षा और समाज-सुधार ही रहा। हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरू' को माना जाता है, इसके रचयिता है- लाला श्रीनिवासदास। इससे पहले सन् 1877 में श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा था, पर ज्यादातर विद्वान इसे हिंदी का पहला उपन्यास मानने से इंकार करते हैं। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी और ऐयारी, जासूसी आदि विविध प्रकार उपन्यास ज्यादा लिखे गए।

सामाजिक उपन्यासों में श्रद्धाराम फिल्लौरी द्वारा रचित 'भाग्यवती' का नाम लिया जा सकता है। 'परीक्षा गुरु' भी एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने प्रतीकात्मक रूप से मनुष्य की विलासिता, स्वार्थपरता, और अवसरवादिता पर प्रकाश डाला है। इस के सामाजिक उपन्यासों में बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान', राधाकृष्ण दास का 'निस्सहाय हिन्दू', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित 'ठेठ हिंदी का ठाठ', 'अधखिला फूल' आदि महत्वपूर्ण हैं।



महत्वपूर्ण बिंदु-

- तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों का जनक देवकीनंदन खत्री है।
- जासूसी उपन्यासों का जनक गोपालराम गहमरी है।

तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों का उद्देश्य शुद्ध मनोरंजन था। इन उपन्यासों का संबंध वास्तविकता से कम कल्पना से ज्यादा था। देवकीनंदन खत्री को तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों का जनक माना जाता है। उनके द्वारा रचित उपन्यासों में प्रमुख हैं-'चंद्रकांता', 'चन्द्रकांता संतति', 'नरेंद्र मोहनी', 'काजर की कोठरी' आदि। डॉ. पारुकांत देसाई तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-''हिन्दी की औपन्यासिक विकास परंपरा में इन उपन्यासों का स्थान उनकी कलात्मकता के कारण नहीं, प्रत्युत हिन्दी उपन्यासों को लोकप्रियता दिलाने के कारण है। इनमें हिन्दी उपन्यास को लाभ-हानि दोनों हुआ है। अधिकाधिक लोगों का ध्यान साहित्य की इस नयी विधा की ओर गया यह उसका लाभ है। ....हानि यह हुई कि हिन्दी का पाठक इस धरती की महक को भूलकर कल्पना के मायालोक में जा पहुँचा। उसके लिए उपन्यास शुद्ध पलायन की वस्तु हो गया । इन उपन्यासों का और कोई महत् उद्देश्य नहीं होता था । केवल सतही मनोरंजन जो किशोर वय के पाठकों को गुदगुदा सके कभी भी उपन्यास का काम्य नहीं हो सकता। वस्तुतः इन उपन्यासों से हिन्दी उपन्यास के विकास में गतिरोध पैदा हो गया और जो पौधे फुल्लोरी, लाला श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट आदि ने रोपे थे इनकी लोकप्रियता की बाढ़ में बह गये।'' इसी प्रकार जासूसी उपन्यासों जनक गोपालराम गहमरी है। उन्होंने 'जासूस' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। उनके द्वारा रचित उपन्यासों में प्रमुख हैं-'अद्भुत लाश', 'सरकटी लाश', 'डबल जासूस', 'जासूस की चोरी', 'जासूस की ऐयारी' आदि। इसके अतरिक्त रामलाल वर्मा द्वारा रचित 'चालाक चोर', 'जासूस के घर खून', किशोरीलाल गोस्वामी का 'जिन्दे की लाश' प्रमुख है। इस युग में ऐतिहासिक उपन्यास बहुत कम लिखा गया है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी नाम सबसे पहले है। इनके द्वारा रचित उपन्यासों

में प्रमुख हैं- 'आदर्श्बाला या लवंगलता' 'सुल्ताना रजिया बेगम या रंगमहल में हलाहल', आदि। गंगाप्रसाद गुप्त, जयरामदास गुप्त, मथुरा शर्मा प्रसाद, बलदेवप्रसाद मिश्र का नाम भी इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में गिना जाता है।

शिवकुमार शर्मा का मानना है कि प्रेमचंद-पूर्व काल में उपन्यासों की विषयवस्तु विविध रही। इस समय सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और प्रेमकथाओं पर आधारित उपन्यासों की रचना हुई। किशोरीलाल गोस्वामी, ब्रजनन्दन सहाय, बलदेवप्रसाद मिश्र और कृष्णप्रकाश सिंह जैसे अनेक रचनाकारों ने इन विषयों को अपनी कृतियों में स्थान दिया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस युग के उपन्यासों में सामाजिक, ऐतिहासिक और घटनामूलक सभी प्रकार की प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं।



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 1. उपन्यास में कथानक के महत्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 2. जासूसी उपन्यास का जनक कौन है?

प्रश्न 3. प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास को किस दिशा में मोड़ा?

2. प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद हिन्दी उपन्यास परम्परा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रचनाकार माने जाते हैं। उन्होंने पूर्ववर्ती उपन्यासों की प्रवृत्तियों को ध्यानपूर्वक समझते हुए उनकी निरंतरता को बनाए रखा और साथ ही आदर्श तथा यथार्थ के द्वंद को नए दृष्टिकोण से परिभाषित किया। प्रेमचंद का विश्वास था कि ''कोई भी व्यक्ति पूरी तरह बुरा नहीं होता, उसमें कहीं-न-कहीं अच्छाई अवश्य होती है।'' इसी मनोवैज्ञानिक दृष्टि के आधार पर उनके उपन्यासों में जिस यथार्थ का चित्रण हुआ, उसे हिन्दी साहित्य में 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' कहा गया। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के नाम पर इस युग का नामकरण किया गया। हिंदी उपन्यास साहित्य में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि उनको उपन्यास

सम्राट के साथ-साथ उनके नाम पर इस युग का नामकरण किया गया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यास मुख्यत: मनोरंजन के लिए लिखा जाता था। प्रेमचंद ने इसे जनता के समस्याओं के साथ जोड़ा।

प्रेमचंद के महत्व को स्पष्ट करते हुए बच्चन सिंह लिखते हैं- ''प्रेमचंद के साहित्य जगत में प्रवेश के साथ ही हिन्दी उपन्यास में एक नया मोड़ आता है। अभी तक हिन्दी पाठक जासूसी का चमत्कार और तिलस्म के आश्चर्य जनक करिश्में देख रहे थे। ऐतिहासिक रोमांसों की स्थिति भी इनसे भिन्न नहीं थी। उनमें सनातनधर्मी प्रतिक्रियावादी मनोवृत्तियाँ पर्दा प्रथा का समर्थन, थोथे पतिव्रत्य का अनुमोदन, सहशिक्षा तथा विधवा विवाह का विरोध स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद ने इस भूल-भूलैया और प्रतिक्रियावादी स्थितियों से बाहर निकलकर हिन्दी उपन्यासों को वास्तविकता की जमीन पर खड़ा किया।''

प्रेमचंद द्वारा रचित 'सेवासदन' सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालता है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने सामाजिक कुरीति और उसके कारण उत्पन्न दुष्परिणामों के प्रति पाठकों को सजग किया। 'प्रेमाश्रम' भी ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखा गया है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद जी ने सामंती और जमींदारी व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। 'रंगभूमि' का विषय हिन्दू, मुस्लिम, इसाई, पुलिस, किसान पूंजीपति आदि हैं। 'कर्मभूमि' भी हिन्दू-मुस्लिम तनाव, किसानों की दयनीय अवस्था, पूंजीपतियों का शोषण, जातिभेद आदि तमाम विषयों पर आधारित है। उनके द्वारा मुख्यत: सामाजिक समस्याओं को लेकर लिखा गया उपन्यास 'गबन', निर्मला' और 'प्रतिज्ञा' है। 'गोदान' तक आते-आते उनका दृष्टिकोण यथार्थवादी हो गया। गोदान उनके द्वारा रचित अंतिम पूर्ण उपन्यास है। उनका 'मंगलसूत्र' उपन्यास अधूरा रह गया।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी प्रेमचंद के महत्व को स्वीकारते हुए लिखते हैं- ''उपन्यासों के इस निर्माण और अनुवाद के आरम्भिक युग को पार करते ही हम हिन्दी उपन्यासों के उस युग में पहुँचते हैं, जिनका शिलान्यास प्रेमचन्द जी ने किया और जिसमें आकर हिन्दी उपन्यास एक सुनिश्चित कला-स्वरूप को प्राप्त कर अपनी आत्मा को पहचान सका तथा

अपने उद्देश्य से परिचित होकर उसकी पूर्ति में लग सका।'' जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', सियारामशरण गुप्त, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', चतुरसेन शास्त्री आदि ऐसे नाम हैं, जिनके बिना प्रेमचंद युगीन साहित्य अधूरा है। इन उपन्यासकारों के प्रमुख उपन्यासों का उल्लेख (इकाई ।) में किया गया है।

प्रेमचंद के समकालीन कई उपन्यासकारों ने भी अपने-अपने उपन्यासों में उस समय के परिवेश और समाज की परिस्थितियों को अभिव्यक्त किया तथा कथा-वस्तु के आधार पर उपन्यास साहित्य में नई-नई प्रवृत्तियों और श्रेणियों का विकास किया। इस काल के प्रमुख उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद का नाम उल्लेखनीय है, जिनकी रचनाएँ 'कंकाल' और 'तितली' विशेष रूप से जानी जाती हैं। विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने 'माँ' और 'भिखारिणी', चण्डीप्रसाद शर्मा 'हृदयेश' ने 'मनोरमा' और 'मंगल प्रभात', शिवपूजन सहाय ने 'देहाती दुनिया', सियारामशरण गुप्त ने 'गोद' और 'नारी' जैसे उपन्यास लिखे। वृन्दावनलाल वर्मा ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए और उनके 'लगन', 'संगम', 'प्रेम और भेंट' जैसे उपन्यास चर्चित हैं। चतुरसेन शास्त्री भी ऐतिहासिक उपन्यासकार माने गए, जिनकी कृतियाँ 'हृदय की परख', 'आत्मदाह', 'अमर अभिलाषा' उल्लेखनीय हैं। इसी दौर में भगवतीचरण वर्मा ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास 'चित्रलेखा' लिखा। इस प्रकार, प्रेमचंद के दौर में अनेक रचनाकारों ने हिन्दी उपन्यास परम्परा को विविध रूपों और नए आयामों से समृद्ध किया।

3. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद के पश्चात् हिन्दी उपन्यासों का स्वरूप धीरे-धीरे परिवर्तित होकर एक नए रूप में सामने आया। इस दौर में कथा-साहित्य में मध्यमवर्ग अपनी सामाजिक स्थिति और नागरिक अधिकारों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने लगा। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में विषय-वस्तु और प्रवृत्तियों की विविधता इतनी अधिक है कि साहित्यकारों ने इनके अध्ययन को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करके देखने की परम्परा विकसित की। इन उपन्यासों को प्राय: प्रकृतिवादी, व्यक्तिवादी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, यथार्थवादी,

ऐतिहासिक तथा आंचलिक धाराओं में समझा जाता है। इनमें से कई प्रवृत्तियाँ आपस में घुल-मिल भी जाती हैं। प्रेमचंद के मृत्यु के बाद के समय को हम प्रेमचंदोत्तर युग कह सकते हैं। इस काल में सामाजिक और राजनीतिक उपन्यासों के अतिरिक्त आंचलिक और मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की उपस्थिति भी दिखाई देती हैं। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रेमचंद युग से लिखना प्रारंभ कर दिया था। प्रेमचंदोत्तर युग में उनके द्वारा लिखा गया उपन्यास इस प्रकार हैं- 'सरकार तुम्हारी आँखों में', 'फागुन के चार दिन', 'जीजा जी' आदि। इस युग का और एक लोकप्रिय नाम है- अमृतलाल नागर। उनके द्वारा रचित 'महाकाल', 'सेठ बाँकेमल', 'बूंद और समुद्र' आदि लोकप्रिय उपन्यासों में गिना जाता है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में नागार्जुन और फनीश्वरनाथ 'रेणु' का नाम विशेष महत्वपूर्ण है। 'रेणु' जी को आंचलिक उपन्यास का जन्मदाता माना जाता है। नागार्जुन के उपन्यासों में प्रमुख हैं- 'बलचनामा', 'रतिनाथ की चाची', 'वरुण के बेटे' आदि। 'रेणु' जी द्वारा रचित 'मैला आँचल', 'परती परिकथा' दोनों ही महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में वृंदावन लाल वर्मा और चतुरसेन शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है। वर्मा जी के प्रमुख उपन्यास इस प्रकार हैं-'झाँसी की रानी', 'कचनार', 'मृगनयनी' आदि। इसी प्रकार चतुरसेन शास्त्री द्वारा रचित उपन्यासों में प्रमुख हैं- 'वैशाली की नगरवधू', 'सोमनाथ', 'आलमगीर', 'वयं रक्षाम' आदि। इस युग के मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में अज्ञेय और जैनेन्द्र का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। अज्ञेय के उपन्यासों में प्रमुख हैं- शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी आदि। इसी प्रकार जैनेन्द्र के उपन्यास हैं- 'त्यागपत्र', 'सुखदा', 'विवर्त', 'जयवर्धन' आदि।



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 4. कथानक का उपन्यास में क्या महत्व है?

प्रश्न 5. हिन्दी उपन्यास का प्रारंभ किस उपन्यास से माना जाता है?



2.5 सारांश

मुंशी प्रेमचंद को उनकी असाधारण प्रतिभा के कारण 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी गयी है और उनके नाम पर हिंदी उपन्यास को तीन भागों में विभाजित किया गया हैं- प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन और प्रेमचंदोत्तर। प्रेमचंद ने सर्वप्रथम सही अर्थों में उपन्यास को जनता की समस्याओं से जोड़कर देखा। प्रस्तुत इकाई में हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद के योगदान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त उपन्यास के प्रमुख तत्वों पर विचार किया गया है। एक सफल उपन्यासकार के लिए इन तत्वों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। हिंदी उपन्यास का विकास क्रमशः मनोरंजन और सामाजिक सुधार से प्रारंभ हुआ। प्रारम्भिक दौर में देवकीनंदन खत्री, लाला श्रीनिवास दास और बालकृष्ण भट्ट जैसे रचनाकारों ने तिलस्मी, ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों की रचना की। बाद में प्रेमचंद ने उपन्यास को गम्भीर सामाजिक आधार और यथार्थ से जोड़ा। उनके उपन्यासों में किसान, मजदूर, स्त्रियाँ और वंचित वर्ग केंद्र में आए। इस कारण प्रेमचंद को हिंदी उपन्यास का आधार-स्तम्भ माना जाता है। प्रेमचंद के बाद उपन्यास लेखन की प्रवृत्तियों में विविधता आई। इसमें ऐतिहासिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और यथार्थवादी धाराएँ प्रमुख रहीं। जयशंकर प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा, शिवपूजन सहाय, सियारामशरण गुप्त, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु और अमृतलाल नागर जैसे रचनाकारों ने उपन्यास को नए-नए रूपों और दृष्टियों से समृद्ध किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपन्यास के प्रमुख तत्व उसकी संरचना को सुदृढ़ करते हैं, जबकि हिंदी उपन्यास का विकास सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों के साथ निरंतर आगे बढ़ता गया। उपन्यास केवल कल्पना की रचना नहीं, बल्कि समाज और समय का सजीव दस्तावेज भी है।

2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख तत्व है कथावस्तु। इसके बिना उपन्यास की रचना संभव नहीं है। इसमें नाना

प्रकार की घटनाओं का समावेश होता है। कथानक के बिना उपन्यास की कल्पना असंभव है।

अधिक जानने के लिए पढ़ें **'कथानक या कथावस्तु'**।

प्रश्न 2 का उत्तर: जासूसी उपन्यासों जनक गोपालराम गहमरी है। उन्होंने 'जासूस' नामक पत्रिका का संपादन भी किया।

अधिक जानने के लिए **'प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास'** को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

प्रश्न 3 का उत्तर: प्रेमचंद ने उपन्यास को सामाजिक यथार्थ और आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद की ओर मोड़ा।

प्रश्न 4 का उत्तर: कथानक उपन्यास की घटनाओं की क्रमबद्ध प्रस्तुति है, जो उसे जीवंत बनाती है।

प्रश्न 5 का उत्तर: हिन्दी उपन्यास का प्रारंभ लाला श्रीनिवास दास के 'परीक्षागुरु' (1882) से माने जाते है।



2.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- मिश्र, रामदरश. हिन्दी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा. राजकमल प्रकाशन.
- गणेशन, एस. एन. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन.
- राय, गोपाल. हिन्दी उपन्यास का इतिहास. राजकमल प्रकाशन.
- मधुरेश. हिन्दी उपन्यास का विकास. सुमित प्रकाशन.
- सिंह, कुँवरपाल. हिन्दी उपन्यास और सामाजिक चेतना.
- मदान, इन्द्रनाथ. हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख.
- विलोचन, नलिन. हिन्दी उपन्यास विशेषत: प्रेमचंद.
- शर्मा, शिवकुमार. हिन्दी उपन्यास और समाजिक यथार्थ.
- वर्मा, वृन्दावनलाल . हिन्दी उपन्यास: स्वरूप और विकास.
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप. हिन्दी उपन्यास का प्रारंभिक इतिहास.

2.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. उपन्यास सम्राट किसे कहा जाता है?
2. 'चंद्रकांता' उपन्यास के रचयिता कौन है?
3. 'भाग्यवती' उपन्यास के रचयिता कौन है ?
4. उपन्यास के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?
5. कथानक और चरित्र के बीच क्या सम्बन्ध है?
6. हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भिक चरण में कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्रमुख थीं?
7. प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास के विकास में क्या योगदान दिया?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. हिंदी उपन्यास के विकास पर प्रकाश डालिए।
2. उपन्यास के प्रमुख तत्वों पर विचार कीजिए।
3. प्रेमचंद-पूर्व उपन्यासों पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. उपन्यास के तत्व के रूप में संवाद और भाषा-शैली की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
5. हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम को प्रारंभिक युग से लेकर प्रेमचंद युग तक समझाइए।
6. उपन्यास के प्रमुख तत्वों (कथावस्तु, पात्र और भाषा शैली) की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

******

इकाई-3 : मैला आँचल (भाग- I)

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 उपन्यासकार 'रेणु' का परिचय

3.4 मैला आँचल की कथावस्तु और पात्र परिचय

3.5 सारांश

3.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

3.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

3.8 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन और साहित्यिक योगदान को समझेंगे।
- ग्रामीण भारत के यथार्थ और जीवनशैली को उपन्यास के माध्यम से जानेंगे।
- 'मैला आँचल' की कथावस्तु के मुख्य विषयों और घटनाओं को पहचानेंगे।
- प्रमुख पात्रों (डॉक्टर प्रशांत, बालदेव, लक्ष्मी आदि) के चरित्र और उनके सामाजिक महत्व को समझेंगे।
- स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता उत्तर के गाँवों में सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण कर पाएंगे।
- उपन्यास के माध्यम से मानवता, करुणा और समाज सुधार के संदेश को आत्मसात कर सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के महान कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा। वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे और सामाजिक जीवन के विविध अनुभवों को अपनी लेखनी

के माध्यम से अभिव्यक्त किया। रेणु का साहित्य ग्रामीण भारत के जीवन-संसार, लोकसंस्कृति, बोली-भाषा, संघर्ष और संवेदनाओं का सजीव दस्तावेज है। उन्हें हिंदी साहित्य में ''आंचलिक उपन्यास'' का प्रवर्तक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यासों में किसी विशेष क्षेत्र की संस्कृति, जीवनशैली और बोली को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया। 'मैला आँचल' उनका प्रथम और सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है, जिसने हिंदी साहित्य में नई दिशा प्रदान की। 'मैला आँचल' का कथानक स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उत्तर भारत के ग्रामीण समाज की वास्तविकता को प्रकट करता है। यह कथा बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव पर आधारित है, जो कोसी नदी के शोक से ग्रसित क्षेत्र का प्रतीक है। कहानी की शुरुआत देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से होती है, जिसमें अंग्रेज़ी शासन, कांग्रेस और सोशलिस्ट आंदोलनों की गतिविधियों को गाँव की दृष्टि से दिखाया गया है। गाँव में अंधविश्वास, गरीबी, अशिक्षा और जातिगत भेदभाव व्याप्त है, परंतु इसके साथ ही वहाँ मानवता, सहानुभूति और करुणा की भावना भी जीवित है। डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्र आदर्शवाद और सेवा का प्रतीक हैं, जबकि बालदेव कांग्रेस के गांधीवादी विचारों को जीवंत करते हैं। लक्ष्मी जैसी पात्राएँ स्त्री-संवेदना और आत्मसम्मान का प्रतीक हैं। कहानी के माध्यम से रेणु ने दिखाया है कि स्वतंत्रता के बाद भी ग्रामीण जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं आया; केवल सत्ता के चेहरे बदले, पर समस्याएँ वही रहीं। वामनदास जैसे पात्र इस मोहभंग और नैतिक पतन के साक्षी हैं। उपन्यास का अंत इस संकेत के साथ होता है कि युगों से सोई हुई ग्राम-चेतना अब जागने लगी है। फनीश्वरनाथ 'रेणु' लगभग हर विधा में लिख चुके हैं। किसी रचनाकार के रचनाओं को जानने तथा उन रचनाओं की विशेषताओं को समझने से पहले रचनाकार से परिचय प्राप्त कर लेना जरूरी हो जाता है। हम इस इकाई में उपन्यासकार 'रेणु' का परिचय प्राप्त करेंगे। इसके अलावा मैला आँचल उपन्यास की कथावस्तु तथा पात्रों के चरित्र चित्रण पर भी चर्चा करेंगे।

3.3 उपन्यासकार 'रेणु' का परिचय

1. **सामान्य परिचयः** फनीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार में हुआ था और मृत्यु 11 अप्रेल 1977 को। 'रेणु' का पूरा नाम फनीश्वरनाथ शिलानाथ मंडल है।

'रेणु' के बारे में कहा जाता है कि ''रेणु वैष्णव परिवार में हुए शांत प्रकृति के पुत्र की बाल-लीला देखकर इसके माता-पिता चिंतित रहेंगे। सिर में तेल और आँखों में काजल लगाने के डर से भागकर 'धनखेती' में सारा दिन धान रोपने वाले मजदूरों के साथ कीचड़ पानी में मछली और केंकड़ा पकड़ता फिरेगा।'' कुसुमलाल मंडल के मार्गदर्शन में 'रेणु' जी की शिक्षा की शुरुआत घर में ही हो गयी थी। उसके बाद उन्होंने अररिया के किसी एक विद्यालय में जाने लगा। सन् 1939 में वाराणसी से मेट्रिक परीक्षा पास की और 1941 ई. में आई. ए. की परीक्षा पास करने के बाद बी. ए. में नामांकन करवाया। 'रेणु' राजनीति के प्रति आकर्षित था, यही कारण है कि उन्होंने सन् 1942 में गठित 'आजाद दस्ता' में हो गया।



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'रेणु' का पूरा नाम फनीश्वरनाथ शिलानाथ मंडल है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद फनीश्वरनाथ 'रेणु' राजनीति में सक्रिय हो गए। ''फणीश्वरनाथ रेणु राजनीति में, खासतौर से सक्रिय राजनीति में हमेशा से ही बने नहीं रहे, लेकिन उनकी रचनाओं में राजनीति की अहम भूमिका है। उनकी साहित्यिक चेतना, सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा का समन्वय प्रतीत होती है। जिन तत्वों ने उनकी राजनीतिक अंतर्दृष्टि को विकसित किया और प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से साहित्य-सृजन का कारण बने।'' 'रेणु' स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। सन् 1930-31 में हड़ताल में उन्होंने भाग लिया था और इसी अनुभव के आधार पर 'कितने चौराहे' उपन्यास में एक दृश्य का अंकन किया है। 'रेणु' जी ने तीन शादियाँ की थी। उनकी पहली पत्नी सुलेखा देवी थी। सुलेखा देवी बीमार हो जाने के बाद उन्होंने दूसरी शादी की। दूसरी पत्नी का नाम पद्मा था। उनकी तीसरी पत्नी लतिका थी।

रेणु भोजपुरी और मैथिली भाषाओं के प्रवीण लेखक थे। वे ग्रामीण जीवन की संस्कृति, कला, रहन-सहन और स्थानीय बोलियों से न केवल परिचित थे, बल्कि अपनी कहानियों और उपन्यासों में इनका

प्रभावपूर्ण प्रयोग भी करते थे। उन्होंने गाँव के वातावरण और वहाँ के लोगों- चाहे बड़े जमींदार हों या छोटे खेतिहर मजदूर- को बहुत ही अंतरंग और वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया। स्वयं ग्रामीण परिवेश का अनुभव करने वाले रेणु, पटना में रहते हुए भी अपने गाँव से लगातार जुड़े रहे, जिसका स्पष्ट उदाहरण उनकी रचनाएँ 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' हैं। वे जीवन के हर पहलू को उजागर करने में निपुण थे और उसे अत्यंत जीवंत ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत करते थे। उनके शब्दचित्रों में गाँव के सारे रंग और भाव झलकते हैं। रेणु ने केवल ग्रामीण जीवन को चित्रित किया ही नहीं, बल्कि उस समय के सामाजिक और राजनीतिक बदलावों को भी प्रभावशाली ढंग से पेश किया। यह समय भारत के स्वतंत्रता-संग्राम का और उसके बाद के परिवर्तनों का था। स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में कई बदलाव आए, जिससे लोगों में शहर की ओर पलायन और बेहतर जीवन की आकांक्षा बढ़ी। शहरों की व्यस्तता और कठिनाइयों में गाँव का जीवन अपने आप को ढाल नहीं पाया और लोग निराशा और पीड़ा में जीने लगे। रेणु ने इन परिवर्तनों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ महसूस किया और अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया। उन्हें गाँवों के टूटने, पलायन और मिटती संस्कृति से गहरा दु:ख हुआ। साथ ही सामंती व्यवस्था के बढ़ते प्रभाव और राजनीतिक शक्तियों के पूँजीवाद के प्रति झुकाव ने उन्हें अंदर से बहुत व्यथित किया। यह वेदना उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के समक्ष उजागर की। जहाँ एक ओर रेणु का गाँव और लोकजीवन से गहरा संबंध था, वहीं वे राजनीतिक गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे। उन्होंने गाँधीजी द्वारा बिहार में संचालित आंदोलनों में भाग लिया, जिसके कारण 1942 में उन्हें जेल जाना पड़ा। बाद में वे जयप्रकाश नारायण द्वारा चलाई जा रही क्रांति में भी शामिल हुए, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपना लेखन जारी रखा। स्वार्थपरक और सत्ता-केंद्रित राजनीति उन्हें हमेशा असंतुष्ट करती रही। रेणु सदैव आदर्शवादी, ईमानदार और संवेदनशील राजनीति के समर्थक रहे। उनके लिए मानव कल्याण सर्वोपरि था और उन्होंने इसे कभी क्षतिग्रस्त होते नहीं देखा।

2. **साहित्यिक परिचय :** 'रेणु' हमेशा शोषण और दमन के खिलाफ लिखते रहें। वे अनुभवी साहित्यकार हैं, जिसका झलक उनकी प्रत्येक रचनाओं में देखने को मिलता है। वे 'कविता' के माध्यम से साहित्य में प्रवेश किया था। पर जिस उपन्यास ने 'रेणु' को लोकप्रिय बनाया वह उपन्यास है 'मैला आँचल'। 'मैला आँचल' के प्रकाशन के लिए उन्होंने पटना की गलियों की खाक छानी थी ।'मैला आँचल' के प्रकाशन हेतु उनकी पत्नी लतिका जी ने अपने गहने तक बेच दिए थे। रेणु ने पत्नी लतिका, कुछ मित्रों के सहयोग तथा इंडियन प्रेस पटना की सद्भावना से 'मैला आँचल' 'समता प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित हुआ। 'मैला आँचल' का प्रकाशन हिन्दी साहित्य जगत में एक विरल घटना साबित हुई। इससे केवल 'रेणु' को प्रथम कोटि के उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित ही नहीं किया अपितु हिन्दी में 'आँचलिक उपन्यास' की एक नई जमीन भी गाड़ी। 'रेणु' ने इसे 'आँचलिक उपन्यास' की संज्ञा से विभूषित किया। हिन्दी साहित्य जगत में इसका जिस प्रकारसे भव्य स्वागत हुआ, उससे प्रभावित हो राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. के तत्कालीन प्रबंध निदेशक ओमप्रकाश जी ने इस संस्करण की बची समस्त प्रतियाँ 'समता प्रकाशन' से खरीदकर तथा उन्हे नष्ट करवा कर नई साज-सज्जा के साथ तत्काल दिसम्बर 1954 में पुन: प्रकाशित किया। राजकमल प्रकाशन ने इसी कड़ी में रेणु को इलाहाबाद बुलाकर दूसरा उपन्यास 'परती: परिकथा' लिखने को प्रेरित किया । किसी भी रचनाकार की प्रथम कृति के लिए यह गौरव की वस्तु हो सकती है।''

'रेणु' अप्रतिम प्रतिभा के धनी रचनाकार थे। उन्होंने प्राय: सभी विधाओं में रचनाएँ कीं। उनके द्वारा रचित उपन्यास इस प्रकार हैं- 'मैला आँचल' (1954), 'परती परिकथा' (1957), 'दीर्घतपा' (1963), 'जुलूस' (1965), 'कितने चौराहे' (1966), 'पल्टू बाबू रोड' (1979) आदि। इनके संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं-

मैला आँचल (1954)- रेणु का प्रसिद्ध उपन्यास, जो बिहार के ग्रामीण जीवन, समाज की कुरीतियों और जीवन संघर्षों को बेहद सजीव तरीके से प्रस्तुत करता है।

परती परिकथा (1957)- यह उपन्यास ग्रामीण परिवेश और वहां के लोक जीवन की विविध झलकियों को रेखांकित करता है, साथ ही सामाजिक परिवर्तन और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करता है।

दीर्घतपा (1963)- मानव मन की जटिलताओं और ग्रामीण जीवन में संघर्षों का गहन चित्रण, जिसमें मानवीय संवेदनाओं और जीवन की पीड़ा को प्रमुखता दी गई है।

जुलूस (1965)- सामाजिक परिवर्तनों और ग्रामीण जीवन में आने वाले आधुनिक प्रभावों को संवेदनशीलता के साथ दिखाता है।

कितने चौराहे (1966)- यह कृति गाँव और शहर के जीवन के अंतर्संबंधों, सामाजिक गतिशीलता और मानव संबंधों की विविधताओं को उजागर करती है।

पल्टू बाबू रोड (1979)- रेणु का यह उपन्यास शहर और ग्रामीण जीवन के टकराव, पलायन और सामाजिक बदलावों की कहानियों का प्रतिनिधित्व करता है।

कथा-संग्रह

ठुमरी (1959), एक आदिम रात्रि की महक (1967), अग्निखोर (1973), एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984), अच्छे आदमी (1986)

ठुमरी (1959)- यह कहानी संगीत और भावनाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन और लोक संस्कृति की संवेदनाओं को उजागर करती है।

एक आदिम रात्रि की महक (1967)- ग्रामीण परिवेश और प्राकृतिक वातावरण की सुंदरता और रहस्य को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत करती है।

अग्निखोर (1973)- सामाजिक अन्याय और संघर्षों को उजागर करने वाली कहानी, जिसमें ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और मानवीय पीड़ा को प्रमुखता दी गई है।

एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984)- गाँव और शहर के जीवन के बीच की परिस्थितियों और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती है।

अच्छे आदमी (1986)- मानवीय मूल्यों, आदर्श और व्यक्तिगत संघर्षों को प्रमुखता देते हुए पात्रों के चरित्र और उनके सामाजिक संबंधों को दर्शाती है।

रिपोर्ताज

णजल-धनजल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत अश्रुत पूर्वे

ऋणजल-धनजल- ग्रामीण जीवन में आर्थिक संघर्ष, ज़मीनदार और मजदूरों के बीच के संबंध तथा मानवीय पीड़ा को उजागर करती कहानी।

नेपाली क्रांतिकथा- सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों पर आधारित कहानी, जिसमें नायक या पात्र क्रांति और परिवर्तन की दिशा में सक्रिय रहते हैं।

वनतुलसी की गंध - गाँव और प्रकृति के बीच गहरे संबंध को प्रस्तुत करती कहानी, जिसमें प्राकृतिक सौंदर्य और ग्रामीण जीवन की संवेदनाएँ झलकती हैं।

श्रुत-अश्रुत पूर्वे - गाँव के जीवन, वहां की बोलियों, रीति-रिवाज और सामाजिक परंपराओं को चित्रित करती कहानी, जिसमें मानवीय संवेदनाओं और समाज की विविधताएँ स्पष्ट हैं।

प्रसिद्ध कहानियाँ

मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम), एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया

मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम) - यह कहानी सामाजिक अन्याय और ग्रामीण जीवन के संघर्षों को उजागर करती है, जिसमें मानवीय पीड़ा और संवेदनशीलता प्रमुख है।

एक आदिम रात्रि की महक - ग्रामीण परिवेश और प्राकृतिक वातावरण की खूबसूरती और रहस्यों को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत करती है।

लाल पान की बेगम - गाँव के रहन-सहन, सामाजिक व्यवहार और मानवीय संबंधों को रेखांकित करती हुई कहानी।

पंचलाइट - ग्रामीण जीवन में आधुनिकता के प्रवेश और उसके प्रभावों को चित्रित करती है।

तबे एकला चलो रे- व्यक्तिगत संघर्ष और मानवीय संकल्प की कहानी, जिसमें आत्मनिर्भरता और साहस की झलक मिलती है।

ठेस - सामाजिक अन्याय और मानवीय पीड़ा के बीच मानवीय संवेदनाओं

को प्रमुखता देती कहानी।

संवदिया – गाँव और उसके लोगों की बोलियों, संस्कृति और जीवनशैली को जीवंत ढंग से प्रस्तुत करती है।

'रेणु' जी ने हिंदी साहित्य में कहानी साहित्य के माध्यम से भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी कहानी-संग्रह इस प्रकार हैं- 'ठुमरी' (1941), 'आदिम रात्रि की महक' (1967), 'अग्निखोर' (1973), ' एक श्रावणी दोपहर की धूप' (1984), 'अच्छे आदमी' (1986) आदि। कहानी और उपन्यास के अतिरिक्त 'रेणु' जी ने संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध, रिपोर्ताज आदि कथेतर विधाओं में भी लिखा।

3.4 मैला आँचल की कथावस्तु और पात्र परिचय

1. **कथावस्तु :**

फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' भारतीय स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उत्तर ग्रामीण समाज की जीवन गाथा है। कहानी देश की आज़ादी से कुछ समय पहले शुरू होती है, जिससे अंग्रेज़ों के शासन का तरीका और साथ ही कांग्रेसी तथा सोशलिस्ट गतिविधियों की झलक मिलती है। मरची या मेरीगंज गाँव की पृष्ठभूमि में यह कथा विकसित होती है, जो उत्तर-पूर्वी बिहार के कोसी क्षेत्र का प्रतीक है-जहाँ गरीबी, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और पिछड़ेपन की गहरी छाप है। इसी गाँव में एक अस्पताल खुलता है और वहीं से गाँव के जीवन, उसकी समस्याओं और परिवर्तन की संभावनाओं का सिलसिला आरंभ होता है। कहानी के प्रमुख पात्र बालदेव, डॉक्टर प्रशांत और लक्ष्मी हैं। बालदेव कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं, जो गांधीवादी विचारों में विश्वास रखते हैं और गाँव में सम्मानित व्यक्ति हैं। लक्ष्मी, महंत सेवादास की दासी है, जो अत्याचार झेलते हुए भी आत्मसम्मान और संवेदनशीलता का प्रतीक बनी रहती है। डॉक्टर प्रशांत एक शिक्षित, आदर्शवादी और देशभक्त युवक है, जो विदेश जाने के बजाय अपने देश के गरीब, बीमार और पिछड़े लोगों की सेवा करने का निश्चय करता है। वह समझता है कि गाँववालों

की असली बीमारी मलेरिया या हैज़ा नहीं, बल्कि गरीबी और अज्ञान है।

कहानी में स्वतंत्रता आंदोलन की झलक भी दिखाई देती है। गांधीजी के प्रभाव से बालदेव आत्मनिर्भरता का संदेश देते हैं, वहीं कालीचरण जैसे लोग समाज में क्रांति की बात करते हैं। इन विचारधाराओं के संघर्ष के बीच गाँव का जीवन धीरे-धीरे बदलने लगता है। आज़ादी के बाद जब वही लोग सत्ता में आते हैं, तो उनके भ्रष्टाचार और स्वार्थ की झलक भी उपन्यास में मिलती है। रेणु ने यह दिखाया है कि आज़ादी के बाद भी गाँव के लोगों के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव नहीं आया, बस सत्ता के चेहरे बदल गए। 'रेणु' उपन्यास के बारे में जानकारी देते हुए भूमिका में लिखते हैं- ''यह है मैला आँचल एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया । पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल विभिन्न सीमा-रेखाओं से इनकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी हैं, शूल भी हैं, धूल भी हैं, गुलाब भी, कीचड़ भी हैं, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'मैला आँचल' हिंदी का पहला आंचलिक उपन्यास है।
- 'मैला आँचल' का प्रकाशन सन् 1954 में हुआ था।

'रेणु' ने उपन्यास को दो भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में स्वतंत्रता-पूर्व घटनाओं को स्थान दिया गया है और दुसरे भाग में स्वतंत्रता के बाद घटित घटनाओं को स्थान दिया गया है। बिहार में स्थित पूर्णिया जिले का 'मेरीगंज' नामक गाँव कथावस्तु के केंद्र में है। ''रेणु' ने अपने जिले पूर्णिया के सुदूर ग्रामीण अंचल के गाँव 'मेरीगंज' को कथाभूमि बनाकर उसकी जीवन पद्धति रीति-रिवाजों, लोक-संस्कृति, लोकभाषा के माध्यम से उसकी समस्त सुरूपताओं तथा कुरूपताओं के उद्घाटन द्वारा,

भारत की आजादी के प्रसवकाल तथा उसके तत्काल बाद ग्रामीण जीवन में हो रहे परिवर्तनों के परिणामस्वरूप आई कुलबुलाहट और निद्राभंग का यथातथ्य आकलन एवं चित्रण उसकी ही भाषा-बोली में संपूर्ण तटस्थता एवं निर्वेयक्तिकता के साथ प्रस्तुत करने का जो कार्य किया, वह आगामी आंचलिक उपन्यासों के लिए प्रतिमान बन गया। प्रकाशन के लगभग चार दशक बाद आज भी उसकी ताजगी ज्यों की त्यों बनी हुई है।'' गाँव में अनेक टोलियाँ हैं- यादव टोली, राजपूत टोली, मालिक टोली, कायस्थ टोली आदि। गाँव में गोसाई जाति के लोग भी रहते हैं। उपन्यास में इन लोगों के रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार आदि का वर्णन है। गोसाई मठों में रहते हैं और अपने को महात्मा समझते हैं, पर महात्मा बनना इतना आसान नहीं है। ये लोग धर्म के नाम पर दासी से मनमाना काम कराते हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. डॉक्टर प्रशांत का परिचय दीजिए।

प्रश्न 2. 'रेणु' का समान्य परिचय दीजिए।

प्रश्न 3. फणीश्वरनाथ रेणु कौन थे?

इस गाँव के ज्यादातर लोग अनपढ़ हैं। पर सभी देशभक्त है। शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग महात्मा गाँधी को मानते हैं और आन्दोलन में भाग लेते हैं। मठों के झगड़े और आजादी के आंदोलन के बीच डॉक्टर प्रशांत का आगमन होता है। वे सिर्फ पैसा के लिए डॉक्टर नहीं बना बल्कि जन-सेवा उनका मूल उद्धेश्य है। अंधविश्वास के वजह से गाँववाले डॉक्टर प्रशांत से झगड़ते हैं। उनसे इलाज नहीं करवाते हैं। लेकिन बीमारी के रूप में 'कमली' आती है और बीमार ठीक होने के बाद 'कमली' डॉक्टर से प्यार करने लगती है। शादी से पहले ही एक बच्चा पैदा होता है, एक ओर 'कमली' को समाज द्वारा सताया जाता है, तो दूसरी ओर प्रशांत को झूठे आरोप में जेल भेज दिया जाता है। जेल से आने के बाद डॉक्टर 'कमली' के घर जाकर उसके पिता को मनाते हैं। प्रशांत इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। अंत: वह इसी गाँव में ही रह

जाता है और गाँव में रहकर ही गाँव में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने का प्रण लेता है।

फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' भारतीय ग्रामीण जीवन का सजीव दस्तावेज है, जो गाँव की मिट्टी, मनुष्य और मानवता की गहराई को बखूबी उकेरता है। इसकी कथावस्तु से स्पष्ट होता है कि लेखक ने समाज के निचले तबके के दुख, पीड़ा, संघर्ष और आशा को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में बिहार के पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव के माध्यम से पूरे भारतीय गाँवों की झलक मिलती है। यहाँ गरीबी, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और अशिक्षा जैसी समस्याएँ हैं, पर इनके साथ-साथ करुणा, प्रेम, सहानुभूति और मानवीयता की भावना भी जीवित है। डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्रों के माध्यम से रेणु ने यह दिखाया कि आदर्श और यथार्थ के बीच संघर्ष के बावजूद सेवा और मानवता की भावना समाज को आगे बढ़ा सकती है। 'मैला आँचल' का शीर्षक प्रतीकात्मक है-यह उस समाज का प्रतीक है जो मैला तो है, परंतु उसी में मातृत्व, ममता और जीवन का सौंदर्य भी विद्यमान है। इस प्रकार 'मैला आँचल' का निहितार्थ है कि भारत का गाँव केवल पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, संवेदना और जीवन की वास्तविक आत्मा का प्रतिबिंब है।

2. **पात्र परिचय :** इस उपन्यास में असंख्य पात्रों हैं। यहाँ हम केवल प्रमुख पात्रों से परिचय प्राप्त करेंगे।

डॉ. प्रशांत : 'प्रशांत' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। इनका पालन-पोषण उपाध्याय परिवार में हुआ। ''हिंदू विश्वविद्यालय से आई.एस.सी. पास करने के बाद वह पटना मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी कि डाक्टर बने। लेकिन अपने प्रशांत को वह डाक्टर के रूप में नहीं देख पाई। काशीवास करते-करते, काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई! ....एक माँ ने जन्म लेते ही कोशी मैया की गोद में सौंप दिया और दूसरी ने जनसमुद्र की लहर को समर्पित कर दिया।''

डॉ. बनने के बाद जब प्रशांत 'मेरीगंज' जाते हैं, तब हम उनके उद्देश्य और महत्व को जान पाते हैं। वह 'मेरीगंज' को अंधविश्वास मुक्त और

बीमार मुक्त गाँव बनाना चाहता है, इसी कारण हमेशा के लिए वह इसी गाँव में रह जाता है।

बालदेवः इस उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र 'बालदेव' है। गाँव के लोग इसे 'टूरवा' नाम से पुकारते हैं। यह इस उपन्यास में आदि से अंत तक किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ होता है। 'मेरीगंज' में मलेरिया केंद्र खोलने में बालदेव ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। ईमानदार होने के कारण गाँव का महंत भी उसपर विश्वास करने लगता है। वह मानव-सेवा को परम धर्म मानता है। इस उपन्यास में बालदेव को हम एक ईमानदार और कर्मनिष्ठ पात्र के रूप में पाते हैं।

कालीचरनः 'मेरीगंज' को सामाजिक विसंगतियों से मुक्त कराने में 'कालीचरन' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। यह उपन्यास में एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता और ईमानदार पात्र के रूप में अपनी भूमिका अदा की। उसके स्वभाव में दृढ़ता है। यह किसी से नहीं डरता है। उसको जब डकैती के मिथ्या जुर्म में जेल भेज दिया जाता है, तब वह बिना डरे जेल से भाग आता है, यह बताने के लिए कि डकैती से उसका कोई संबंध नहीं है।

लक्ष्मीः लक्ष्मी उपन्यास की एक प्रमुख महिला पात्र है। वह महंत सेवादास की दासी है, जिसका जीवन शोषण और अन्याय से भरा है। किंतु इसके बावजूद वह बुद्धिमान, आत्मसम्मान से भरी और भावनात्मक रूप से सशक्त महिला है। बालदेव से उसका संबंध प्रेमपूर्ण और पवित्र है।

बावनदासः बावनदास एक विचारक और आत्ममंथन करने वाला पात्र है। बावनदास राजनीतिक कार्यकर्ता है। यह इस उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है। गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण वह जेल में अन्याय के खिलाफ अनशन करते हैं। इनको हम 'सत्य' एवं 'सत्याग्रह' पर चलनेवाला पात्र के रूप में पाते हैं। गाँधीजी के आह्वान पर इन्होंने 1930 ई. में कांग्रेस का सदस्य बन जाता है। इससे पहले यह जातिगत भेदभाव के कारण हीनभावना का सामना का कर रहा था। ''पूर्वजन्म का फल अथवा रिसजनहार की मर्जी । प्रकृति की भूल अथवा थायराएड, थायमस और प्युटिटिरी ग्लैंड्स के हेर-फेर! डेढ़ हाथ की उँचाई। साँवला रंग, मोटे होंठ,

अचरज में डाल देनेवाली दाढ़ी और चौंका देनेवाली मोटी भोंडी आवाज। उँचाई के हिसाब से आवाज दसगुना भारी। अजीव चाल, मानो लुढ़क रहा हो। अज्ञात कुलशील। जन्मजाता साधू। जिस ओर होकर गुजरता, लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी मुस्कुराहट। पीछे-पीछे बच्चों का हुजूम, तमाशा; कुत्ते भुंकते, इंसान हँसते! गर्भवती औरतें छिप जातीं अथवा छीपा दी जातीं।.... और जब भगवान ने उसे चलता-फिरता तमाशा ही बनाकर भेजा है।''

महंत सेवादासः गाँव का धार्मिक मुखिया, जो धर्म के नाम पर महिलाओं और गरीबों का शोषण करता है। वह सामाजिक पाखंड और धार्मिक अंधविश्वास का प्रतीक है।

बद्रीनारायणः गाँव का शिक्षित व्यक्ति, जो अपने स्वार्थ में लिप्त है। वह उन लोगों का प्रतीक है जो समाजसेवा के नाम पर व्यक्तिगत लाभ उठाते हैं।

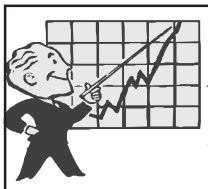
डॉ. ओझाः डॉ. प्रशांत के साथ कार्य करने वाला व्यक्ति, जो समाज के प्रति संवेदनशील नहीं है। उसका उद्देश्य केवल धन और सुविधा प्राप्त करना है।

तिवारी जी और ठाकुर साहबः ये पात्र गाँव के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक भेदभाव में विश्वास रखता है।

फूलिया, मुनिया, छोटा झिंगुर, बिनोवाः ये गौण पात्र हैं, लेकिन इनसे गाँव के जीवन की वास्तविकता और मानवीय संबंधों की गहराई झलकती है।

इसी प्रकार 'विश्वनाथप्रसाद' शोषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र और अवसरवादी है, 'रामकिरपाल' राजपूत टोली का मुखिया है। इनका दिल बड़ा ही सादा है, 'खेलावन यादव' यादव टोली का प्रधान है, 'जोतखी' ब्राह्मण टोली का मुखिया है, 'महंत सेवादास' को पहले साधु समझा जाता है, पर धीरे-धीरे वह भ्रष्ट हो जाता है, 'लक्ष्मी' स्त्री पात्रों में लक्ष्मी का स्थान महत्वपूर्ण है। यह मठ की दासी है, 'कमली' विश्वनाथप्रसाद की लड़की तथा प्रशांत की

प्रेमिका है, 'ममता' डॉक्टर है और इस उपन्यास में बहुत कम समय के लिए आती है, 'फुलिया' निम्नजाति की लड़की है, 'रामपियारी' इसको फूहड़ लड़की संज्ञा दी जा सकती है और यह कामुक प्रवृत्ति की है।



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 4. 'मैला आँचल' उपन्यास की कथा कहाँ पर आधारित है?

प्रश्न 5. 'मैला आँचल' के दो प्रमुख पात्रों के नाम बताइए।

प्रश्न 6. मैला आंचल उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ था?



3.5 सारांश

आंचलिक उपन्यास के प्रवर्तक 'रेणु' ने हिंदी साहित्य में उपन्यास के लिए नवीन ढांचे का प्रयोग किया। उन्होंने आंचलिक उपन्यास के माध्यम से धार्मिक भेदभाव, नारी जागरण, जातिगत भेदभाव, शहरीकरण आदि तमाम समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है। फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार हैं, जिन्होंने ग्रामीण भारत के जीवन को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उनका उपन्यास 'मैला आँचल' भारतीय गाँवों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। कथा बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव पर आधारित है, जहाँ अंग्रेज़ों के शासनकाल, स्वतंत्रता आंदोलन और आजादी के बाद की परिस्थितियों को वास्तविक रूप में दिखाया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र डॉक्टर प्रशांत, बालदेव और लक्ष्मी हैं- जो क्रमश: आदर्श, सेवा और संवेदना के प्रतीक हैं। ग्रामीण समाज की अंधविश्वासी और पिछड़ी मानसिकता के साथ-साथ उसमें छिपी मानवीयता और करुणा को भी लेखक ने बखूबी दर्शाया है। स्वतंत्रता के बाद सत्ता परिवर्तन तो हुआ, परंतु गाँव की मूल समस्याएँ जैसे गरीबी, अशिक्षा और जातिवाद जस की तस बनी रहीं। बावनदास जैसे पात्रों के माध्यम से रेणु ने स्वतंत्रता के आदर्शों से मोहभंग की भावना को भी उजागर किया।

'रेणु' ने पात्रों का चित्रण करते हुए अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। वस्तुत: आंचलिक उपन्यास में अंचल विशेष पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, पात्रों और चरित्र-चित्रण पर कम। मैला आँचल' के पात्र बहुआयामी हैं-

वे न तो पूर्णतः आदर्शवादी हैं, न ही पूरी तरह नकारात्मक। उनमें जीवन की सच्चाई, पीड़ा, प्रेम और संघर्ष का अद्भुत मिश्रण है। यही कारण है कि यह उपन्यास केवल एक कथा नहीं, बल्कि भारतीय ग्राम्य समाज का जीवंत चित्र है। रेणु ने इस उपन्यास के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि भारत की असली आत्मा उसके गाँवों में बसती है और गाँवों की यही चेतना हमारे समाज की वास्तविक पहचान है। यही कारण है कि इस इकाई में ज्यादातर पात्रों का परिचय बहुत ही संक्षेप में दिया गया है।

3.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: 'प्रशांत' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। इनका पालन-पोषण उपाध्याय परिवार में हुआ। अधिक जानने के लिए 'पात्र परिचय' को ध्यानपूर्वक पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर: 'रेणु' के बारे में कहा जाता है कि ''रेणु वैष्णव परिवार में हुए शांत प्रकृति के पुत्र की बाल-लीला देखकर इसके माता-पिता चिंतित रहेंगे। सिर में तेल और आँखों में काजल लगाने के डर से भागकर 'धनखेती' में सारा दिन धान रोपने वाले मजदूरों के साथ कीचड़ पानी में मछली और केंकड़ा पकड़ता फिरेगा।''

अधिक जानने के लिए 'उपन्यासकार 'रेणु' का परिचय' को देखें।

प्रश्न 3 का उत्तर : फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध प्रगतिशील लेखक थे, जिन्हें आंचलिक उपन्यासकार के रूप में जाना जाता है।

प्रश्न 4 का उत्तर- मैला आँचल' की कथा बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक गाँव पर आधारित है।

प्रश्न 5 का उत्तर: 'मैला आँचल' के दो प्रमुख पात्रों के नाम हैं- डॉक्टर प्रशांत और बालदेव ।

प्रश्न 6 का उत्तर: 'मैला आँचल' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1954 में हुआ था।



3.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- रेणु, फणीश्वरनाथ.(1954). मैला आँचल, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन,
- वर्मा, लालिमा.(1988). फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों की भाषा का शैली शास्त्रीय अध्ययन, पटना: जानकी प्रकाशन, पटना,
- शर्मा, ब्रह्मस्वरूप.(2000). हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा, दिल्ली मनु प्रकाशन,
- शेफालिक, (1996). रेणु का कथा संसार, दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- महेता, कला.(1992). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, विजय प्रकाशन मंदिर,
- वाजपेयी, प्रकाश.(1964). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, दिल्ली: नंद किशोर एंड संस,
- ठाकुर, देवेश.(2007).मैला आँचल की रचना प्रक्रिया, दिल्ली: वाणी प्रकाशन,
- जैन: नगीना.(1997) आंचलिकता ओर हिंदी उपन्यास, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन, दिल्ली,
- डॉ. चन्द्रभानु,(2003). कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन,
- सिंह, डॉ. मोजेन्द्र. (1987). रेणु का साहित्य: समाजशात्रीय अध्ययन, दिल्ली ऋषभचरण जैन एवं संतति,
- राय, गोपाल.(1992).उपन्यासकार रेणु और मैला आँचल, दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हाउस,
- मिश्र, डॉ. अमरेंद्र.(1998). फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य, दिल्ली: हिंदी बुक सेंटर,

3.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. 'रेणु' का पूरा नाम क्या है?

2. बावनदास किस विचारधारा से प्रभावित हुए थे?
3. डॉक्टर प्रशांत किस आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं?
4. लक्ष्मी का चरित्र उपन्यास में क्या प्रतीक करता है?
5. 'मैला आँचल' शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?
6. फणीश्वरनाथ रेणु को किस उपन्यास के लिए सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के जीवन और साहित्यिक योगदान पर विस्तार से टिप्पणी कीजिए।
2. 'मैला आँचल' की कथावस्तु के माध्यम से रेणु ने भारतीय ग्रामीण समाज का यथार्थ चित्रण किस प्रकार किया है?
3. उपन्यास में डॉक्टर प्रशांत, बालदेव और लक्ष्मी के चरित्रों के माध्यम से लेखक ने किन सामाजिक और नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है?
4. 'मैला आँचल' में स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता उत्तर भारतीय गाँव की स्थितियों को किस प्रकार दर्शाया गया है?
5. 'मैला आँचल' उपन्यास के तीन मुख्य पात्रों का परिचय दीजिए।

******

इकाई-4 : मैला आँचल (भाग- II)

इकाई की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 आंचलिकता से तात्पर्य

4.4 आंचलिकता के महत्वपूर्ण तत्व

4.5 मैला आँचल उपन्यास की आंचलिकता

4.6 सारांश

4.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

4.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

4.9 अभ्यास प्रश्न

4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्यान से आप

- आंचलिकता के बारे जान पाएंगे।
- अंचल और आंचलिकता में अंतर समझने में सक्षम होंगे।
- मैला आँचल उपन्यास में निहित आंचलिकता के विविध पक्षों को जान सकेंगे।
- आंचलिक उपन्यास के प्रमुख तत्व के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
- आंचलिक उपन्यास में प्रयुक्त भाषा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में आंचलिकता एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में स्थापित हुई है, जो न केवल जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देती है, बल्कि साहित्य को स्थानीय रंग, गंध, संस्कृति और समाज से गहराई से जोड़ती है। जीवन की निरंतरता और विकासशीलता की इस धारणा में अंचल या क्षेत्र विशेष का योगदान अनदेखा नहीं किया जा सकता।

हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यासकार के रूप में 'रेणु' का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है और उनका 'मैला आँचल' सबसे लोकप्रिय आंचलिक उपन्यास है। बगैर 'मैला आँचल' के हिंदी उपन्यास साहित्य का इतिहास अधूरा है। जब भी हम 'रेणु' के बारे में बातें करते हैं, तो अनायास ही 'मैला आँचल' के बारे में सोचने लगते हैं और जब हम 'मैला आँचल' के बारे चर्चा करते हैं तो हमारे दिमाग में अंचल, आंचलिकता आदि शब्द घर कर जाता है।

हम इस इकाई में अंचल, आंचलिकता तथा अंचल और आंचलिकता में अंतर और आंचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' उपन्यास का मूल्यांकन करेंगे।

4.3 आंचलिकता से तात्पर्य

आजादी के बाद हिंदी कथा साहित्य में 'आंचलिकता' एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभरकर सामने आई। आंचलिकता का प्रभाव स्वतंत्रता पूर्व उपन्यासों में भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद को लिया जा सकता है। ''हकीकत तो यह है कि स्वाधीनता पूर्व हिन्दी उपन्यासों में भी आंचलिकता की प्रतिछवि देखने को मिलती है। प्रेमचंद इस सन्दर्भ में खासतौर पर विचारणीय है। उनके उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का सविस्तार चित्रण हुआ है। जैसे कि आधुनिक कथा साहित्य में आधुनिकता की शुरुआत प्रमेचंद से मानी जाती है, वैसे आंचलिकता की शुरुआत भी प्रेमचंद से मानना संगत है, 'प्रेमचंद' के उपन्यासों में ग्राम जीवन की छवि है, किन्तु उनका गाँव स्थानीय रंगत के बावजूद सामान्य है, विशेष नहीं। उनका उद्देश्य भी उत्तर भारत के किसी ग्राम अंचल का चित्रण करना नहीं, वरन् सामान्य ग्रामों की सामान्य समस्याओं और जीवन मूल्यों की कहानी कहना है।''

फिर भी हम कह सकते हैं कि 'आंचलिकता' का विकास एक विशेष प्रवृत्ति के रूप आजाद भारत में हुआ। इसका एक प्रमुख कारण शहरीकरण है। ''एक और स्वाधीनता परवर्ती भारतीय समाज की बदलती हुई परिस्थिति ने गाँवो को भी अपने कब्जे में कर लिया तो दूसरी और औद्योगिकीरण एवं शहरीकरण के फलस्वरूप जो नई संस्कृति उभर आई उसका असर भी ग्राम्य जीवन पर पड़ने लगा । शहरी वातावरण से ऊबकर आंचलिकता की सुखशीलता में शान्ति की साँस लेने के लिए बहुत लोग ग्राम प्रान्ततरों का आश्रय लेने लगे।''

अंचल शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

'अंचल' शब्द संस्कृत की ''अन्च'' धातु में ''अलच'' प्रत्यय जोड़ने से

बना है, जिसका मूल अर्थ होता है- सीमा, किनारा या प्रांत का भाग। यह शब्द वस्त्र के छोर, साड़ी के पल्लू, तट, कोना, भू-भाग या विशेष क्षेत्र के रूप में भी प्रयुक्त होता है। हिन्दी साहित्य में इसका प्रयोग विशेषत: उन सीमांत या ग्रामीण क्षेत्रों के लिए होता है, जहाँ की संस्कृति, जीवनशैली, भाषा, आचार-विचार आदि किसी अन्य क्षेत्र से भिन्न होते हैं।

आंचलिकता का अर्थ और स्वरूप

जब अंचल शब्द में ''तद्धित प्रत्यय'' लगाकर आंचलिक बनाया जाता है, तो वह किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भाषिक विशिष्टताओं को समाहित करने वाला बन जाता है। और जब यह साहित्यिक प्रवृत्ति बनती है, तो उसे 'आंचलिकता' कहते हैं आंचलिकता का अर्थ है - किसी विशिष्ट क्षेत्र की लोक संस्कृति, बोली, जीवन शैली, रीति-नीति और समस्याओं का सजीव व यथार्थ चित्रण। यह प्रवृत्ति महज़ भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि है, जिसमें लेखक की संवेदना, अनुभव और लोक जीवन की समझ शामिल होती है।

आंचलिक साहित्य की विशेषताएँ

1. स्थानीयता - कथा में प्रयुक्त स्थान, परिवेश, पात्र आदि किसी विशिष्ट क्षेत्र के प्रतिनिधि होते हैं।
2. यथार्थता - जीवन की वास्तविकता का चित्रण; चाहे वह पिछड़ापन हो या संघर्ष।
3. लोकतंत्रात्मकता- जनता की आवाज़, उसकी आशाएं-निराशाएं, उसकी भाषा और उसकी संस्कृति की अभिव्यक्ति।

आंचलिक रचना में क्षेत्र विशेष की बोलियाँ, लोकगीत, त्योहार, वेशभूषा, प्राकृतिक दृश्य, रहन-सहन, सामाजिक रीतियाँ, आर्थिक स्तर आदि का अत्यंत सूक्ष्म और प्रामाणिक वर्णन होता है। ऐसे क्षेत्र जिनकी भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिकता और जनजीवन अन्य क्षेत्रों से भिन्न होते हैं, आंचलिक साहित्य का आधार बनते हैं।

आंचलिकता और लेखक की दृष्टि:

आंचलिकता केवल विषय नहीं, लेखकीय दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण लेखक को विशिष्ट भूखण्ड के लोकजीवन, उसके संघर्ष, संस्कृति और मूल्यों से आत्मीय रूप से जोड़ता है। यह दृष्टि लेखक को सामाजिक मानवविज्ञानी या

लोक संस्कृति के संवाहक के रूप में प्रस्तुत करती है। कथाकार जैनेन्द्र कुमार के अनुसार, ''आंचलिकता का केन्द्र पात्र नहीं, बल्कि वह भू-भाग होता है जिसकी सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थता को लेखक उजागर करता है। डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय इसे कथा-साहित्य की शिल्प संरचना से जोड़ते हैं, जबकि डॉ. कड़वे इसे अंचल विशेष की प्रकृति, रहन-सहन, भाषा, जन-संस्कृति आदि का जीवंत चित्रण मानते हैं।''

आंचलिकता और प्रादेशिकता में अंतर:

अक्सर आंचलिकता को अंग्रेजी के ''Regionalism'' या ''प्रादेशिकता'' के समकक्ष देखा जाता है, जबकि दोनों में अंतर है। प्रादेशिकता केवल भौगोलिक पहचान है, जबकि आंचलिकता भावनात्मक, सांस्कृतिक और मानवीय दृष्टिकोण से समृद्ध एक साहित्यिक प्रवृत्ति है। प्रादेशिकता वस्तुस्थिति है, आंचलिकता संवेदना है। सन 1950 के दशक के बाद हिन्दी साहित्य में आंचलिकता की प्रवृत्ति अधिक मुखर हुई। 'मैला' आँचल को इस दिशा में मील का पत्थर माना गया। धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति कहानी, नाटक, कविता जैसी विधाओं में भी प्रभावशाली रूप से उभरने लगी। अब यह केवल ग्राम्यांचल तक सीमित न रहकर नगरांचलों, कस्बों और जनजातीय क्षेत्रों तक भी विस्तृत हो चुकी है।

आंचलिकता की प्रामाणिकता के तत्व:

1. लोकभाषा का प्रयोग-संवादों में स्थानीय बोलियों, मुहावरों, उच्चारणों का प्रयोग।
2. लोक-जीवन का चित्रण-पात्रों की जीवन शैली, संघर्ष, धार्मिक विश्वास आदि का यथार्थ चित्रण।
3. प्राकृतिक परिवेश-जलवायु, भूगोल और वातावरण की सजीवता।
4. लोक-संस्कृति का स्पर्श-लोकगीत, लोककथाएँ, रीति-रिवाज, पर्व आदि।

आंचलिकता : सीमित क्षेत्र, व्यापक प्रभाव:

यद्यपि आंचलिक रचना किसी सीमित भूखण्ड तक सीमित होती है, परन्तु उसमें निहित मानवीय मूल्यों, संघर्षों और संवेदनाओं के कारण उसका प्रभाव सार्वभौमिक होता है। यह किसी भी पाठक को भावनात्मक रूप से जोड़ सकती

है, भले ही वह उस क्षेत्र का न हो। आंचलिकता केवल साहित्यिक प्रवृत्ति नहीं, एक सजीव दृष्टिकोण है जो जनजीवन की गहराइयों से साहित्य को जोड़ता है। यह लेखकीय संवेदना, प्रामाणिक अनुभव और सांस्कृतिक आत्मीयता की परिणति है । इसका उद्देश्य न केवल क्षेत्रीय जीवन का चित्रण करना है, बल्कि उस क्षेत्र के माध्यम से समग्र मानव समाज के यथार्थ को उद्घाटित करना भी है। इस प्रकार, आंचलिकता हिन्दी साहित्य में एक नवीन, गहन और सशक्त शिल्प-दृष्टि के रूप में स्थापित हो चुकी है।

4.4 आंचलिकता के महत्वपूर्ण तत्व

आंचलिकता का मूल आधार समय और स्थान की विशेष पहचान से जुड़ा होता है। यह किसी विशिष्ट क्षेत्र विशेष की जीवन-प्रणाली, संस्कृति, बोली-बानी, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों, समस्याओं एवं वातावरण को साहित्य में यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। विभिन्न विद्वानों ने आंचलिकता के तत्वों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया है।

डॉ. आदर्श सक्सेना के अनुसार, ''आंचलिकता क्षेत्र विशेष की समस्याओं, वहाँ के पिछड़ेपन और उससे उत्पन्न जीवनशैली, विश्वास-मान्यताओं और लोक संस्कृति को समग्र रूप में प्रस्तुत करती है।''

डॉ. नगीना जैन ने इसे दो तत्वों में समेटा है:

1. क्षेत्रीय यथार्थ का उद्घाटन
2. सम्पूर्ण अंचल को केन्द्र में रखकर उसके प्रतिनिधि चरित्रों का चयन।

डॉ. रामपत यादव ने सात प्रमुख तत्वों को रेखांकित किया:

1. क्षेत्रीय स्थिति
2. विशिष्ट जीवन-चित्रण
3. सभ्यता-संस्कृति
4. वातावरण
5. बोली-भाषा
6. लोक-तत्व
7. वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण।

डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय और डॉ. कडवे ने भी आंचलिकता को विशिष्ट

भौगोलिक-सांस्कृतिक 'सेटिंग', सामूहिकता, जीवन की प्रामाणिकता, सीमित क्षेत्रीय चित्रण तथा भाषा-बोली की भूमिका के माध्यम से स्पष्ट किया है।

आंचलिकता के नियोजक तत्वः

1. **अंचल विशेष का चयन :** आंचलिक लेखक किसी सीमित भू-भाग, जनपद, गांव, जंगल या जनजातीय क्षेत्र को अपनी रचना का केंद्र बनाता है। यह क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से एक विशेष पहचान रखता है।
2. **भौगोलिक विशेषता :** भौगोलिक परिवेश अंचल के जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। पर्वतीय, मैदानी, मरुस्थलीय या वनवासी क्षेत्रों की विविधता वहाँ की जीवन शैली, भाषिक स्वरूप और मान्यताओं को प्रभावित करती है।
3. **लोक-संस्कृति :**लोक संस्कृति आंचलिकता का मूल तत्व है। इसमें लोक गीत, नृत्य, रीति-रिवाज, आचार-विचार, अंधविश्वास, परंपराएं शामिल हैं। ये सब मिलकर अंचल विशेष की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक आत्मा को व्यक्त करते हैं।
4. **प्राकृतिक परिपार्श्व :** आंचलिक रचनाओं में प्रकृति सिर्फ पृष्ठभूमि नहीं होती, बल्कि जीवन के सहचर की तरह उसका चित्रण किया जाता है। हरियाली, पर्वत, बंजर भूमि, नदियाँ और मौस-सभी चरित्रों की संवेदनाओं में समाहित होते हैं।
5. **स्थानीय रंग :** स्थानीयता आंचलिकता की आत्मा है। इसमें बोली, लोकगीत, कहावतें, रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान आदि का समावेश होता है। ये तत्व रचना को यथार्थ के करीब और स्वाभाविक बनाते हैं।
6. **सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चेतना :** आंचलिक रचनाएँ सामाजिक असमानता, जातिगत विद्वेष, अशिक्षा, शोषण, बेरोजगारी, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, स्त्री शोषण आदि मुद्दों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करती हैं।
7. **समस्याओं का चित्रण :** ग्रामीण या पिछड़े क्षेत्रों की समस्याएँ-जैसे गरीबी, शिक्षा का अभाव, जातिवाद, सामाजिक उत्पीड़न, नैतिक मूल्यों का क्षरण आदि-आंचलिकता का अनिवार्य हिस्सा बनते हैं। लेखक इन

समस्याओं को संवेदनशीलता और यथार्थ दृष्टि से चित्रित करता है।

8. **सामूहिक चरित्र-चित्रण :** आंचलिक साहित्य में व्यक्ति से अधिक समुदाय का चित्रण होता है। पात्र अंचल विशेष के प्रतिनिधि होते हैं। लेखक का उद्देश्य पूरे क्षेत्र की सामूहिक चेतना और जीवन-धारा को प्रस्तुत करना होता है।
9. **स्थानीय भाषा और बोली :** स्थानीय बोली के प्रयोग से पात्र और परिवेश दोनों अधिक सजीव बनते हैं। बोली में निहित मुहावरे, कहावतें और देशज शब्द कथ्य को गहराई और विश्वसनीयता प्रदान करते हैं।
10. **तटस्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण :** आंचलिक लेखक का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ और समाजशास्त्रीय होता है। वह अपने पात्रों और स्थितियों का चित्रण किसी पूर्वग्रह या मोह-ममता के बिना करता है। तथ्यों को बिना अतिरंजन के प्रकट करना उसकी विशेषता है।
11. **रागात्मकता के साथ कलागत निरपेक्षता :** लेखक को अंचल से आत्मीयता होती है, लेकिन वह अति भावुकता से बचकर कलात्मक संतुलन बनाए रखता है। उसकी दृष्टि न तो पूर्वाग्रह से युक्त होती है, न ही मात्र प्रचारात्मक।
12. **बिंबात्मक या फोटोग्राफिक शैली :** आंचलिक लेखक दृश्य को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जैसे फोटोग्राफ का एक-एक फ्रेम हो। यह शैली रचना को सजीव और प्रभावशाली बनाती है। दृश्य और भावनाएँ चित्रवत उभरती हैं।

अन्य गौण तत्व : इन प्रमुख तत्वों के अतिरिक्त कुछ गौण तत्व भी हैं, जो आंचलिकता को समृद्ध करते हैं, जैसे: जातीय चेतना, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, हास्य-व्यंग्य की शैली, चित्रात्मक भाषा, रूमानी भावबोध। हालाँकि इन गौण तत्वों को प्रमुख तत्वों में सम्मिलित किया जा सकता है।

आंचलिकता एक ऐसी साहित्यिक प्रवृत्ति है, जो किसी विशिष्ट भूगोल, संस्कृति और समाज की सजीव अभिव्यक्ति है। यह केवल भौगोलिक विवरण या बोली तक सीमित नहीं होती, बल्कि संपूर्ण अंचल का सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण करती है। किसी रचना को आंचलिक कहने के लिए उसमें केवल एक-दो तत्व नहीं, बल्कि उपर्युक्त समग्र तत्वों की उपस्थिति आवश्यक होती है। आंचलिकता

अपने गहरे रागबोध, यथार्थ दृष्टि और कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्य को एक नई दिशा और गहराई प्रदान करती है।

4.5 मैला आँचल उपन्यास की आंचलिकता

'मैला आँचल' की आंचलिकता को परखने से पहले हम आंचलिक उपन्यास किसे कहते हैं, उस पर विचार करेंगे।

हिंदी साहित्य के विद्वानों ने आंचलिक उपन्यास की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं, जो निम्नलिखित हैं-

रामदरश मिश्र ने आंचलिक उपन्यास को किसी अंचल के व्यापक जीवन का उपन्यास स्वीकार किया है। उन्होंने आंचलिक उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- ''जैसे नई कविता ने सच्चाई से भोगे हुए, अनुभव की भट्ठी में तपे हुए पलों को व्यंजित करने में ही कविता की सुन्दरता देखी, वैसे ही उपन्यासों के क्षेत्र में आंचलिक उपन्यासों ने अनुभवहीन सामान्य या विराट् के पीछे दौड़कर अनुभव की सीमा में आने वाले अंचल विशेष को उपन्यास का क्षेत्र बनाया। .... आंचलिक उपन्यास तो अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है। उसका सम्बन्ध जनपद से होता है, ऐसा नहीं वह जनपद की ही कथा है।''



महत्वपूर्ण बिंदु

- संस्कृत में 'अंचल' का अर्थ है - 'वस्त्र का किनारा अथवा कोना'।
- हिंदी में 'अंचल' का अर्थ है-'देश का एक भाग या प्रान्त' है।

नंददुलारे वाजपेयी ने 'आंचलिक उपन्यास' के लिए 'अपरिचित भूमि' और 'अज्ञात जाति' को महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार 'आंचलिक उपन्यास' का यही सबसे बड़ी विशेषता है। वे आंचलिक उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है - ''आंचलिक उपन्यास हम उसे कहते हैं जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण हो। आंचलिक उपन्यास की सबसे प्रमुख विशेषता अपरिचित और किसी हद तक आदिम जातियों के जीवन चित्रण में पाई जाती है।''

इसी प्रकार शशिभूषण सिंहल ने 'आंचलिक उपन्यास' की परिभाषा देते हुए लिखते हैं- ''आंचलिक उपन्यास समाज के क्षेत्र विशेष के सांस्कृतिक

परिवेश को प्रस्तुत करता है। सामाजिक उपन्यास में देश के सामान्य सांस्कृतिक जीवन की झाँकी मिलती है, किन्तु आंचलिक उपन्यास, प्रमुख सांस्कृतिक धारा में स्थित द्वीप सरीखे स्थिर प्राय: स्वत: पूर्ण अंचलों की लोक संस्कृति को अपना कथ्य बनाते हैं।''

इन समग्र परिभाषाओं के उपरांत हम कह सकते हैं कि 'आंचलिक उपन्यास' का संबंध अंचल विशेष से है और इसका मूल उद्देश्य किसी विशेष अंचल के आंतरिक और बाह्य जीवन को पूर्णतया पाठकों के सामने लाना।

अब हम 'मैला आँचल' उपन्यास की आंचलिकता पर विचार करेंगे-

'मैला आँचल' 'रेणु' का पहला उपन्यास है और हिंदी साहित्य का पहला 'आंचलिक उपन्यास'। 'मैला आँचल' में आजादी के ठीक पूर्व से लेकर आजादी के बाद के नौ-दस महीनों की घटनाओं का समावेश है।

'मैला आँचल' उपन्यास का परिचय देते हुए 'रेणु' लिखते हैं- ''यह है 'मैला आँचल' एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया । पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल विभिन्न सीमा-रेखाओं से इनकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी हैं, शूल भी हैं, धूल भी हैं, गुलाब भी, कीचड़ भी हैं, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 1. 'अंचल' एवं 'आंचलिकता' से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 2. रेणु ने 'मैला आँचल' उपन्यास के परिचय में क्या कहा है?

प्रश्न 3.नंददुलारे वाजपेयी ने आंचलिक उपन्यास के संबंध में क्या कहां था?

प्रश्न 4. डॉ.रामपत यादव के अनुसार आंचलिकता के प्रमुख तत्व क्या-क्या है?

प्रश्न 5. आंचलिकता के प्रमाणिकता के तत्व क्या-क्या है?

'मैला आँचल' की कथावस्तु' बिहार राज्य का पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' नामक गाँव है। उपन्यास के प्रमुख पात्र डॉ. प्रशांत और कमली, सहदेव और फुलिया, कालीचरण और मंगला, बालदेव और लक्ष्मी आदि पात्रों के बीच प्रेमकथा विकसित होती है। 'मेरीगंज' के लोग आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। ''कपड़ो के बिना सारा गाँव अर्धनग्न है। मर्दों ने पेंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं; बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।'' किस प्रकार आजादी के बाद शहरीकरण के कारण गाँव टूट रहे हैं, उपन्यासकार ने उसकी और भी संकेत किया है। दूसरी ओर महंत रामदास और सेवादास के माध्यम से 'रेणु' जी ने धार्मिक पाखंड का भी पर्दाफाश किया है। इसी प्रकार विश्वनाथप्रसाद के माध्यम से लेखक ने शोषित वर्ग का चरित्र सामने रखा।

इसके अतिरिक्त गाँव की राजनीतिक गतिविधियाँ और सामाजिक रीतिरिवाज, जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास आदि के माध्यम से लेखक ने राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाश डाला है। आंचलिक भाषा और शब्द तथा लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग भी उपन्यास में सफलतापूर्वक हुआ है। 'मेरीगंज' गाँव की सारी समस्याओं को 'रेणु' जी ने इस उपन्यास में समेटा है। इस प्रकार हम इस उपन्यास को आंचलिकता की दृष्टि से एक सफल उपन्यास कह सकते हैं।

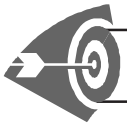


4.6 सारांश

'अंचल', आंचलिकता इन शब्दों का प्रयोग स्वतंत्रता के बाद प्रचुर मात्रा हुआ। 'मैला आँचल' उपन्यास के कारण भी विद्वान इन शब्दों पर गहराई से सोचने पर मजबूर हुए। 'रेणु' से पहले प्रेमचंद के उपन्यास में भी ग्राम्य जीवन का चित्रण हुआ है, पर उन्होंने किसी एक गाँव को केंद्र में रखकर उपन्यास नहीं लिखे। उनका 'ग्राम्य' चित्रण सामान्य है, विशेष नहीं। इसलिए हम उनके उपन्यास को 'आंचलिक उपन्यास' की संज्ञा नहीं दे पाते हैं।

आंचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' हिंदी का पहला सफल उपन्यास माना जा सकता है। इस उपन्यास में 'मेरीगंज' नामक गाँव का विशेष चित्रण प्रस्तुत है। विद्वानों ने 'आंचलिक उपन्यास' की जो परिभाषा दी हैं, उन

परिभाषाओं पर भी यह उपन्यास खरा उतरता है। अतः हम 'मैला आँचल' को एक सफल आंचलिक उपन्यास मान सकते हैं।



4.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: 'अंचल' शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ संस्कृत में 'वस्त्र का किनारा अथवा कोना' है। हिंदी में इसका अर्थ 'देश का एक भाग या प्रान्त' है। अधिक जानकारी के लिए 'आंचलिकता से तात्पर्य' को ध्यानपूर्वक पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर: ''आंचलिक उपन्यास हम उसे कहते हैं जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण हो। आंचलिक उपन्यास की सबसे प्रमुख विशेषता अपरिचित और किसी हद तक आदिम जातियों के जीवन चित्रण में पाई जाती है।''

प्रश्न 4 का उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 5 का उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।



4.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- रेणु, फणीश्वरनाथ.(1954). मैला आँचल, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन,
- वर्मा, लालिमा.(1988). फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों की भाषा का शैली शास्त्रीय अध्ययन, पटना: जानकी प्रकाशन, पटना,
- शर्मा, ब्रह्मस्वरूप.(2000). हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा, दिल्ली: मनु प्रकाशन,
- शेफालिक, (1996). रेणु का कथा संसार, दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- महेता, कला.(1992). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, विजय प्रकाशन मंदिर,
- वाजपेयी, प्रकाश.(1964). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, दिल्ली: नंद किशोर एंड संस,
- ठाकुर, देवेश.(2007).मैला आँचल की रचना प्रक्रिया, दिल्ली वाणी प्रकाशन,

- जैन- नगीना.(1997) आंचलिकता ओर हिंदी उपन्यास, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन, दिल्ली
- डॉ. चन्द्रभानु,(2003). कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन,
- सिंह, डॉ. मोजेन्द्र. (1987). रेणु का साहित्य: समाजशात्रीय अध्ययन, दिल्ली: ऋषभचरण जैन एवं संतति,
- राय, गोपाल.(1992).उपन्यासकार रेणु और मैला आँचल, दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हाउस,
- मिश्र, डॉ. अमरेंद्र.(1998). फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य, दिल्ली: हिंदी बुक सेंटर,

4.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. आंचलिक उपन्यास किसे कहते हैं?
2. फणीश्वरनाथ 'रेणु' के चार कहानियों का नामोल्लेख कीजिए।
3. हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास कौन सा है?
4. 'मैला आँचल' उपन्यास में किस गाँव का चित्रण हुआ है ?
5. 'मैला आँचल' उपन्यास के चार पात्रों का नाम लिखिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. अंचल शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए आंचलिकता पर प्रकाश डालिए।
2. मैला आँचल की आंचलिकता पर प्रकाश डालिए।
3. आंचलिक उपन्यास परम्परा में रेणु का स्थान स्पष्ट कीजिए।
4. आंचलिकता के प्रमुख तत्वों पर एक आलेख तैयार कीजिए।
5. आंचलिक साहित्य की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए आंचलिकता और प्रादेशिकता पर आलेख तैयार कीजिए।

******

इकाई-5 : मैला आँचल (भाग- III)

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 'मैला आँचल' का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

5.4 'मैला आँचल' का राजनीतिक संदर्भ

5.5 'मैला आँचल' : भाषा शिल्प

5.6 सारांश

5.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

5.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

5.9 अभ्यास प्रश्न

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन आप

- 'मैला आँचल' के सामाजिक परिप्रेक्ष्य से अवगत होंगे।
- ग्रामीण समाज में शिक्षा की दयनीय स्थिति के बारे में जान सकेंगे।
- 'मैला आँचल' उपन्यास के राजनीतिक सन्दर्भ से परिचय प्राप्त करेंगे।
- स्वतंत्रता के पश्चात् बदलते राजनीति से अवगत होंगे।
- 'मैला आँचल' की भाषा-शैली से परिचित होंगे।
- 'मैला आँचल' उपन्यास में प्रयुक्त लोकोक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

5.2 प्रस्तावना

भारत की आजादी बाद भी समान्य-जन की स्थिति में कोई मूल परिवर्तन नहीं आया। भाई-भतीजावाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार आदि समाज में घर कर गए। 'समाजवाद', राष्ट्रवाद' जैसे शब्द आजादी के पूर्व सुनाई देता था, वह स्वतंत्रता के बाद लोप हो गया। 'अवसरवादी' लोगों के बोलबाला होने के कारण राजनीतिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार बढ़ने लगा। 'कमलेश्वर' स्वतंत्रता के बाद की

स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-''बड़ी मनहूस रातें थीं। जैसे पूरी बस्ती को साँप सूँघ गया था। सब, सबको पहचानते थे, पर सामने पड़ते ही अजीब हैरत और शक के अंदाज में एक दूसरे को देखते। मन में बैठे हुए शंकाओं के साँप भीतर-भीतर फूंफकारने लगते थे और आँखों में अजनबीपन की चमक भर जाती थी।''

सामाजिक विसंगतियाँ, जैसे-जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास आदि जस का तस बना हुआ था। हम इस प्रस्तुत इकाई में 'मैला आँचल' उपन्यास में चित्रित सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर विचार करेंगे। इसके अतिरिक्त 'मैला आँचल' उपन्यास की भाषा-शैली पर भी विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

5.3 मैला आँचल का सामाजिक परिप्रेक्ष

प्रत्येक साहित्यकार हमेशा अच्छे समाज के लिए प्रयलशील रहते हैं। और यह जरूरी भी है, क्योंकि मनुष्यों समाज में ही रहते हैं। उनके बिना समाज की कल्पना और समाज के बिना मनुष्य की कल्पना असंभव है। एक अच्छे लेखक का गुण है कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन करें। प्रेमचंद ने भी एक रचनाकार के लिए आवश्यक माना है। उन्होंने इस संबंध में लिखा है- ''समाज में होनेवाली क्रांतियों, आंदोलनों एवं हलचलों से बेखबर तथा समाज के सुख-दुख से अप्रभावित रहते हुए अपने ही कल्पना लोक में विहार करनेवाले साहित्य के लिए, अमीरों और सेठ-साहूकारों का याचक बनकर, जीवन-यापन करनेवाले साहित्यकारों के लिए इस दुनिया में कोई जगह नहीं है।''

'रेणु' जी के कथा-साहित्य को पढ़ते हुए हम पाते है कि वे आजाद भारत की सामाजिक समस्याओं को लेकर चिंतित थे। भारत की आजादी के बाद भी समाज में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं आया। गरीबी, भूमिहीनता, जातिगत-भेदभाव आदि समस्याएँ प्रमुख समस्या के रूप में सामने आयीं। 'रेणु' अपनी रचनाओं के माध्यम से इस समस्याओं पर चिंता जाहिर की।

रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक दस्तावेज है जिसमें उत्तर बिहार के मेरीगंज जैसे गाँव की

जटिलताओं, सामाजिक कुरीतियों और परिवर्तित होते मूल्यों का सजीव चित्रण मिलता है। इस गाँव का समाज जातीय संरचना में गहराई से बँटा हुआ है- कायस्थ, राजपूत और यादव प्रमुख जातियाँ हैं, जिनमें निरंतर प्रतिस्पर्धा और तनाव की स्थिति बनी रहती है। ब्राह्मण, संख्या में कम होने के बावजूद, गाँव की तीसरी ताकत के रूप में कार्य करते हैं, जो इन जातियों को आपस में उलझाए रखते हैं।

गाँव केवल जातीय विभाजन का शिकार नहीं है, बल्कि विभिन्न मोहल्लों में भी बँटा हुआ है, जैसे कि कुर्मी टोला, गहलोत टोला, तंत्रिमाछत्री टोली आदि। इन टोलों का आधार जाति ही होता है और हर जाति स्वयं को अन्य से श्रेष्ठ मानती है। यह जातिगत भेदभाव सामाजिक समरसता को नष्ट करता जा रहा है। गाँव में शिक्षा की स्थिति भी अत्यंत दयनीय है। रेणु के अनुसार, पूरे मेरीगंज में मुश्किल से दस व्यक्ति ऐसे हैं जो पढ़े-लिखे कहे जा सकते हैं। नयी पीढ़ी में पंद्रह विद्यार्थी पढ़ रहे हैं, पर वह संख्या नगण्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ापन गाँव के सामाजिक और आर्थिक संकटों को और अधिक गहरा करता है। आर्थिक अभाव, अशिक्षा के प्रति उपेक्षा और सामाजिक बेड़ियाँ इस समस्या को और जटिल बना देती हैं। स्वतंत्रता के बाद भले ही ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना हुई हो, परंतु पढ़ाई की वास्तविक स्थिति निराशाजनक बनी हुई है।

जातिवाद केवल सामाजिक रिश्तों तक सीमित नहीं रहता, यह सरकारी योजनाओं को भी प्रभावित करता है। योजनाएँ जातीय टकराव के कारण निष्प्रभावी बन जाती हैं। किसी व्यक्ति के छोटे से कार्य से ही उसकी जाति की मर्यादा पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। जैसे, बिरंची द्वारा तहसीलदार की दी हुई मिठाई खाने को जूठा मानकर उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया।

ग्राम्य जीवन में आचार-विचार, धार्मिक रीति-रिवाज और नैतिकता भी जाति के अनुसार बदल जाते हैं। जाति-विशेष के लोगों के लिए भोज, संस्कार और मेल-मिलाप के नियम अलग-अलग हैं। श्राद्ध भोज में भी यह देखा जाता है कि कौन किस जाति से है, उसी के अनुसार भोजन परोसा जाता है। रेणु ने यह भी स्पष्ट किया है कि ग्राम्य समाज में धर्म, नैतिकता और आस्था परंपरागत रूप से मजबूत रहे हैं, परंतु अब पूंजीवाद और आधुनिकता की आँधी

में ये मूल्य डगमगाने लगे हैं। लोगों के बीच सहयोग की भावना समाप्त हो रही है और संबंधों में स्वार्थ हावी होता जा रहा है। आज यदि कोई व्यक्ति नैतिक पतन के बावजूद बड़ा भोज करता है तो उसकी छवि समाज में सुधर जाती है, जैसा कि व्यभिचारी महन्थ सेवादास के मामले में दिखता है।

गाँवों में भूत-प्रेत, टोना-टोटका और अंधविश्वासों की गहरी पैठ है। डॉ प्रशान्त जैसे शिक्षित डॉक्टर को भी 'जिन' कहा जाता है क्योंकि उसकी उपस्थिति से गाँव में परिवर्तन आया है। पारंपरिक वैद्य और जोतखी डॉक्टरों को बुरा बताते हैं, और ग्रामीणों को डराकर अस्पताल का विरोध करते हैं।

नारी के सर्वांगीण विकास के पक्षधर 'रेणु' नारी की असहाय स्थिति को देखकर दुखी है। वे इस दु:ख को 'मैला आँचल' के मंगला देवी के माध्यम से प्रकट करते हैं- ''आदमी के अंदर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा-आश्रम, अबला-आश्रम और बड़े-बड़े बाबुओं के घर आया की जिन्दगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी?... नहीं, यह भी गलत। औरत होना चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं सो सकती। मंगला देवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर। उसका कौन है अपना? कोई नहीं।'' गाँव के लोग चाहे अशिक्षित हो, अंधविश्वासी हो, पर सांसारिक होते हैं। इस विषय में 'मैला आँचल' में 'रेणु' जी लिखते हैं- ''गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी।''

स्त्रियों की स्थिति अत्यंत शोचनीय है। लक्ष्मी जैसी लड़की को अपने पिता की मृत्यु के बाद दासी बनाकर मठ में दे दिया जाता है। स्त्री केवल मनोरंजन की वस्तु बनकर रह जाती है। उनकी स्वास्थ्य समस्याओं को अनदेखा किया जाता है और ऑपरेशन जैसे आधुनिक उपचार को अस्वीकार कर दिया जाता है क्योंकि वह पेट दिखाना अशोभनीय माना जाता है। नारी चेतना का धीरे-धीरे विकास हो रहा है, परंतु सामाजिक बेड़ियाँ अभी भी उसे रोक रही हैं। कमली जैसी स्त्री अपने मन की बात कहने में झिझकती है और अपने प्रेम

को 'जिन सवार होना' कहकर व्यक्त करती है। डायन और भूत की अवधारणाओं से आज भी ग्रामीण महिलाएँ त्रस्त हैं। मैला आँचल' के माध्यम से रेणु ने ग्रामीण समाज की परतें उधेड़ कर रख दी हैं जहाँ जातिवाद, अशिक्षा, अंधविश्वास, नैतिक पतन और स्त्री-दमन की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं। उपन्यास का यथार्थ चित्रण न केवल उस समय की सामाजिक सच्चाइयों को सामने लाता है, बल्कि आज के समाज के लिए भी आईना प्रस्तुत करता है।

अनः 'रेणु' जी ने गाँव के हर मुद्दे को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। वे इन समस्याओं को लेकर चिंतित है। अशिक्षा, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव आदि विविध समस्याओं को 'रेणु' जी ने 'मैला आँचल' के माध्यम से पाठकों के सम्मुख रखा।



महत्वपूर्ण बिंदुः

➢ रेणु का 'मैला आँचल' हिंदी आंचलिक उपन्यास परंपरा का एक मील का पत्थर है, जिसमें बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज अंचल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। उपन्यास में अंचल विशेष की लोक-भाषा, लोक-जीवन, गीत, पर्व और रीति-रिवाजों को वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। रेणु ने ग्रामीण परिवेश में व्याप्त जातिवाद, अंधविश्वास, शोषण, अशिक्षा और गरीबी जैसी समस्याओं को उकेरा है, साथ ही गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। डॉ. प्रशांत जैसे पात्रों के माध्यम से चेतना और परिवर्तन की भावना दर्शाई गई है। लोकगीत, ध्वन्यात्मकता और चित्रात्मक शैली के प्रयोग से कथा में जीवंतता आई है। भाषा में आंचलिकता और जनभाषा का सुंदर समन्वय मिलता है। यह रचना सिर्फ एक उपन्यास न होकर ग्रामीण भारत की आत्मा का चित्रण है, जो प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए एक नई दिशा प्रदान करती है।

5.4 मैला आँचल का राजनीतिक संदर्भ

फणीश्वरनाथ ''रेणु'' की साहित्यिक दृष्टि गहरे सामाजिक और राजनीतिक धरातल पर आधारित है। उनके लेखन में राष्ट्र की स्वतंत्रता, ग्रामीण भारत की जटिलताएं और स्वतंत्रता के बाद की राजनीतिक परिस्थिति मानवीय संवेदना

के साथ उभरकर सामने आती हैं। ''रेणु'' स्वयं भी स्वाधीनता संग्राम से गहरे रूप से जुड़े रहे। उन्होंने न केवल लेखनी से, बल्कि प्रत्यक्ष भागीदारी से आज़ादी के संघर्ष में योगदान दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी और गिरफ्तारी इस बात का प्रमाण है। क्रिस्टोफर काडवेल और राल्फ फॉक्स की भांति रेणु ने राजनीति को केवल विषय नहीं, बल्कि कर्मक्षेत्र के रूप में अपनाया।

रेणु का समाजवादी चिंतन आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ. राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे प्रमुख समाजवादियों के संपर्क में आने से और अधिक स्पष्ट हुआ। उन्होंने राजनीति में व्याप्त सत्ता-लोलुपता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, और दलीय स्वार्थ को गहरे अवलोकन से देखा और इन प्रवृत्तियों की तीखी आलोचना अपने उपन्यासों में की। इसके बावजूद, उनके उपन्यास विशुद्ध राजनीतिक नहीं हैं, बल्कि राजनीति के प्रभाव को मानवीय अनुभवों और संवेदनाओं के माध्यम से चित्रित करते हैं।

'मैला आँचल' में 1942 से 1948 तक की राजनीतिक हलचलों का समावेश किया गया है। मेरीगंज जैसे गाँव की सामाजिक संरचना में राजनीतिक चेतना का संचार, गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित पात्र बालदेव गोप के माध्यम से होता है। बालदेव की राजनीति त्याग, सेवा और सत्याग्रह पर आधारित है। जब गाँव में हिंसा की आशंका होती है, तो वे उपवास और अनशन करते हैं। उनका यह कर्म गांधीवादी मूल्यों की गूंज है। सुराजी आंदोलन के दौरान जेल में झेली गई अमानवीय यातनाओं को जब वह बयान करते हैं, तो ग्रामीण जनता के सामने स्वतंत्रता संग्राम की जटिलता स्पष्ट होती है।

वहीं दूसरी ओर समाजवादी विचारधारा से प्रेरित कालीचरण और ग्रंथाल जैसे पात्र, श्रमिकों और किसानों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाते हैं। परंतु भूमि के सवाल पर जब वे साहूकारों की जमीन पर कब्जा करते हैं, तो उन्हें सत्ता संरचना और राजनीतिक भ्रष्टाचार के कारण हार का सामना करना पड़ता है। यह घटना दर्शाती है कि स्वतंत्रता के बाद भी सत्ता की संरचना आम जन के विरुद्ध बनी रही। रेणु ने दिखाया है कि आज़ादी के पश्चात गाँवों में भी राजनीतिक दलों का प्रभुत्व बढ़ा और चुनाव केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम बनकर रह गया। उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए छल, कपट और प्रलोभन

जैसे हथकंडों का सहारा लेते हैं। मुखिया पद की प्रतिस्पर्धा में जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के नाम पर ग्रामीण समाज को बाँटा जाता है। बावनदास जैसे पात्र इस नई राजनीति को ''पटनिया रोग'' कहकर इसकी भर्त्सना करते हैं। उनकी दृष्टि में यह राजनीतिक संक्रमण है जिसने ग्राम्य जीवन की शांति भंग कर दी है।

भारत की आजादी के बाद राजनीतिक परिवर्तन तो हुई, पर सामान्य जनता अब भी अपने अधिकारों से वंचित थे। भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, भाई-भतीजावाद ने अपना कमाल दिखाना शुरू कर दिया। राजनीतिक पतन का दौर शुरू हो गया। 'मैला आँचल' के बावनदास राजनीति में फैले भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए कहता है- ''आते हैं। 'मैला-आँचल' का बावनदास कहता है, 'सोसलिस? सोसलिस? क्या कहेगा सोसलिस हमको?... सब पार्टी समान। उस पार्टी में भी जितने बड़े लोग है, मंत्री बनने के लिए मार-काट कर रहे हैं। सब मेले होना चाहते हैं बालदेव! देश का काम, गरीबों का काम, चाहे मजूरों का काम, जो भी करते हैं बस एक ही लोभ से।''



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. सामाजिक दृष्टि से 'मैला आँचल' एक सफल उपन्यास है, व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 2. रेणु की समाजवादी विचारधारा मुखरित करने के पीछे किन व्यक्तियों का योगदान था?

प्रशन 3. भारत छोड़ो आन्दोलन में रेणु की भागीदारी कैसी थी?

प्रश्न 4. उपन्यास की पात्र मंगला देवी ने स्त्री के सम्बन्ध में क्या कहा था?

प्रश्न 5. बालदेव किस विचार से प्रभावित थे?

भारत की आजादी में हर जाति, धर्म और वर्ग के लोगों का योगदान महत्वपूर्ण रहा। ऐसा माना जा रहा था कि भारत की आजादी के बाद सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में प्रगति देखने को मिलेगी, पर हुआ इसका उलटा। 'मैला आँचल' का 'बावनदास' इन परिस्थितियों को देखकर परेशान हो उठता है और 'बालदेव' से कहता है- ''भारथमाता अब भी रो रही है बालदेव! बावनदास को नींद नहीं आ रही है! बालदेवजी चमक उठते हैं। भारथमाता अब भी रो रही है?....क्या कहता है बावनदास? बावनदास करवट

लेते हुए कहता है, 'बिलैती कपड़ा के पिकेटिन के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिन के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव? चानमल मारवाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों से सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को खाने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे?... दुलारचंद कापरा को जानते हो न? वही जुआ कंपनीवाला, एक बार नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जो जोगबनी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।... 'भारथमाता' और भी, जार-बेजार रो रही हैं।''

राजनीतिक रूप से सभी लोग सजग हो रहे थे। दलित, शोषित, उपेक्षित आदि सभी वर्ग राजनीतिक गतिविधिओं में भाग लेने लगे। इन सबको सचेत करने का काम 'कालीचरण' करता है। 'कालीचरण' समाजवादी है। वे लोगों के सचेत करते हुए कहते हैं- ''मैं आपलोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पार्टी आपकी पार्टी गरीबों की, मजदूरों की पार्टी है। सोशलिस्ट पार्टी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आपलोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह काँग्रेसी का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ। कालीचरन आग उगलता है, लेकिन सुननेवालों का जलता हुआ कलेजा ठंडा हो जाता है। जमीन जोतनेवालों की! पूँजीवाद का नाश!''

'मैला आँचल' में राजनीतिक दलों की आपसी छींटाकशी भी उजागर होती है। जनसंघ के कार्यकर्ता जहाँ सांप्रदायिक प्रचार करते हैं, वहीं समाजवादी पार्टी के लोग उन्हें 'बुद्ध क्लास' कहकर मज़ाक उड़ाते हैं। इन दलों के वादे खोखले हैं और ग्रामीण जनता के बीच उनका विश्वास खत्म होता जा रहा है। गाँवों में भी चुनावी राजनीति का उतना ही ज़ोर है जितना शहरों में, और इसके लिए सभी दल जातीय समीकरण और लोभ-लालच का प्रयोग करते हैं। रेणु ने दिखाया कि यह राजनीति, जिसे कभी आज़ादी का सपना साकार करने के लिए अपनाया गया था, अब समाज को विघटित करने का कारण बन चुकी है। बालदेव कांग्रेस से मोहभंग की बात करते हुए कहते हैं कि कांग्रेस अब पूंजीपतियों की संस्था बन चुकी है। बावनदास, राजनीतिक पतन को चिन्हित

करते हुए कहता है कि जो लोग कभी समाज में अपमानित थे, वे आज राजनीति के शिखर पर बैठे हैं। यही विडम्बना है कि भ्रष्ट लोग सम्मानित हो गए और ईमानदार व्यक्ति कुचले जा रहे हैं।

रेणु की लेखनी में यह चिंता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है कि राजनीतिक स्वार्थ ने सामाजिक और नैतिक मूल्यों को बर्बाद कर दिया है। उनकी रचनाओं में राजनीति का मूल्यांकन केवल सत्ता तक सीमित न होकर, उसकी मानवीय और सामाजिक परिणतियों तक किया गया है। 'मैला आँचल' से लेकर 'पल्टू बाबू रोड' तक उन्होंने यह दिखाया कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद भी यदि राजनीतिक चेतना जागरूक नहीं हो, तो स्वतंत्रता मात्र औपचारिक बन कर रह जाती है। रेणु की रचनाओं में राजनीति एक समर्पित उद्देश्य नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यांकन का औजार बनकर सामने आती है। वे राजनीति को जीवन का एक अंग मानते हैं, लेकिन जब यही राजनीति भ्रष्टाचार, दमन और अवसरवाद का माध्यम बन जाती है, तब उनकी लेखनी उस पर कठोर प्रहार करती है। यही विशेषता उन्हें विशिष्ट बनाती है।

अंत में कह सकते हैं कि 'रेणु' जी ने उपन्यास 'मैला आँचल' के माध्यम से तत्कालीन समय में व्याप्त तमाम राजनीतिक विसंगतियों को सही ठंग से चित्रित किया है।

5.5 मैला आँचलः भाषा शिल्प

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का प्रसिद्ध उपन्यास ''मैला आँचल'' हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता की उत्कृष्ट मिसाल माना जाता है। इस रचना में उन्होंने बिहार के ग्रामीण जीवन, वहाँ की समस्याओं, संस्कृति और बोलचाल को इस तरह चित्रित किया है कि वह केवल किसी क्षेत्र विशेष की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की आत्मा को दर्शाती है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता इसकी भाषा है, जिसमें रेणु ने स्थानीयता और राष्ट्रीयता दोनों का संतुलन बनाए रखा है । रेणु ने मैथिली, भोजपुरी, नेपाली, हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को सहज रूप से मिलाकर हिंदी भाषा को एक नया लोकस्वर प्रदान किया। उन्होंने न केवल अंचल की मिट्टी की महक को सुरक्षित रखा, बल्कि उसे हिंदी साहित्य में इस प्रकार स्थान दिया कि वह पूरे देश के पाठकों को अपनी ओर खींच

लेती है। ''मैला आँचल'' में प्रयुक्त भाषा स्थानीय मुहावरों, लोकोक्तियों और क्षेत्रीय शब्दों से समृद्ध है, जिससे उपन्यास में जीवन का यथार्थ पूरी जीवंतता के साथ उभरता है।

उपन्यास में दो प्रकार की भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है–एक लेखक की भाषा, जिसमें विचार, व्यंग्य और संवेदना अभिव्यक्त होती है, और दूसरी पात्रों की भाषा, जो पूरी तरह उनकी सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्थिति के अनुरूप होती है। उदाहरण के लिए, डॉ. प्रशांत एक शिक्षित पात्र हैं, इसलिए उनकी भाषा में बौद्धिकता है, जबकि कमली, बालदेव गोप या खलासी जैसे ग्रामीण पात्र ठेठ बोली में बात करते हैं–''खलासी जी लाल पतरवा दिखा दें तो गाड़ी रुक जाई...''। यह पात्रानुकूलता रेणु के भाषा–कौशल की सबसे बड़ी पहचान है।

सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से भी रेणु का कार्य अत्यंत सफल है। आंचलिक शब्दों और स्थानीय बोलियों के प्रयोग के बावजूद उनका संदेश पाठकों तक आसानी से पहुँचता है। उन्होंने जिस ग्रामीण स्त्री, किसान, मज़दूर या नौजवान की पीड़ा और चेतना को स्वर दिया है, वह केवल अंचल विशेष की नहीं, सम्पूर्ण भारत की कथा बन जाती है। रेणु की भाषा में प्रवाह भी अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी लेखनी किसी पहाड़ी नदी की तरह बहती है–कभी शांत, कभी तीव्र, परंतु कभी अवरुद्ध नहीं। गाँव की नृत्य–नौटंकी हो या किसी समारोह का दृश्य, सब कुछ एक समान रूप से बहता चला जाता है। इसके साथ ही, ''मैला आँचल'' में चित्रात्मकता भी गहरी है। पाठक उपन्यास पढ़ते हुए मानो कैमरे से लिए गए तस्वीर देख रहा हो–गाँव की गलियाँ, खेतों में झूमती बालियाँ, कोसी नदी का उफान, लोकगीत, पर्व–त्योहार और गहनों की खनक–हर दृश्य आँखों के सामने सजीव हो उठता है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में लोकक्तियों, लोककथाओं, लोकगीतों और मुहावरों का सफल प्रयोग किया है। भाषा के बारे में 'रेणु' ने एक साक्षात्कार में कहा– ''देखिए, यों जब साधारण जनता की बात कहनी हो, जब वे लोग बोलते हैं, तब तो जाहिर है कि अपनी गाँव की बोली में बोलते हैं, मैथिली में बोलते हैं, मगही में बोलते हैं। मुझको लिखना पड़ रहा है उसकी हिन्दी में। तो अगर मैं उसको शुद्ध व्याकरण सम्मत और पंडिताउ भाषा में लिखता हूँ, तो

यह तो खुद कान में कैसा लगेगा कि यह गाँव का आदमी किस तरह से बोलता है इतना शुद्ध बोलता है। और बिल्कुल वैसा या अशुद्ध लिखने से यह उपन्यास चल नहीं सकता है। तो बीच का कहीं एक रास्ता तैयार करन होगा। तो जो वे लोग बोलते हैं कचहरी-वचहरी में कचराही बोली कहते हैं उसे। कचहरी की खिचड़ी भाषा में बोली जाने से कचराही बोली मैंने इस्तेमाल किया है इसी 'कचराही बोली' का। है वह खड़ीबोली ही, लेकिन थोड़ा सा शब्दों का हेर-फेर कर देने से आपको सुनने में लगेगा कि उसकी लय पकड़ में आ जाती है। वह खड़ी बोली लेकिन लय उसकी अपनी है।''

आज साहित्य में 'कहावतों' और 'मुहावरों' का महत्व बढ़ गया है। रचना में यथार्थवादी पात्रों के कारण 'कहावतों' और 'मुहावरों' का इस्तेमाल आवश्यक समझा जाता है।

'रेणु' जी ने भी उपन्यासों में इन 'कहावतों' और 'मुहावरों' का भरपूर प्रयोग हुआ है। 'मैला आँचल' में प्रयोक्त कुछ 'कहावतों' और 'मुहावरों' का उदाहरण इस प्रकार हैं- 'कौन गाछ (वृक्ष) एसी हैं जिसमें हवा नहीं लगती', 'जहाँ मेल तहां सरग है', 'जारू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का', 'दो भैंसों की लड़ाई दूब के सिर आफत', 'पहले जान तब जहान', 'बाप मरे तब कुमर, माँ मरे तब टुअर (अनाथ)', 'पेट भरे से काम', 'राडं एडं कनमोचडं', मुहावरे- 'अंधों में काना बन कर लीडरी करना', 'आँचल मैला करना', 'एकदम खलास हो जाना', 'कुबेर का भंडार न होना', 'गाँव के कुत्ते भूकना', 'नौ दो ग्यारह होना-मिट्टी का महादेव होना' आदि।

'रेणु' के उपन्यासों में 'मैथिली' 'मगही' और 'भोजपुरी' बोली के शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है। डॉ. रेणु शाह ने इस बारे में बताते हुए लिखते हैं- ''शब्द चयन और उसके प्रयोग की दृष्टि से रेणु एक सफल कथाकार और कहानीकार हैं, जिस अँचल विशेष के जीवन को उन्होंने लिया है, उसमें प्रयुक्त होने वाले स्थानीय शब्दों का प्रयोग भी उन्होंने सफलता पूर्वक किया है। भाषा कहीं भी दुरूहता उत्पन्न नहीं करती है।''

उनके उपन्यास 'मैला आँचल' में प्रयोक्त स्थानीय बोलियों के शब्दों का उदाहरण इस प्रकार हैं- 'गिरफ्फ' (गिरफ्तार), 'कैथ' (कायस्थ), 'अन्ट सन्ट' (अनशन), 'हासाम' (असम), 'मतत' (मदद), 'अन्डोलन' (आंदोलन),

'लाजमान' (लाजबान-अपशब्द), 'टाल' (धान का ढेर), 'किरिया' (कसम), 'प्रातकी' (प्रार्थना), 'मुरती' (लोग), 'इसबिस' (चपड़), 'बीजे' (खाना-पीना), 'सठ बरसा' (साठ साल का नाबालिग), 'बोरसी' (अंगीठी), जन्तर (थर्मोमीटर), 'उतसव' (उत्सव), इनकिलास (इन्कलाब), 'नेगडी' (नगिन), 'रोटिया गवाह' (गवाही की रोटी खानेवाला), 'जलखै' (जलपान), 'बोल' (कठौत),'आंगनवाली' (पत्नी), 'डोलडाल' (नित्यक्रिया), 'टूअर' (अनाथ), 'तुकलास' (झाडफूँक), 'बलाय' (रिश्वत), 'झरखा बान' (अग्निबाण), 'चार करना' (जोतना), 'रोक सकती' (रूखसत), 'सभागाछी' (मैथिल विवाहोत्सुकों का मेला), 'मड़र' (मालिक), 'रामदाउन', 'हूलमाल' (आंदोलन), 'नढेलो' (बदमाश), 'आखर' (अक्षर), 'बिलटा' (अवारा), 'चुमौना', 'दरमाहा' (मासिक वेतन), 'खम्हार' (खलिहान), 'जरीदहाड़' (मजबूरी), आदि।

'मैला आँचल' उपन्यास में अंग्रेजी, उर्दू और बांग्ला भाषा के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

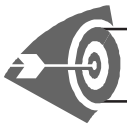


5.6 सारांश

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फनीश्वरनाथ 'रेणु' अपने उपन्यास 'मैला आँचल' के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त तमाम समस्याओं के उद्घाटन में सफल हुआ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने ग्रामीण समाज की आर्थिक व्यवस्था और स्त्री स्वतंत्रता पर भी बल देते हैं।

हम पहले ही कह चुके हैं कि स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत की स्थिति प्रायः एक जैसी थी। समाज में जाति आधारित भेदभाव, धार्मिक भेदभाव तथा अंधविश्वास आदि तमाम समस्याएँ विद्दमान थी। राजनीतिक दृष्टि से देखें तो सिर्फ सत्ता का परिवर्तन हुआ था। अवसरवादी राजनीति, भ्रष्टाचार, अन्याय-अत्याचार से जनता परेशान थी।

उपन्यासकार ने इन तमाम समस्याओं को 'मैला आँचल' के माध्यम से प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है।



5.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: ''रेणु' जी के कथा-साहित्य को पढ़ते हुए हम पाते है कि वे आजाद भारत की सामाजिक समस्याओं को लेकर चिंतित थे। भारत की आजादी के बाद भी समाज में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं आया।'' अधिक

जानने के लिए **'सामाजिक संदर्भ में 'मैला आँचल'** को ध्यानपूर्वक पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर: रेणु के जीवन में आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ. राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण का प्रभाव पड़ा था ।

प्रश्न 3 का उत्तर: रेणु का आंदोलन में सक्रिय भागीदारी थी ।

प्रश्न 4 का उत्तर: ''आदमी के अंदर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा-आश्रम, अबला-आश्रम और बड़े-बड़े बाबुओं के घर आया की जिन्दगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी?... नहीं, यह भी गलत। औरत होना चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं सो सकती। मंगला देवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर। उसका कौन है अपना? कोई नहीं।''

प्रश्न 5 बालदेव गांधीवादी विचारधारा से प्रभवित थे।



5.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- रेणु, फणीश्वरनाथ.(1954). मैला आँचल, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन,
- वर्मा, लालिमा.(1988). फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों की भाषा का शैली शास्त्रीय अध्ययन, पटना: जानकी प्रकाशन, पटना,
- शर्मा, ब्रह्मस्वरूप.(2000). हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा, दिल्ली: मनु प्रकाशन,
- शेफालिक, (1996). रेणु का कथा संसार, दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- महेता, कला.(1992). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, विजय प्रकाशन मंदिर,
- वाजपेयी, प्रकाश.(1964). हिंदी के आंचलिक उपन्यास, दिल्ली: नंद किशोर एंड संस,
- ठाकुर, देवेश.(2007).मैला आँचल की रचना प्रक्रिया, दिल्ली: वाणी प्रकाशन,
- जैन: नगीना.(1997) आंचलिकता ओर हिंदी उपन्यास, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन, दिल्ली,

- डॉ. चन्द्रभानु,(2003). कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन,
- सिंह, डॉ. मोजेन्द्र. (1987). रेणु का साहित्य: समाजशात्रीय अध्ययन, दिल्ली: ऋषभचरण जैन एवं संतति,
- राय, गोपाल.(1992).उपन्यासकार रेणु और मैला आँचल, दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हाउस,
- मिश्र, डॉ. अमरेंद्र.(1998). फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य, दिल्ली: हिंदी बुक सेंटर,

5.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों को उत्तर दीजिए

1. 'नौ दो ग्यारह होना' मुहावरे से एक वाक्य निर्माण कीजिए।
2. 'मैला आँचल' उपन्यास में प्रयोग किए गए दो स्थानीय बोली के शब्द लिखिए ।
3. 'मैला आँचल' उपन्यास में किस गाँव का वर्णन मिलता है?
4. ''मैं आपलोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए को जगाना चाहता हूँ''- यह कथन किसका है?
5. भारत छोड़ो आन्दोलन कब हुआ था?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. राजनीतिक संदर्भ में 'मैला आँचल' का मूल्यांकन' कीजिए।
2. 'मैला आँचल' की भाषा शिल्प पर प्रकाश डालिए।
3. सामाजिक संदर्भ में 'मैला आँचल' उपन्यास मूल्यांकन कीजिए।
4. मैला आँचल उपन्यास में चित्रित स्त्री की स्थिति पर एक आलेख तैयार कीजिए।
5. ''मैला आँचल'' में प्रयुक्त भाषा स्थानीय मुहावरों, लोकोक्तियों और क्षेत्रीय शब्दों से समृद्ध है-कथन को स्पष्ट कीजिए।

******

इकाई-6 : कर्मभूमि (भाग- I)

इकाई की रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय

6.4 प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय दृष्टि और सामाजिक चेतना

6.5 कर्मभूमि उपन्यास की कथावस्तु एवं समीक्षा

6.6 सारांश

6.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

6.8 अधिक जानने के लिए पढ़े

6.9 अभ्यास प्रश्न

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय प्राप्त करेंगे।
- प्रेमचंद के साहित्य में चित्रित सामाजिक चेतना को जान सकेंगे।
- 'कर्मभूमि' उपन्यास की कथावस्तु एवं समीक्षा से अवगत होंगे।
- कथावस्तु का रस भी ले पायेंगे।
- प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।

6.2 प्रस्तावना

'प्रेमचंद' को उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित किया गया है और ज्यादातर विद्वान इस बात से सहमत हैं। यही कारण है कि हिंदी साहित्य में उपन्यासों को 'प्रेमचंद पूर्व', 'प्रेमचंद युगीन' और 'प्रेमचंदोत्तर' इन तीन भागों में विभाजित किया जाता हैं। उपन्यासकार 'प्रेमचंद' के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं- ''सेवासदन (1918) का प्रकाशन न केवल प्रेमचंद (1880-1936) के साहित्यिक जीवन की, वरन् हिंदी-उपन्यास की भी एक महत्वपूर्ण घटना थी। 'सेवासदन' पूर्ववर्ती कथा-साहित्य का अभूतपूर्व विकास

था- इससे पहले कथा-साहित्य में या तो अजीबोगरीब घटनाओं के द्वारा कुतूहल और चमत्कार की सृष्टि रहती थी अथवा आर्यसमाज और तत्समान अन्य सामाजिक आंदोलनों से प्रभावित समाज-सुधारों का प्रचार ही उसकी उपलब्धि रह गयी थी।''

हम प्रस्तुत इकाई में 'प्रेमचंद' का जीवन परिचय के साथ-साथ उनके साहित्यिक परिचय और उनके द्वारा रचित उपन्यास 'कर्मभूमि' की कथावस्तु तथा इस उपन्यास का समीक्षा प्रस्तुत करेंगे।

6.3 उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय

सामान्य परिचय- 'प्रेमचंद' का जन्म सन् 1880 में उत्तर प्रदेश के 'लमही' नामक ग्राम में हुआ था और 8 अक्टूबर सन 1936 में इस महान हस्ती का देहांत हो गया। इनका बचपन का नाम 'धनपत राय' था, यह नाम उनको उनके पिताजी ने दिया था। ताऊ ने 'नवाब' नाम रखा था। पर यह 'हिंदी साहित्य में' प्रेमचंद के नाम से विख्यात हुए।

नटखट स्वभाव के प्रेमचंद का बचपन गाँव में ही बीता। प्रेमचंद अपने बचपन को याद करते हुए लिखते हैं- ''उनकी अम्मा तीन महीने के लिए अपने मायके या उनके ननिहाल गयी थीं और उन्होंने तीन महीने में एक मन गुड़ का सफाया कर दिया था। यही गुड़ के दिन थे। नाना बीमार थे, अम्मा को बुला भेजा था। मेरा इम्तिहान करीब था, इसलिए मैं उनके साथ न जा सका। जाते वक्त उन्होंने एक मन गुड़ लेकर एक मटके में रखा और उसके मुँह पर एक सकोरा रखकर मिट्टी से बन्द कर दिया। मुझे सख्त ताकीद कर दी कि मटका न खोलना। मेरे लिए थोड़ा-सा गुड़ एक हाँडी में रख दिया था। वह हाँडी मैंने एक हफ्ते में सफाचट कर दी। सुबह को दूध के साथ गुड़, रात को फिर दूध के साथ गुड़। यहाँ तक जायज खर्च था।''



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'प्रेमचंद' के बचपन का नाम 'धनपत राय' था।
- 'प्रेमचंद' ने लेखन की शुरुआत उर्दू दे की थी।

'प्रेमचंद' की आरंभिक शिक्षा एक मौलवी के पास आठवें साल में शुरू हुई थी। पर असमय माँ की मृत्यु हो जाने के बाद अकेला पड़ गया था। पहली पत्नी उन्हें पसंद नहीं आयीं, इसलिए दूसरी शादी की। फिर भी अकेलापन दूर नहीं हुआ- ''और उसी दिन नवाब जिसे माँ ने पान के पत्ते की तरह फेरती थी, कभी सर्दी से, कभी गर्मी से, कभी सिहाने वालों की ढीठ से, देखते-देखते सयाना हो गया। अब उसके सर पर तपता हुआ नीला आकाश था, नीचे जलती हुई भूरी धरती थी, पैरों में जूते न थे, बदन पर साबित कपड़े न थे, इसलिए नहीं कि एक बायेक पैसे का टोटा पड़ गया था, बल्कि इसलिए कि इन सब बातों की फिक्र रखने वाली माँ की आँखें मूँद गयी थीं। बाप यों भी कब माँ की जगह ले पाता है।'' इस अकेलेपन को प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से भी व्यक्त किया है। इस उपन्यास प्रमुख पात्र 'अमरकांत' कहता है- ''जिन्दगी की वह उम्र जब इंसान को मुहब्बत की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, वह बचपन है। उस वक्त पौधे की तरी मिल जाय तो जिन्दगी भर के लिए उसकी जड़ें मजबूत हो जाती हैं। उस वक्त खुराक न पाकर उसकी जिन्दगी खुश्क हो जाती है। मेरी माँ का उसी जमाने में देहान्त हुआ और तब से मेरी रूह को खुराक नहीं मिली। वही भूख मेरी जिन्दगी है।''

साहित्यिक परिचयः 'प्रेमचंद' ने अपने जीवन में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएँ कीं।

कहानीः 'प्रेमचंद' ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, ऐतिहासिक आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों को पाठकों के सम्मुख रखा। उनकी सभी कहानियाँ 'मानसरोवर' में संगृहित हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ इस प्रकार हैं- 'अलग्योझा', 'ईदगाह', 'माँ', 'बड़े भाई साहब', 'ठाकुर का कुआँ', 'घरजमाई', 'पूस की रात', 'गुल्ली-डण्डा', 'कुसुम', 'वेश्या', 'चमत्कार', 'कैदी', 'दो बैलों की कथा', 'रियायत का दीवान', 'नेउर', 'गृह-नीति', 'कानूनी कुमार', 'लॉटरी', 'नया विवाह', 'विश्वास', 'नरक का मार्ग', 'निर्वासन', 'माता का हृदय', 'परीक्षा', 'तेतर', 'नैराश्य', 'दण्ड', 'धिक्कार', 'मनुष्य का परम धर्म', 'गुरुमंत्र', 'सौभाग्य के कोड़े', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'वज्रपात', 'सत्याग्रह', 'सद्गति', 'दारोगा जी', 'सवा सेर गेहूँ', 'निमंत्रण', 'रामलीला', 'कजाकी', 'प्रायश्चित', 'जेल', 'जुलूस',

'आत्माराम', 'गरीब की हाय', 'बेटी का धन', 'धर्म-संकट', 'पशु से मनुष्य', 'बूढ़ी काकी', 'हार की जीत', 'नमक का दरोगा' आदि।

उपन्यास: 'प्रेमचंद' का हिंदी उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। यही कारण है कि उनको 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। 'प्रेमचंद' पहले उर्दू में लिखा करते थे। उनकी शिक्षा भी उर्दू से प्रारंभ हुई। वे पहले उर्दू में लिखते थे और बाद में उन रचनाओं को हिंदी में अनुवाद करते थे। उर्दू में वे धनपत राय या नवाब राय के नाम से लिखा करते थे। यहाँ हम 'प्रेमचंद' के प्रमुख उपन्यासों के संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

1. **सेवासदन (1918):** यह उपन्यास पहले उर्दू में 'बाजार-ए-हुस्न' नाम से प्रकाशित हुआ था। 'सेवासदन' उपन्यास के महत्व को रेखांकित करते हुए नगेन्द्र लिखते हैं- ''सेवासदन' का प्रकाशन न केवल प्रेमचंद (1880-1936) के साहित्यिक जीवन की, वरन् हिंदी-उपन्यास की भी एक महत्वपूर्ण घटना थी।'' सांप्रदायिक समस्या, अंतर्जातीय विवाह के सवाल, मध्यवर्गीय कुंठा आदि इस उपन्यास का मूल विषय है। 'सेवासदन' प्रेमचंद का पहला उत्कृष्ट उपन्यास है। इससे पहले उपन्यास का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही था। जासूसी और तिलस्मी एवं ऐयारी उपन्यास लिखा जा रहा था। प्रेमचंद ने सर्वप्रथम उपन्यास को सामाजिक समस्याओं के साथ जोड़ा।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. प्रेमचंद का सामान्य परिचय दीजिए।

प्रश्न 2. प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

इस उपन्यास की रचना और प्रकाशन को लेकर कहा जाता है- ''इस उपन्यास की रचना तो सर्वप्रथम उर्दू में हुई थी, परन्तु इसका प्रकाशन हिन्दी में पहले हुआ था। दयानरायन निगम के नाम पत्रों के आधार पर मूल उर्दू-पाण्डुलिपि का लेखन-काल जनवरी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक न्याय की अभिव्यक्ति प्रथम अध्याय: प्रेमचन्द जीवन-परिचय एवं रचना-संसार 1917 से जनवरी 1918 तक ठहरता है। कुछ ही समय पश्चात् उसका हिन्दीकरण हुआ और सेवासदन को प्रेस में देने के लिए

प्रेमचन्द 11 जून, 1918 को कलकत्ता गये। पुस्तक का प्रकाशन 1919 के मध्य में किसी महीने में हुआ। उसकी पहली समालोचनाओं में पण्डित पद्मसिंह शर्मा और श्री रामदास गौड़ की लिखी हुई समालोचनाएँ हैं जो दोनों के हस्ताक्षर से 8 सितम्बर, 1919 को स्वदेश में निकली।''

रंगभूमि (1925): यह उपन्यास भी पहले उर्दू में लिखा गया, पर पाठकों के लिए हिंदी में छपकर आया। यह वृहत् उपन्यास दो भागों में विभाजित है। 'देश की पराधीनता', 'विधवा विवाह', 'अंतर्जातीय विवाह' आदि इस उपन्यास का मूल विषय हैं।

कायाकल्प (1926): यह उपन्यास एक विवादित उपन्यास है। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टियों से यह उपन्यास 'गोदान', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' आदि उपन्यासों की तरह सफल नहीं हो पाया। धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास आदि इस उपन्यास का मूल विषय हैं। इसके अतिरिक्त गौण रूप में बहुविवाह, नारी समस्या आदि विषयों का चिंत्रण भी हुआ है।

निर्मला (1927): यह एक समस्याप्रधान उपन्यास है। मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, दहेज-प्रथा, अनमेल विवाह आदि इस उपन्यास का मूल विषय हैं। उपन्यासकार ने इन समस्याओं से उत्पन्न दुष्परिणाम को भी रेखांकित किया है।

गबन (1931): 'गबन' उपन्यास का प्रकाशन 1931 ई. में सरस्वती प्रेस से हुआ था। 'गबन' एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में 'प्रेमचंद' जी ने मध्यवर्गीय जीवन की करुण दशा का चित्रण किया है। किस प्रकार एक मध्यवर्गीय परिवार दिखावे के लिए कुछ भी कर सकता, उसका एक सुंदर उदाहरण इस उपन्यास के माध्यम से मिल जाता है। इस उपन्यास में 'गांधीवाद' का प्रभाव कम परिलक्षित होता है। मध्यवर्गीय यथार्थ और उनकी समस्याओं के चित्रण इस उपन्यास में सफलतापूर्वक हुआ है।

कर्मभूमि (1932): इस उपन्यास का प्रकाशन 1932 ई. में हुआ। इस उपन्यास में भी 'प्रेमचंद' ने 'सांप्रदायिक समस्या', 'अंतर्जातीय विवाह', 'मध्यवर्ग और उच्चवर्ग में नारी की स्थिति', कहीं कहीं 'मध्यवर्गीय

कुंठाओं' का चित्रण, 'स्वतंत्रता की चाह' आदि तमाम समस्याओं का चित्रण किया है।

गोदान (1936)= सन् 1936 में गोदान का प्रकाशन हुआ। यह प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। 'किसानों की समस्या', 'अंतर्जातीय विवाह' 'पूंजीवाद' तथा ग्राम्य जीवन की तमाम समस्याएँ इस उपन्यास का मूल विषय है। 'गोदान' को 'ग्रामीण जीवन और कृषि-संस्कृति' का महाकाव्य कहा जाता है। 'गोदान' के बारे में लिखते हुए हंसराज रहबर कहते हैं- ''इस उपन्यास में प्रेमचन्द अपनी पुरानी मान्यताओं को छोड़कर एकदम बहुत आगे बढ आए हैं। अपने पहले उपन्यासों में वे जो समस्याएँ उठाते थे, उनका कोई न कोई सुधारवादी हल प्रस्तुत करते थे। कही उनके जमींदार और धनी पात्रों का हृदय परिवर्तन होता है और कही प्रेमाश्रम और सेवाश्रम खोले जाते हैं। लेकिन इस उपन्यास में शुद्ध यथार्थ रूप से जीवन कहानी आगे बढ़ती है।''

मंगल सूत्र: यह अधूरा उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से 'प्रेमचंद' जी ने समाज में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं पर असंतोष जाहिर किया है।

नाटक: 'प्रेमचंद' तीन नाटक हैं- 'संग्राम', 'प्रेम की वेदी' और 'कर्बला'। 'संग्राम' नाटक का विषय हैं- 'भ्रष्टाचार,' 'निर्धनता', 'किसानों की दयनीय स्थिति', 'रूढिवादीता' आदि। 'प्रेम की वेदी' नाटक का विषय- 'विवाह समस्या', 'धार्मिक समस्या', 'नारी की दयनीय स्थिति' आदि हैं। तथा 'कर्बला' एक ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक में 'कर्बला' युद्ध का वर्णन है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने निबंध साहित्य में भी अपना योगदान दिया। 'साहित्य का उद्देश्य', 'साहित्य और मनोविज्ञान', 'उपन्यास' आदि उनका महत्वपूर्ण निबंध है।



अपनी प्रगति जांचे

प्रश्न 3.प्रेमचंद के किन्ही दो नाटकों का नाम लिखिए।
प्रश्न 4.प्रेमचंद के किन्ही दो निबंधों का नाम लिखिए।
प्रश्न 5.प्रेमचंद का अधुरा उपन्यास का नाम क्या है?

6.4 प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय दृष्टि और सामाजिक चेतना

साहित्यकार जब किसी वस्तु को देखता है, तो वह केवल उसे बाह्य रूप से नहीं देखता, बल्कि उसका अनुभव करता है, उसमें जीता है और उसके साथ गहरा भावनात्मक संबंध स्थापित करता है। यह जुड़ाव उस वस्तु की आंतरिक सच्चाई को प्रकट करता है। साहित्यकार अपने जीवन-दृष्टिकोण और अनुभवों के आलोक में उस यथार्थ का विश्लेषण करता है और उसे कलात्मक रूप प्रदान करता है। इसी बिंदु पर रचना में संवेदना का प्रवेश होता है।

प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवीय दृष्टि

प्रेमचंद की रचनात्मक पहचान उनकी गहन मानवीय संवेदना के धरातल पर की जा सकती है। उनके लेखन में जीवन के कठोर यथार्थ से उपजी बहुआयामी पीड़ा, करुणा और सामाजिक चेतना का समन्वय मिलता है। उन्होंने निजी पीड़ा को आत्मकेंद्रित न रखकर उसे सामाजिक पीड़ा का रूप दिया और कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति किया। उनकी कहानी ''पूस की रात'' में हल्कू जैसे पात्र अपने खेत उजड़ने की पीड़ा को सहते हुए भी संतोष का अनुभव करते हैं, तो ''कफन'' में माधव और घीसू की संवेदनहीनता सामाजिक मूल्यहीनता की मार्मिक अभिव्यक्ति बन जाती है। वहीं ''सवा सेर गेहूं'' और ''गोदान'' में किसान जीवन की दारुण व्यथा चित्रित होती है, जहाँ कर्ज और शोषण से जूझता आम आदमी निरंतर संघर्ष करता है।

प्रेमचंद की संवेदना केवल आर्थिक विषमता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह दलितों और स्त्रियों की दशा तक व्यापक रूप में फैली हुई है। ''सद्गति'', ''ठाकुर का कुआं'', ''मंदिर'' और ''कर्मभूमि'' में अछूत पात्रों की पीड़ा, उनके साथ होने वाला सामाजिक भेदभाव और अमानवीयता अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रकट होती है। विधवाओं और पतित महिलाओं के प्रति भी प्रेमचंद की सहानुभूति स्पष्ट है। ''निर्मला'', ''सेवासदन'' और ''प्रतिज्ञा'' जैसे उपन्यासों में विधवाओं की पराश्रित, अपमानजनक स्थितियों का चित्रण कर उन्होंने समाज की कुरूपता को उजागर किया है। ''सेवासदन'' की सुमन और ''वैश्या'' की माधुरी जैसी पात्रों के माध्यम से उन्होंने वेश्यावृत्ति के पीछे की विवशता को करुणा के साथ प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद ने समाज के हर उस वर्ग को आवाज़ दी जो उपेक्षित, शोषित और वंचित था-किसान, मजदूर, दलित, स्त्री और गरीब। उनकी लेखनी में सहानुभूति मात्र भावुकता नहीं, बल्कि एक सशक्त सामाजिक दृष्टिकोण है जो व्यक्ति को मानव बनाती है। यही कारण है कि प्रेमचंद की रचनाएँ केवल साहित्य नहीं, बल्कि संवेदनात्मक समाजशास्त्र का दस्तावेज़ बन गई हैं। उनकी सहानुभूति-सम्पन्न दृष्टि उन्हें युगों तक प्रासंगिक बनाए रखती है।



महत्वपूर्ण बिंदु :

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने पहले उर्दू और फिर हिंदी में लेखन कर उपन्यास और कहानी को यथार्थ की नई दिशा दी। उनकी कहानियाँ और उपन्यास आम लोगों की जिंदगी से जुड़ी थीं-सादगीपूर्ण परंतु प्रभावशाली। प्रेमचंद ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न बनाकर सामाजिक जागरूकता और सुधार का माध्यम बना दिया। उनके पात्र आम जीवन से लिए गए, जो त्रुटिपूर्ण होकर भी निष्कपट थे। सोजे वतन (1908) और सेवासदन जैसे कृतियों ने उपन्यास को जन-जीवन से जोड़ा। इस युग में उपन्यासकारों ने स्वतंत्रता, समाज सुधार और मानवीय मूल्यों को साहित्य में स्थान दिया। प्रेमचंद के बाद जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा जैसे लेखक उभरे, परंतु प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को जो आधार दिया, वह युगांतरकारी था। उन्होंने हिंदी साहित्य को जनमानस से जोड़ा और उसे सामाजिक दायित्व का रूप दिया।

प्रेमचंद के साहित्य में निहित सामाजिक सन्दर्भः

प्रेमचंद का साहित्य उनके समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज़ है। वे उन रचनाकारों में से थे जिन्होंने अपने युग के यथार्थ को केवल देखा ही नहीं, बल्कि उसे गहराई से जिया और भोगा भी। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में अनुभव की ऊष्मा, यथार्थ की प्रामाणिकता और संवेदना की सजीवता विद्यमान है। वे केवल पर्यवेक्षक नहीं थे, बल्कि परिवेश के सक्रिय भागीदार भी थे। उनकी रचनाएँ युगबोध से अनुप्राणित हैं और समाज की गहन चेतना का वाहक बनती हैं ।

प्रेमचंद का युग राष्ट्रीय चेतना, समाज-सुधार और स्वाधीनता आंदोलन का काल था। उन्होंने अपने साहित्य में दहेज, अनमेल विवाह, विधवा की दुर्दशा, स्त्री-शिक्षा और परिवार के विघटन जैसी समस्याओं को गहन संवेदना के साथ उठाया। 'निर्मला', 'सेवासदन', 'गोदान' आदि रचनाओं में दहेज-प्रथा के अभिशाप और इसके सामाजिक दुष्परिणामों का चित्रण कर उन्होंने समाज को आत्मचिंतन के लिए बाध्य किया।

सामाजिक संरचना में परिवार का स्थान महत्वपूर्ण होता है। प्रेमचंद ने देखा कि औद्योगिकरण और आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से संयुक्त परिवार टूट रहे थे और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ उभर रही थीं। 'प्रेमाश्रम', 'बड़े घर की बेटी', 'गोदान' जैसे उपन्यासों में उन्होंने पारिवारिक विघटन और वैयक्तित्व स्वार्थों की प्रवृत्तियों को उकेरा है। प्रेमचंद का आर्थिक दृष्टिकोण भी अत्यंत यथार्थवादी था। उन्होंने किसानों, मज़दूरों और निम्नवर्ग की आर्थिक दुर्दशा को निकट से देखा और उसकी मार्मिक अभिव्यक्ति दी। 'गोदान', 'पूस की रात', 'कर्मभूमि', 'वरदान' जैसी कृतियाँ कृषक-जीवन की विषम स्थितियों और शोषण-चक्र को उजागर करती हैं। वे मानते थे कि किसान भूमि व्यवस्था और साहूकारी के दोहरे शोषण में जकड़ा हुआ है।

औद्योगिक विकास के साथ पूँजीवाद का वर्चस्व बढ़ा, जिससे समाज में आर्थिक विषमता और शोषण की प्रवृत्तियाँ प्रबल हुईं। 'रंगभूमि' का जॉन सेवक, 'गबन' का सेठ करोड़ीमल, 'गोदान' का चन्द्रप्रकाश खन्ना जैसे पात्र उस समय के पूँजीपतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रेमचंद ने पूँजीपति और श्रमिक के बीच के संघर्ष को 'डाकू का कैदी', 'गोदान' जैसी रचनाओं में सशक्त रूप में प्रस्तुत किया।

धार्मिक क्षेत्र में प्रेमचंद की दृष्टि प्रगतिशील थी। उन्होंने धर्म के नाम पर व्याप्त पाखंड, आडंबर और शोषण को उजागर किया। 'सेवासदन', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' में उन्होंने पंडा-पुरोहित वर्ग की कृत्रिम धार्मिकता, वेश्यावृत्ति और मंदिरों में व्याप्त भ्रष्टाचार की निंदा की। वे धर्म की मूल भावना को समझते थे और मानते थे कि सच्चा धर्म मानवता की सेवा में है। राजनीतिक चेतना के क्षेत्र में भी प्रेमचंद अत्यंत सजग थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और स्वतंत्रता संग्राम के विविध पहलुओं को साहित्य में स्थान दिया।

'लाल फीता', 'जुलूस', 'शराब की दुकान', 'माँ' आदि कहानियों में जन-जागरण, बलिदान और स्त्री-चेतना का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलनों को भी समझा और आवश्यकतानुसार सशस्त्र संघर्ष का समर्थन किया।

प्रेमचंद की रचनाएँ मात्र घटनाओं की प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं, बल्कि वे उस समय की गहराई से अनुभूत चेतना का संवेदनात्मक चित्रण हैं। उन्होंने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाया और यथार्थ का सजग चित्रण प्रस्तुत किया। वे समाज के केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय और जिम्मेदार लेखक थे, जिनकी दृष्टि ने समाज की जटिलताओं को समझा और अभिव्यक्त किया।

कह सकते है कि, प्रेमचंद का साहित्य समकालीन यथार्थ का प्रतिबिंब है। उन्होंने अपने युग की समस्याओं को न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति दी, बल्कि उनसे मुठभेड़ कर समाज के सामने एक नई चेतना का प्रस्ताव भी रखा। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह संवेदना, विचार और प्रतिबद्धता का अद्वितीय संगम है।

6.5 कर्मभूमि उपन्यास की कथावस्तु एवं समीक्षा

'कर्मभूमि उपन्यास की कथावस्तु' समरकांत का बेटा है 'अमरकांत', जो इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। 'अमरकांत' गाँधीवादी होने के कारण खद्दर पहनता है, चरखा चलाता है। पिता 'समरकांत' के साथ उसका संबंध अच्छा नहीं है।

'अमरकांत' की माँ बचपन में ही मर गई थी, इसलिए उनके पिताजी ने दूसरी शादी की और एक लड़की का जन्म हुई- नैना। दूसरी पत्नी के देहांत के बाद 'समरकांत' शादी नहीं करता है, पर समरकांत को शादी करा देते हैं।

पत्नी से प्रेम ना पाकर 'अमरकांत' धीरे-धीरे सकीना की ओर आकर्षित होता है। इस प्रकार पिता और पत्नी के साथ मतभेद बना रहता है और एक दिन परेशान होकर घर छोड़ कर चला जाता है एक 'चमार' गाँव में। उसके घर से जाने के बाद पत्नी पश्चाताप करती है और समाज सेवा में लग जाती है।

'अमरकांत' चमार गाँव में रहकर जन-सेवा का करता रहता है और किसानों का पक्ष लेकर आन्दोलन चलाता है, उसका दोस्त 'सलीम' जो आई.

सी. एस. अधिकारी है, अमरकांत को गिरफ्तार करता है। पर अंत में वह भी किसानों का पक्ष लेकर जेल चला जाता है।

उधर शहर में अछूतों के हक के लिए लड़ती हुई जेल चली जाती है। अंत में आंदोलन सफल साबित होता है।

समीक्षा:

इस उपन्यास के माध्यम से 'प्रेमचंद' ने पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, किसान समस्या, भ्रष्टाचार, शोषण आदि विविध समस्याओं का चित्रण किया है।

'अमरकांत', 'सलीम', शांतिकुमार आदि मध्यवर्गीय प्रतिनिधि पात्र हैं। इस उपन्यास का आंदोलन लगभग शहर तक ही सीमित है। आंदोलन कभी भी क्रांति का रूप धारण नहीं कर पाता है, उससे पहले ही समझौता हो जाता है। जन आंदोलन के लिए 'समझौता' एक अभिशाप है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'अमरकांत' गांधीवादी है और इस उपन्यास के अन्य पात्रों भी उसके पीछे-पीछे चलते हैं। यही कारण है कि ये पात्रों सभी समस्याओं का समाधान 'गांधीवाद' में ढूंढते हैं। अछूत के प्रति अन्याय के खिलाफ आंदोलन और आर्थिक शोषण का चित्रण यथार्थ के अधिक निकट है।



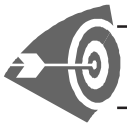
6.6 सारांश

'प्रेमचंद' ने सबसे पहले उपन्यास को सामाजिक समस्याओं जोड़ने का कार्य किया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यास मुख्यत: मनोरंजन के लिए लिखा जाता था। उदाहरण के लिए तिलस्मी और ऐयारी तथा जासूसी उपन्यासों को लिया जा सकता है।

उन्होंने समाज में व्याप्त हर एक समस्या को अपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रण किया और उन समस्याओं के समाधान के लिए भी रास्ता बताया।

'प्रेमचंद' का जीवन संघर्षमय रहा है। वे पहले उर्दू में लिखा करते थे। उनके अनुसार साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है। हम उनके साहित्य को पढ़ते हुए भी इस बात को अनुभव कर सकते हैं। साहित्य के बारे अपना विचार प्रकट करते हुए वे कहते हैं - ''साहित्य का उद्देश्य केवल महफिल

सजाना या और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं, – उसका दर्जा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चले वाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सचाई है।''



6.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: नटखट स्वभाव के प्रेमचंद का बचपन गाँव में ही बीता। प्रेमचंद अपने बचपन को याद करते हुए लिखते हैं– ''उनकी अम्मा तीन महीने के लिए अपने मायके या उनके ननिहाल गयी थीं और उन्होंने तीन महीने में एक मन गुड़ का सफाया कर दिया था। यही गुड़ के दिन थे। नाना बीमार थे, अम्मा को बुला भेजा था। अधिक जानने के लिए '**उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय**' के अंतर्गत ''**सामान्य परिचय**'' को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

प्रश्न 2 का उत्तर: 'प्रेमचंद' का हिंदी उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। यही कारण है कि उनको 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। 'प्रेमचंद' पहले उर्दू में लिखा करते थे। उनकी शिक्षा भी उर्दू से प्रारंभ हुई। अधिक जानने के लिए '**उपन्यासकार प्रेमचंद का परिचय**' के अंतर्गत ''**साहित्यिक परिचय**'' को पढ़ें।

प्रश्न 3 का उत्तर: प्रेमचंद के नाटकों का नाम संग्राम', 'प्रेम की वेदी' है।

प्रश्न 4 का उत्तर: प्रेमचंद के निबंध का नाम है–'साहित्य का उद्देश्य', 'साहित्य और मनोविज्ञान'।

प्रश्न 5 का उत्तर: प्रेमचंद का अधुरा उपन्यास का नाम मंगलसूत्र है।



6.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- प्रेमचंद,(1932). कर्मभूमि. बनारस: सरस्वती प्रेस।
- गुप्त, डॉ. सुरेश चन्द्र(सं). (1965). उपन्यासकार प्रेमचंद. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।
- गुप्त, डॉ. श्रीमती शीला. (1972). प्रेमचन्द और उनका साहित्य. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

- गुप्त, डॉ. रामदीन. (1961). प्रेमचन्द और गांधीवाद. पटना: हिंदी साहित्य संसार।
- गुर्टू, शचीरानी (सं). (1955). प्रेमचन्द और गोर्की. बम्बई: राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, डॉ. प्रेम नारायण. (1941) प्रेमचन्द और ग्राम समस्या. आगरा: रामप्रसाद एंड संस।
- कोहली, डॉ. नरेन्द्र.1966). प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धांत. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।
- शर्मा, डॉ. रामविलास. (1952). प्रेमचन्द और उनका युग. दिल्ली: मेंहरचन्द मुंशीराम।
- गुरु, डॉ. राजेश्वर(1961). प्रेमचंदएक अध्ययन. भोपाल: मध्य प्रदेशीय प्रकाशन समिति ।
- पाठक, जितेन्द्रनाथ(1954). कथाकार प्रेमचंद. बनारस: सरस्वती मंदिर।

6.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. प्रेमचंद के चार उपन्यास का नाम उल्लेख कीजिए।
2. प्रेमचंद के बचपन का नाम क्या था?
3. 'गोदान' का प्रकाशन वर्ष किया है?
4. माधव और घीसू किस कहानी के पात्र है?
5. सुमन और माधुरी किस उपन्यास के पात्र है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. प्रेमचंद का साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. 'कर्मभूमि' उपन्यास की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. 'कर्मभूमि' उपन्यास का संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।
4. 'कर्मभूमि' उपन्यास में निहित मानवीय दृष्टि पर प्रकाश डालिए।
5. 'कर्मभूमि' उपन्यास में निहित सामाजिक सन्दर्भ को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

******

इकाई-7 : कर्मभूमि (भाग- II)

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 कर्मभूमि उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य

7.4 कर्मभूमि उपन्यास में चित्रिन भारतीय मध्यवर्ग

7.5 सारांश

7.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

7.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

7.7 अभ्यास प्रश्न

7.1 उद्देश्य

उइस इकाई के अध्ययन से आप

- 'कर्मभूमि' उपन्यास में निहित सामाजिक समस्या को जान पाएंगे।
- 'कर्मभूमि' उपन्यास की मूल समस्या से अवगत होंगे।
- उपन्यास में निहित मूल संवेदना से जान सकेंगे।
- उपन्यास में चित्रित स्त्री समस्याओं से अवगत होंगे।
- इस उपन्यास के उद्देश्य के बारे में जान पाएंगे।

7.2 प्रस्तावना

सन् 1932 में प्रकाशित प्रेमचन्द का उपन्यास कर्मभूमि उनके साहित्यिक योगदानों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह कृति न केवल एक राजनीतिक उपन्यास के रूप में जानी जाती है, बल्कि इसमें समाज की जटिलताओं, वर्ग भेद, सामाजिक कुरीतियों तथा उस समय की शिक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। लेखक ने तत्कालीन राजनीतिक वातावरण के साथ-साथ सामाजिक विसंगतियों को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की है। यद्यपि यह कृति राजनीति पर केंद्रित प्रतीत होती है, किन्तु इसके माध्यम से प्रेमचन्द ने समाज सुधार और मानवीय मूल्यों की ओर भी

पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। इस उपन्यास में गांधीवादी विचारधारा की स्पष्ट छाया दिखाई देती है। लेखक द्वारा रचित सत्याग्रह की योजना इसी दर्शन का प्रभाव है। प्रेमचन्द ने इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों की मानसिकता, परंपराएं और जीवन मूल्यों को बारीकी से चित्रित किया है। इसमें राष्ट्रभक्ति, व्यक्तिगत संघर्ष, राष्ट्रीय आंदोलन, छुआछूत, परिवारिक कलह और सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों को प्रमुखता दी गई है।

'कर्मभूमि' का नायक अमरकान्त एक ऐसा युवक है जो अपने छात्र जीवन से ही देशभक्ति, समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम की भावना से प्रेरित रहता है। उपन्यास की पृष्ठभूमि व्यापक है, जिसमें प्रेमचन्द ने न केवल समाजिक ढांचे को उकेरा है, बल्कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सख्त नीतियों पर भी तीव्र आलोचना की है।

प्रेमचन्द के अनुसार, हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में फीस वसूली की प्रक्रिया इतनी कठोर है कि उसकी तुलना लगान वसूली से भी अधिक निर्मम रूप में की जा सकती है। छात्रों को एक निश्चित तिथि तक शुल्क भरना अनिवार्य होता है -उस दिन फीस न देने पर या तो नाम काट दिया जाता है या फिर जुर्माना लगाया जाता है। कभी-कभी तो फीस न चुकाने पर दुगना शुल्क देना पड़ता है। उदाहरणस्वरूप, काशी का क्रींस कॉलेज इस प्रकार के नियमों के लिए कुख्यात था, जहाँ फीस की देरी पर छात्रों को दोहरी राशि देनी होती थी या फिर नामांकन से हाथ धोना पड़ता था।

प्रेमचन्द ने इस व्यवस्था की कठोरता पर प्रश्न उठाते हुए कहा है कि यह प्रणाली सीधे तौर पर आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को शिक्षा से वंचित करने की साजिश प्रतीत होती है। विद्यालयों में वही हृदयहीन प्रशासनिक रवैया अपनाया जाता है, जो अन्य सरकारी विभागों में देखने को मिलता है। कोई सहानुभूति नहीं, कोई राहत नहीं-चाहे कर्ज लेकर, घर का सामान बेचकर या गहने गिरवी रखकर पैसे लाओ, मगर फीस जरूर दो। अन्य क्षेत्रों में भले कुछ रियायत मिल जाए, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में मानवीयता का कोई स्थान नहीं है।

शिक्षा संस्थानों में छात्र को देर से आने पर, पाठ याद न करने पर, पुस्तकें न खरीद पाने पर, हर स्थिति में जुर्माना भुगतना पड़ता है। ऐसे में यह कहना

अनुचित न होगा कि हमारे विद्यालय अब 'शिक्षालय' नहीं, बल्कि 'जुर्मानालय' बन चुके हैं। यही है उस पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का कुरूप आदर्श, जिसकी अक्सर प्रशंसा की जाती है। यदि ऐसी शिक्षा प्रणाली से निकलने वाले विद्यार्थी धन के पीछे अंधी दौड़ में शामिल हो जाएं, नैतिकता की उपेक्षा करें और गरीबों का शोषण करें, तो यह कोई आचर्य की बात नहीं। इस प्रकार, प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास के माध्यम से उस सामाजिक कठोरता और अमानवीयता की आलोचना की है, जो शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र को भी व्यापारिक दृष्टिकोण से संचालित करती है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि जब समाज से करुणा और संवेदना समाप्त हो जाती है, तो शिक्षा व्यवस्था भी एक निर्मम ढांचे में बदल जाती है।

'प्रेमचंद' इक्कीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। 'प्रेमचंद' का जन्म उस समय हुआ जब समाज में जाति-प्रथा, धार्मिक कट्टरता, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह आदि नाना प्रकार की विसंगतियाँ विद्यमान थीं। भारत में महात्मा गांधी का आगमन भी एक महत्वपूर्ण घटना थी। 'प्रेमचंद' गांधी जी को आदर्श मानते थे और यही कारण है कि उनकी विचारधारा को उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रकट किया। 'प्रेमचंद' की लगभग सभी रचनाओं में 'गांधीवाद' का संकेत मिलता है।

पहले ही हम संकेत कर चुके हैं कि प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों का लक्ष्य मनोरंजन ही था। 'प्रेमचंद' ने उपन्यास में 'मनोरंजन' की जगह सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया। 'प्रेमचंद' साहित्य के बारे में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं- ''जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शान्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलवाने का अधिकारी नहीं है।'' 'प्रेमचंद' जी ने इन बातों को अपनी सभी रचनाओं में लागू किया है और 'कर्मभूमि' भी इससे अलग नहीं है। प्रस्तुत इकाई में हम 'कर्मभूमि' उपन्यास की मूल समस्या और इस उपन्यास के उद्देश्य पर विचार करेंगे।

7.3 कर्मभूमि उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य

'अंग्रेज' भारत आया था व्यापार करने के लिए, पर धीरे-धीरे उन्होंने भारत को अपने कब्जे में ले लिया । सन 1916 ई. में 'महात्मा गांधी' ने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन छेड़ा। अंग्रेजों के अत्याचार और शोषण के खिलाफ मोर्चा

संभाला। लोग धीरे-धीरे उनके प्रति आकर्षित होते गए। 'प्रेमचंद' भी इनमें से एक था।

अन्य उपन्यास की तरह 'कर्मभूमि' भी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में 'महात्मा गांधी' के नेतृत्व में चलनेवाले राष्ट्रीय आंदोलन, आर्थिक मंदी आदि का सुंदर चित्रण प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त धार्मिक भेदभाव, जातिगत भेदभाव आदि मुख्य समस्याओं को भी प्रेमचंद ने इस उपन्यास में स्थान दिया है। रामविलास शर्मा 'कर्मभूमि' उपन्यास की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं- ''यह उपन्यास एक सैलाब की तरह तमाम जनता को अपने अंदर समेट लेता है। विद्यार्थी, किसान, अछूत, स्त्रियों, व्यापारी, शिक्षक, मज़दूर-सभी इस प्रवाह के बढ़े चलते हैं। 'प्रेमाश्रम' के किसान अब अकेले नही है। उनकी लड़ाई के साथ-साथ तमाम जनता अपनी आजादी की लड़ाई में आगे बढ़ रही है। आंदोलन में जनता के नए नेता पैदा होते है, लाठी चार्ज होते है, गोलियों चलती है, लेकिन लोग अपनी सफें मजबूत करते हुए आगे बढ़ते हैं।''



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 1. 'कर्मभूमि' उपन्यास का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 2. कर्मभूमि उपन्यास में किस आंदोलन का उल्लेख किया गया है?

प्रश्न 3. प्रेमचंद ने 'साहित्य' के संबंध में क्या कहा था?

इस उपन्यास में जातिगत भेदभाव जैसी सामाजिक विसंगतियों को भी उपन्यासकार ने स्थान दिया है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'अमरकांत' घर छोड़कर एक 'चमार' गाँव में जाकर रहने लगता है और उस समाज में व्याप्त तमाम विसंगतियों को दूर करने का प्रयास करता है।

इस उपन्यास में आर्थिक विसंगतियों का चित्रण भी हुआ है। देश की प्रगति के लिए आर्थिक स्थिति मजबूत होना जरूरी है और भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता है। अंग्रेजी शासन में भारत की आर्थिक स्थिति गंभीर थी और आर्थिक दृष्टि से भारत का शोषण हो रहा था। ''भारत विदेशियों के लिए सदा ही आकर्षण का कारण रहा। 15 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में यूरोप के अनेक धर्म प्रचारकों ने भारत में आना प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1498

ई. में सर्वप्रथम पुर्तगाल निवासी वास्कोडिगामा कालीकट में उतरा। इसके पश्चात् डच, डेन फ्रांसीसी तथा अंग्रेज इत्यादि यूरोप निवासियों ने भारत में आना प्रारम्भ कर दिया। यह जातियाँ हमारे देश में मुख्यतया व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति ही



महत्वपूर्ण बिंदुः

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज की जटिल समस्याओं को उजागर करता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में गरीबी, शोषण, जातीय भेदभाव, बाल विवाह, स्त्री-वंचना और पराधीनता जैसे विषयों को गहरी संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया। उनके पात्र शोषित, दलित और वंचित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी पीड़ा और संघर्ष को उन्होंने सजीव रूप में चित्रित किया। प्रेमचंद का लेखन यथार्थ और आदर्श का समन्वय है, जिसमें मानवीय मूल्यों-जैसे सत्य, सेवा, करुणा और न्याय-का स्पष्ट प्रभाव है। उन्होंने नारी सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को भी साहित्य में स्थान दिया। उनका उद्देश्य समाज में बदलाव लाना था, जिससे उनका साहित्य केवल दर्पण नहीं, दिशा देने वाला दीपक भी बन गया।

के लिए आयी थीं, किन्तु कालान्तर में पारस्परिक संघर्ष के कारण एक-एक करके इनका पतन होता गया और अन्त में अंग्रेजों ने भारत मे अपने साम्राज्य की स्थापना कर ली। अंग्रजों से पूर्व अन्य शासकों ने भारतीय अर्थ-व्यवस्था में कोई विशेष परिवर्तन उत्पन्न होने नहीं दिया और देश का सामान्य आर्थिक जीवन प्रायः हस्तक्षेप से मुक्त (Undisturbed) ही रहा। परन्तु भारत में अंग्रेजी शासन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उस काल में अनेक ऐसे कार्य हुए जिनका देश की अर्थ-व्यवस्था पर गहरा असर पड़ा। उनकी नीतियों ने भारत की प्राचीन अर्थ व्यवस्था की काया ही पलट दी।''

'प्रेमचंद' ने प्रायः सभी रचनाओं में जातिगत और धार्मिक भेदभाव के अतिरिक्त किसान और मजदूर की आर्थिक स्थितियों पर लिखा। 'प्रेमचंद' स्वयं एक किसान परिवार में जन्मे थे। आर्थिक तंगी वे देख चुके थे। किसान और मजदूरों पर होने वाले अन्याय-अत्याचार से वे परिचित थे। ''प्रेमचंद का निर्धनता, गरीबी और अभावों से जन्म का रिस्ता रहा है। इस दयनीय स्थिति

में व्यक्ति किस तरह समझौता करता टूटता घिसटता है, इसे प्रेमचंद स्वयं जानते थे, अत: प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में इस अर्थाभाव के अनेक पहलुओं को प्रदर्शित किया है। कर्ज और गुलामी, ब्याज की सूद और महाजन की जी हुजूरी का प्रमाणित दस्तावेज उनकी रचनाएँ है।''

'प्रेमचंद' अपनी रचनाओं के माध्यम से जिन जिन समस्याओं से हमें परिचित कराते हैं, उन समस्याओं में 'आर्थिक समस्या' भी विद्यमान रहती है। उनके उपन्यासों को पढ़ते हुए हम विभिन्न प्रकार के आर्थिक विषमता से परिचय प्राप्त करते हैं। 'कर्मभूमि' उपन्यास में आर्थिक मंदी के कारण उत्पन्न संकट से किसान किस प्रकार प्रभावित थे, उसका वर्णन यथार्थ रूप में किया गया है। किसान की दयनीय स्थिति से परिचय कराते हुए उपन्यासकार 'कर्मभूमि' उपन्यास में लिखते हैं- ''इस साल अनायास ही जिंसों का भाव गिर गया। इतना गिर गया। जितना चालीस साल पहले था। जब भाव तेज था, किसान अपनी उपज बेच बाच कर लगान दे देता था, लेकिन जब दो और तीन की जिन्स एक में बिके तो किसान क्या करे। कहाँ से लगान दे, कहाँ से कर्ज चुकायें। विकट समस्या आ खड़ी हुई और यह समस्या आ खड़ी हुई, और यह दशा कुछ ही इलाके की न थी। सारे प्रान्त, सारे देश, यहाँ तक कि सारे संसार में यही मंदी थी। चार सेर गुड़ कोई दस सेर में भी नहीं पूँछता.....किसानों ने एक-एक दाना बेंच डाला भूसें का एक तिनका भी न रखा; लेकिन यह सब कुछ करने पर भी चौथाई लगान से ज्यादा न अदा कर सके।''

इसी कारण हर दिशाओं में किसान असंतोष दिखाई देने लगे। परिणामस्वरूप किसान अपने प्रति हो रहे शोषण के खिलाफ आंदोलन करने लगे। एक सजग साहित्यकार की तरह 'प्रेमचंद' भी इन आंदोलन से अनभिज्ञ नहीं थे। 'कर्मभूमि' उपन्यास में उन्होंने इन आंदोलनों का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने जमींदारों द्वारा किसानों पर हो रहे अत्याचार, मठादिशों की विलासितापूर्ण जीवन तथा धन लोभी साहूकारों पर जमकर लिखा। लगान के नाम पर किस प्रकार किसानों पर अत्याचार होता है, उसका एक उदाहरण भोला के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है- ''हमारे ऊपर जो लगान बँधा हुआ है। अबकी अगर बैल-बछिया बेचकर दे भी दे तो आगे क्या करेगें.....मै गंगा माता की कसम खाकर कहता हूँ कि मेरे घर में छटॉक भर भी अन्न नहीं है, और जब मेरा यह हाल

है, तो और सभी का यही हाल होगा। उधर महंत जी के यहाँ वही बहार है। अभी परसों एक हजार साधुओं को आम की पंगत दी गयी.....आज सुनते हैं कि मलाई की पंगत है। हम भूखों मरते हैं, वहाँ मलाई उड़ती है। उस पर हमारा रक्त चूसा जा रहा है।'' किसानों के पास लगान देने की क्षमता नहीं बचता है, फिर लगान के लिए उनको मजबूर किया जाता है। इस भयानक समस्या का चित्रण करते हुए 'प्रेमचंद' लिखते हैं- ''कितना अन्याय है कि जो बेचारे रोटियों को मुहताज हों, जिनके पास तन ढकने को चीथड़े हो, जो बीमारी में दवा भी न कर सकते हो, जिनके घरों मे दीपक भी न जलते हों, उनसे पूरा लगान वसूल किया जाय। जिनके लड़के पाँच छः बरसे की उम्र से ही मेहनत मजूरी करने लगें, जो ईंधन के लिए हार में गोबर चुनते फिरें, उनसे पूरा लगान वसूल करना मानों उनके मुँह से रोटी का टुकड़ा छीन लेना है, उनकी रक्तहीन देह से खून चूसना है।''

'कर्मभूमि' उपन्यास के दो पात्रों क्रमशः अमरकांत और आत्मानंद लगान के खिलाफ आंदोलन चलाते हैं, पर दोनों के विचारधारा में काफी अंतर है। आत्मानंद क्रांति के पक्ष में है, जबकि अमरकांत पूर्णतया एक गांधीवादी पात्र है। लगान के खिलाफ किसानों से बातचीत के दौरान वह कहता है-''ठहरो जिस रास्तें पर तुम जा रहे हो, वह उद्धार का रास्ता नहीं है- सर्वनाश का रास्ता है। हम घर को जलाना नहीं बनाना चाहते हैं। हमें उस घर में रहना है। उसी में जीना है। यह विपत्ति कुछ हमारे ही ऊपर नहीं पड़ी है। सारे देश में यही हाहाकार मचा हुआ है। हमारे नेता इस प्रश्न को हल करने की चेष्टा कर रहे हैं। उन्हीं के साथ हमे भी चलना है।''

अमरकांत हिंसा नहीं चाहता है, इसलिए किसानों को अहिंसा का मार्ग अपनाने का सलाह देता है और जमींदार से मिलने को कहता है। पर इसका असर जमींदार पर दिखाई नहीं देता परिणामस्वरूप अमरकांत लगान बंदी का निर्णय लेता है और जब आंदोलन सरकार किसान संघर्ष का रूप ले लेता है, तब अमरकांत को गिरफ्तार किया जाता है। ''पुलिस ने उस पहाड़ी इलाके का घेरा डाल रखा था। सिपाही और सवार चौबिसों घण्टे घूमते रहते थें। पॉच आदमियों से ज्यादा एक जगह जमा न हो सकते थे। शाम को आठ बजे के बाद कोई घर में मेहमान को ठहराने की भी मनाही थी। फौजी कानून जारी

कर दिया गया था। कितने ही घर जला दिये गए थे। और उनके रहने वाले टबूड़ो की भाँति वृक्षों के नीचे बाल बच्चे को लिए पढ़े हुए थे।''

इस आंदोलन से कोई नतीजा नहीं निकलता और समस्त नेताओं को गिरफ्तार कर लिए जाते हैं। यह आंदोलन असफल रहे, पर इससे किसानों में जागृति फैली।

'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने 'पूंजीवाद' का भी विरोध किया है। पूँजीवादी मानसिकता के कारण गरोबों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया है। 'कर्मभूमि' में इस पूँजीवादी मानसिकता को स्पष्ट करते हुए 'प्रेमचंद' लिखते हैं- ''हमारे कालेजों और स्कूलों में जिस तत्परता से फीस वसूल की जाती है, शायद माल गुजारी भी उतनी सख्ती से वसूल नहीं की जाती। बड़े कठोर नियम हैं। ऐसे कठोर नियमों का उद्देश्य इसके सिवा और क्या हो सकता है कि गरीबों के लड़के स्कूल छोड़कर भाग जाएँ। वही हृदयहीन दफ्तरी शासन जो अन्य विभागों में है, हमारे शिक्षालयों में भी हैं। वह किसी के साथ रियायत नहीं करता। हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने नहीं दिया जाता। वहाँ स्थायी रूप से मार्शल लॉ का व्यवहार होता है। कचहरियों में पैसे का राज है, यहाँ उससे कहीं कठोर कहीं निर्दय। देर से आइये तो जुर्माना, किताबें न खरीद सकें तो जुर्माना, कोई अपराध हो जाये तो जुर्माना शिक्षालय क्या है जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देने वाले, पैसे के लिए गरीबों का गला घोंटने वाले पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेंच देने वाले छात्र निकलते हैं तो आश्चर्य क्या है।'' इस समस्या का हल आज भी नहीं है, बल्कि यह समस्या आज और अधिक देखने को मिल रहा है। व्यक्तिगत खण्ड के स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों का भरमार हैं। और माता-पिता का रूझान व्यक्तिगत खण्ड के शिक्षालयों के प्रति ज्यादा है। भारत पूँजीवाद के चंगुल में फंस गया है।

हिंदी साहित्य में 'प्रेमचंद' के माध्यम से एक नया अध्याय का शुरुआत होता है। उन्होंने साहित्य को मनोरंजन से हटाकर जनता की समस्याओं से जोड़ा और तत्कालीन प्रमुख समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान देकर उन समस्याओं की समाधान के लिए प्रयास किया और पाठकों को सजग किया।

'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से उन्होंने जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव, किसानों के प्रति अन्याय, पूँजीवाद आदि तमाम ज्वलंत समस्याओं को स्थान देकर पाठकों को सचेत किया और इन समस्याओं के समाधान का मार्ग भी बतलाया।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4. कर्मभूमि उपन्यास का नायक कौन है?

प्रश्न 5. प्रेमचंद किस आदर्श से प्रभावित थे?

7.4 कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित भारतीय मध्यवर्ग

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सामाजिक विषयों को विशेष महत्व इस कारण दिया क्योंकि वे साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण मानते थे। वे अपने समय की सामाजिक विकृतियों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों से अत्यंत चिंतित थे और उन्हें जड़ से समाप्त करना आवश्यक समझते थे। उस समय भारतीय समाज पश्चिमी विचारधारा के प्रभाव में बदलाव की ओर बढ़ रहा था और शिक्षित वर्ग इन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूक हो रहा था। प्रेमचंद ने इसी सामाजिक जागरण को अपने साहित्य के माध्यम से आगे बढ़ाया । देश की संस्कृति की रक्षा और उसके पुनरुत्थान के लिए जिस प्रकार अनेक समाज सुधारक कार्य कर रहे थे, उसी दिशा में प्रेमचंद ने अपनी लेखनी से योगदान दिया। वे मानते थे कि संस्कृति किसी राष्ट्र की आत्मा होती है, और यदि समाज अंधविश्वास, शोषण व रूढ़िवादी में जकड़ा रहेगा तो उसकी आत्मा कमजोर हो जाएगी। इसलिए प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज की आँखें खोलने का प्रयास किया और उसमें सुधार की चेतना जगाने का कार्य किया।

प्रेमचंद के उपन्यास उस समय की सामाजिक संरचना, जीवन शैली, आचार-विचार, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनका उद्देश्य केवल साहित्य रचना नहीं था, बल्कि समाज में व्याप्त असमानता, निर्धनता, उत्पीड़न और शोषण को सामने लाकर सुधार की दिशा दिखाना था। वे मानते थे कि जब तक भारतीय समाज सामंती और पूंजीवादी शोषण से मुक्त नहीं होगा, तब तक जनता का वास्तविक कल्याण संभव नहीं

है। उनके प्रसिद्ध पात्र-जैसे होरी (गोदान) और सूरदास (रंगभूमि)-वर्गहीन समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ सभी को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त हो। प्रेमचंद इस आदर्श की प्राप्ति को ही भारतीय समाज के विकास का मार्ग मानते थे।

प्रेमचंद स्वयं कहते हैं -''साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है।'' इसी विचार को केंद्र में रखते हुए उन्होंने साहित्य को समाज की तस्वीर बनाने का माध्यम बनाया। आर्यसमाज के सामाजिक सुधार आंदोलनों और महात्मा गांधी के राजनीतिक आदर्शों से प्रेरित होकर प्रेमचंद ने सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध अपने उपन्यासों में तीव्र स्वर में आवाज़ उठाई। उन्होंने नारी उत्पीड़न, जातिवादी भेदभाव, धार्मिक आडंबर, किसान-मजदूरों की दयनीय स्थिति, पूंजीपतियों की स्वेच्छाचारिता और सरकारी तंत्र की अन्यायपूर्ण प्रवृत्तियों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया। उनकी लेखनी ने जन आंदोलन को विचारधारा दी और स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

प्रेमचंद का साहित्य केवल कथा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का दस्तावेज़ है। उनके उपन्यासों में उस युग की सामाजिक-सांस्कृतिक हलचलों का विस्तृत प्रतिबिंब दिखाई देता है। यदि भविष्य में उस काल की ऐतिहासिक सामग्री विलुप्त हो जाए, तब भी प्रेमचंद के साहित्य के माध्यम से उस युग की सामाजिक चेतना को पुनः समझा जा सकता है।

प्रेमचंद स्वयं स्वीकार करते हैं कि जब चारों ओर दुःख, दरिद्रता और पीड़ा का वातावरण हो, तब एक संवेदनशील रचनाकार उस पीड़ा से अछूता नहीं रह सकता। वह समाज की पीड़ा को महसूस करता है और उसे अभिव्यक्ति देता है। यही संवेदनशीलता साहित्य की आत्मा होती है।

डॉ. नगेन्द्र का यह कथन सारगर्भित है-''गांधी युग के आरंभिक तीन चरणों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांप्रदायिक जीवन के जितने व्यापक और सजीव चित्र प्रेमचंद के साहित्य में मिलते हैं, वैसा किसी अन्य भारतीय साहित्यकार में दुर्लभ है।'' वास्तव में, जब कभी उत्तर भारत के गांधी युगीन सांस्कृतिक इतिहास का लेखन किया जाएगा, तो प्रेमचंद के उपन्यास उसकी सबसे प्रामाणिक और व्यापक सामग्री के रूप में सामने आएंगे। प्रेमचन्द

द्वारा रचित 'कर्मभूमि' एक ऐसा प्रभावशाली उपन्यास है, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौर में भारतीय मध्यवर्ग की राजनीतिक सजगता, सामाजिक भूमिका और आर्थिक दृष्टिकोण को अत्यंत सजीव रूप में चित्रित करता है। यह उपन्यास न केवल राजनीतिक आंदोलनों की गाथा है, बल्कि इसमें उस समय के मध्यवर्ग के धर्म, समाज और आर्थिक स्थिति की सूक्ष्म अभिव्यक्ति भी मौजूद है।

डॉ. मंजुलता सिंह के अनुसार, 'कर्मभूमि' एक प्रकार से स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों का दस्तावेज़ है। प्रेमचन्द ने इस रचना में राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं को केवल पृष्ठभूमि नहीं बनाया, बल्कि उन्हें उपन्यास की गति और दिशा देने का कार्य भी किया है। कथा की शुरुआत एक मध्यवर्गीय परिवार, लाला समरकान्त के घर से होती है। लाला समरकान्त एक पारंपरिक महाजन हैं जो धन संग्रह के लिए नैतिक-अनैतिक सभी उपायों का सहारा लेते हैं। उनके पुत्र अमरकान्त, आरंभ से ही इस शोषणकारी प्रवृत्ति का विरोध करते हैं, और यही विरोध कालांतर में उन्हें एक सामाजिक सुधारक के रूप में स्थापित करता है।

इस उपन्यास की कथा राष्ट्रीय संघर्ष, सामाजिक टकराव और विचारधारात्मक विरोधों के साथ आगे बढ़ती है। डॉ. सिंह का मानना है कि 'कर्मभूमि' के पात्रों को सामाजिक वर्गों के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है शोषक, शोषित और सुधारक। सुधारक वर्ग ही उस मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो व्यवस्था में व्याप्त अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है। इस वर्ग में अमरकान्त, सुखदा और शान्तिकुमार जैसे चरित्र शामिल हैं, जो अपने विचारों और कर्मों से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में कदम उठाते हैं। इनके साथ-साथ मुन्नी, रेणुका, सलीम, नैना जैसे अन्य पात्र भी सामाजिक जागरूकता और सेवा-भावना के प्रतीक बनकर सामने आते हैं।

'कर्मभूमि' यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय मध्यवर्ग किस प्रकार राजनीतिक रूप से जागरूक था और उसने किस तरह सक्रियता से भाग लिया। गांधीवादी सिद्धांतों और अहिंसा की नीति को अपनाकर यह वर्ग देश की आज़ादी के लिए निरंतर प्रयासरत रहा। अमरकान्त का यह विचार- ''मैं नजात उसे कहता हूँ कि इन्सान में इन्सानियत आ जाए...'' गांधीवादी सोच का प्रतिनिधित्व करता है और यह दर्शाता है कि वह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं,

बल्कि मानवीय मूल्य आधारित परिवर्तन का पक्षधर है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने नारी चेतना को भी विशेष स्थान दिया है। पुरुषों की अपेक्षा नारी पात्रों में अधिक राजनीतिक और सामाजिक सजगता दिखाई गई है। सुखदा, नैना, कुन्ती और सकीना जैसी महिलाएँ सिर्फ घरेलू सीमाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि किसानों और मज़दूरों के आंदोलनों में नेतृत्व करती हैं। सुखदा का यह कथन– ''हमें न्याय की लड़ाई लड़नी है, न्याय हमारी मदद करेगा...'' –उसकी आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

केवल राजनीतिक नहीं, सामाजिक समस्याओं की ओर भी प्रेमचन्द की दृष्टि सजग रही है। 'कर्मभूमि' में अछूतों की स्थिति, अंतरजातीय प्रेम–विवाह, शिक्षा की आवश्यकता, आर्थिक बदहाली और धार्मिक पाखंड जैसे विषयों को प्रभावी ढंग से उकेरा गया है। धर्म के प्रति भी मध्यवर्ग के दृष्टिकोण को लेखक ने क्रांतिकारी विचारधारा के साथ प्रस्तुत किया है, जिसमें परंपराओं की आलोचना और सुधार की प्रवृत्ति स्पष्ट झलकती है। 'कर्मभूमि' भारतीय मध्यवर्ग की सामाजिक चेतना, राजनीतिक भागीदारी और आर्थिक जटिलताओं का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। प्रेमचन्द की लेखनी न केवल तत्कालीन परिस्थितियों का विश्लेषण करती है, बल्कि सामाजिक नवजागरण की दिशा में एक स्पष्ट मार्गदर्शन भी देती है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय समाज के भीतर परिवर्तन की उस चेतना का दस्तावेज़ है, जो संघर्ष, सेवा और आदर्शों के बल पर एक नई सामाजिक संरचना की नींव रखता है।



7.5 सारांश

प्रेमचंद के उपन्यासों का विषय व्यापक है। वे आम जनता के लेखक है। उनकी रचनाओं का मूल विषय–धार्मिक और जातिगत भेदभाव, किसान और मजदूर की समस्याएँ, सामाजिक कुरीतियाँ, आर्थिक विषमता, पूंजीवाद का दुष्परिणाम, अंधविश्वास, स्त्रियों की सामाजिक जागृति, भ्रष्टाचार आदि हैं।

'कर्मभूमि' उपन्यास में भी उपन्यासकार ने इन समस्याओं को प्रमुखता के साथ उठाया। 'प्रेमचंद' इन समस्याओं का समाधान 'गांधीवाद' में पाते हैं। उनके प्रमुख पात्र गांधीवादी हैं। उदाहरण के लिए 'अमरकांत' को लिया जा सकता है, वह हर एक समस्या का समाधान 'गांधीवाद' में ढूंढते हैं। चाहे किसानों की

हक की लड़ाई हो, चाहे स्वतंत्रता संग्राम हो।

7.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न संख्या 1. का उत्तर: अन्य उपन्यास की तरह 'कर्मभूमि' भी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में 'महात्मा गांधी' के नेतृत्व में चलनेवाले राष्ट्रीय आंदोलन, आर्थिक मंदी आदि का सुंदर चित्रण प्रस्तुत है। अधिक जानने के लिए पढ़े ''कर्मभूमि उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य''।

प्रश्न संख्या 2. का उत्तर: महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलनेवाला राष्ट्रीय आन्दोलन।

प्रश्न संख्या 3.का उत्तर: पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न संख्या 4. का उत्तर: कर्मभूमि उपन्यास का नायक अमरकांत है।

प्रश्न संख्या 5. का उत्तर: प्रेमचंद गांधीवादी विचार से प्रभावित थे।



7.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- प्रेमचंद,(1932). कर्मभूमि. बनारस: सरस्वती प्रेस।
- गुप्त, डॉ. सुरेश चन्द्र(सं). (1965). उपन्यासकार प्रेमचंद. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।
- गुप्त, डॉ. श्रीमती शीला. (1972). प्रेमचन्द और उनका साहित्य. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- गुप्त, डॉ. रामदीन. (1961). प्रेमचन्द और गांधीवाद. पटना: हिंदी साहित्य संसार।
- गुर्टू, शचीरानी (सं).(1955). प्रेमचन्द और गोर्की. बम्बई: राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, डॉ. प्रेम नारायण. (1941) प्रेमचन्द और ग्राम समस्या. आगरा: रामप्रसाद एंड संस।
- कोहली, डॉ. नरेन्द्र. (1966). प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धांत. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।

- शर्मा, डॉ. रामविलास. (1952). प्रेमचन्द और उनका युग. दिल्ली: मेंहरचन्द मुंशीराम।
- गुरु, डॉ. राजेश्वर(1961). प्रेमचंद: एक अध्ययन. भोपाल: मध्य प्रदेशीय प्रकाशन समिति ।
- पाठक, जितेन्द्रनाथ(1954). कथाकार प्रेमचंद. बनारस: सरस्वती मंदिर।



7.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. कर्मभूमि उपन्यास का मूल संवेदना क्या है?
2. कर्मभूमि उपन्यास के किन्हीं चार पात्रों का नाम उल्लेख कीजिए।
3. उपन्यास का पात्र अमरकांत किस विचारधारा का समर्थन करता है?
4. डॉ. मंजुलता सिंह ने 'कर्मभूमि' उपन्यास के संबंध में क्या कहां था?
5. कर्मभूमि उपन्यास का पात्र लाला समरकांत का व्यक्तित्व कैसा था?

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. कर्मभूमि उपन्यास के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
2. कर्मभूमि उपन्यास की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।
3. 'कर्मभूमि' उपन्यास में पूंजीवाद का विरोध किस प्रकार किया गया है- अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
4. 'कर्मभूमि' उपन्यास में किस प्रकार भारतीय मध्यवर्ग के यथार्थ जीवन को उजागर किया है-अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
5. कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित गांधीवादी विचारधारा पर आलेख प्रस्तुत कीजिए।

******

इकाई 8 : कर्मभूमि (भाग-III)

इकाई की रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्र

8.4 प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त पक्ष और भाषा

8.5 कर्मभूमि उपन्यास की भाषा

8.6 सारांश

8.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

8.8 अधिक जानने के लिए पढ़े

8.9 अभ्यास प्रश्न

8.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्रों से परिचय प्राप्त करेंगे।
- उपन्यास में चित्रित पात्रों के विचारधारा को समझने में सक्षम होंगे।
- कर्मभूमि उपन्यास की भाषा शैली से अवगत होंगे।
- उपन्यास में प्रकृति चित्रण में प्रयुक्त भाषा के संबंध में जान पाएंगे।
- कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित बिम्ब और प्रतीक के बारे जानकारी प्राप्त करेंगे।

8.2 प्रस्तावना

हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। उन्होंने अत्यधिक मात्रा में साहित्य की रचना की और उनकी रचनाओं की गुणवत्ता आज भी लेखकों के लिए एक प्रेरणा और चुनौती बनी हुई है। किसी भी कहानी या उपन्यास की विशेषता केवल उसके विषयवस्तु में ही नहीं होती, बल्कि उसे प्रस्तुत करने की शैली भी उतनी ही अहम होती है। प्रेमचंद की कथावाचन शैली की विशिष्टता यह है कि वे केवल लिखते नहीं, बल्कि जैसे

कथा को जीवंत रूप में सुनाते हैं।

कहानी सुनाने की इस शैली में अन्य तत्वों की तुलना में भाषा अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती है। हर युग और हर प्रकार की कथा के लिए एक जैसी भाषा उपयुक्त नहीं होती। विभिन्न प्रकार की कहानियाँ भिन्न प्रकार की भाषाई अभिव्यक्ति की अपेक्षा रखती हैं। प्रेमचंद से पहले हिन्दी कथा-भाषा का कोई निश्चित और स्थायी रूप नहीं था, जिसे प्रेमचंद ने भली-भांति समझा।

प्रेमचंद का साहित्यिक दौर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का काल था। इसी समय हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी को लेकर भाषायी मतभेद साम्प्रदायिक रंग लेने लगे थे। प्रेमचंद पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को आम जनता की समस्याओं से जोड़ा और आम लोगों को ही अपने पात्र बनाकर उनकी ही भाषा में अपनी बात कहने का प्रयास किया। पात्रों की भाषा में कथा प्रस्तुत करना, प्रेमचंद की लेखन शैली की एक विशेष और सशक्त विशेषता है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद अपने उपन्यासों में ज्वलंत समस्याओं को स्थान दिया। पहले वे समस्याओं का समाधान 'गांधीवादी' ढंग से करना चाहते थे, 'कर्मभूमि' भी इससे अलग नहीं है। लेकिन 'गोदान' तक आते आते इनकी दृष्टिकोण बदल जाती है। 'आदर्शवाद' की जगह 'यथार्थवाद' ने ले लेता है। 'कर्मभूमि' गांधीवादी विचारधारा पर आधारित एक उपन्यास है। एक रचनाकार अपने उद्देश्य को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रकट करते हैं।

एक उपन्यास की सफलता भाषा-शैली पर भी निर्भर करती है। इसलिए हम प्रस्तुत इकाई में 'कर्मभूमि' उपन्यास के प्रमुख पात्र के अतिरिक्त इस उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार करेंगे।

8.3 कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्र

उपन्यास के पात्र यथार्थ और सजीव होना चाहिए। उपन्यासों का पात्रों पाठकों के मन में दीर्घकालिक प्रभाव डालने वाला होना चाहिए। 'कर्मभूमि' उपन्यास में तीन-चार पात्रों मुख्य हैं, अन्य सभी गौण।

अमरकांतः 'अमरकांत' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है और गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। समस्याओं का समाधान गांधीवादी ढंग से करना चाहता है। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेता है। इस काम में उनके पिता और पत्नी

विरोध करते हैं। जब किसान अपने हक के लिए आंदोलन करते हैं, तब 'अमरकांत' उन्हें अहिंसा का मार्ग अपनाने के लिए आग्रह करता है- ''ठहरो जिस रास्तें पर तुम जा रहे हो, वह उद्धार का रास्ता नहीं है- सर्वनाश का रास्ता है। हम घर को जलाना नहीं बनाना चाहते हैं। हमें उस घर में रहना है। उसी में जीना है। यह विपत्ति कुछ हमारे ही ऊपर नहीं पड़ी है। सारे देश में यही हाहाकार मचा हुआ है। हमारे नेता इस प्रश्न को हल करने की चेष्टा कर रहे हैं। उन्हीं के साथ हमे भी चलना है।''

'कर्मभूमि' उपन्यास में दलितों की समस्याओं को भी प्रमुखता से उठाया गया है। जिसे 'अमरकांत' के माध्यम से देखा जा सकता है। 'अमरकांत' घर छोड़कर एक 'चमार' गाँव में जाकर रहने लगता है और उस गाँव की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता है। इस उपन्यास में लगभग सभी पात्र अंत में 'अमरकांत' से प्रभावित होते हैं।

समरकांतः लाला समरकान्त नगर के प्रमुख और परिश्रमी साहूकार थे, जिन्होंने अपने परिश्रम और व्यावसायिक चातुर्य से अपार संपत्ति अर्जित की। उनका जीवन पूरी तरह धन-संचय और व्यापार को समर्पित था। वे हर प्रकार के लाभ को उचित मानते थे, चाहे वह नैतिक हो या नहीं। चोरी का सामान खरीदने-बेचने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं थी। उनके लिए लाभ ही धर्म था।

धार्मिक कर्मकांडों में उनकी गहरी आस्था थी, पर उनका धर्म केवल बाह्य आडंबर तक सीमित था। पूजा-पाठ, व्रत-उपवास करते थे, पर इसका उनके आचरण से कोई मेल नहीं था। पुत्र अमरकान्त जब उनके सिद्धांतों से असहमत होकर उनसे अलग हो गया, तो यह उनके लिए गहरी चोट थी। उन्होंने सारा जीवन संतान के लिए तपस्या की, पर जब वही पुत्र उन्हें ''चोर'' कहने लगा, तो वे टूट गए । समरकान्त लोभी और आत्मकेंद्रित अवश्य थे, पर उनके भीतर एक पिता का हृदय भी धड़कता था जो अपनी संतान को दुखी नहीं देखना चाहता था। उनका चरित्र विरोधाभासों से भरा, पर यथार्थवादी था।

सुखदाः 'सुखदा' इस उपन्यास की एक प्रमुख नारी पात्र है। सुखदा चाहती है कि उनका पति किसी सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन में भाग ना ले और घर का काम ही देखे। पर धीरे-धीरे वह 'अमरकांत' की ओर आकर्षित होती है और सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में भी भाग लेती

है। जब किसान आंदोलन में कोई निष्कर्ष नहीं निकलता, तब सुखदा कहती है- ''हमे जो कुछे बलिदान करना पड़ता है उस जागृति को देखते हुए कुछ भी नही है, जो जनता में अंकुरित हो गई है। क्या तुम समझते हो, इन बलिदानों के बिना यह समझौता हो सकता था?''

दलितों के मंदिर प्रवेश को लेकर जब समरकांत गोलियां चलवाते हैं, तब सुखदा आक्रोश व्यक्त करती है और कहती है- ''जिस धर्म की रक्षा गोलियों से होती है वह कैसा धर्म है? और उसका स्वाभिमान उत्सर्ग रूप में छलक पड़ता है, वह पुलिसवालों के सामनेखड़ी होकर, लोगों को ललकारती हुई कहती है'' भाइयों ! क्यों भाग रहे हो? यह भागनेका समय नहीं, छाती खोलकर सामने आने का समय है। दिखा दो कि तुम किस प्रकार धर्मके नाम पर प्राणों को होम करते हो। धर्मवीर ही ईश्वर को पाते हैं। वह लोगों में साहसका संचार करती है। लोग गोलियां खाकर भी अविचल खड़े रहते हैं। बाद में मंदिर का द्वार सबके लिए खोल दिया जाता है। यह सब सुखदा के साहस का ही परिणाम था। सुखदा विलासिनी से समाज सेविका बन गयी थी। सुखदा का चरित्र उस आधुनिक साहसी, उदार,नारी का चरित्र है जो अपने प्रयासों से समाज में परिवर्तन लाती है।''

सकीनाः इस उपन्यास की और एक सशक्त नारी पात्र है- सकीना। सकीना निर्धन है और बूढ़ी माँ के सिवा कोई नहीं है। 'अमरकांत' सकीना को देखकर उसकी व्यवहार से प्रभावित होती है। अपनी पत्नी से प्रेम ना मिलने के कारण वह धीरे-धीरे सकीना से प्रेम करने लगता है। सकीना भी 'अमरकांत' को प्रेम करने लगती है। फलस्वरूप अंत में दोनों शादी कर लेते हैं। सकीना राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेती है और सुखदा तथा नैना की तरह जेल जाती है।

इसके अतिरिक्त 'प्रेमचंद' ने इस उपन्यास में अमरकांत के पिता 'समरकांत' को कठोर और लोभी पात्र के रूप में, 'डॉ. शंतिकुमार' में त्याग भावना, 'सलीम' में कर्तव्य बोध, 'मुन्नी' जैसी भिखारिन की चारित्रिक गुण और अमीर पात्र के रूप में 'धनीराम' को प्रस्तुत किया है। ये सभी पात्र पहले गरीब, दलित और राष्ट्रीय आंदोलन के खिलाफ रहते हैं, पर धीरे-धीरे सभी गरीब और दलितों की हक की लड़ाई लड़ते हैं।

नैनाः प्रेमचंद के कर्मभूमि उपन्यास की नैना एक सशक्त, संवेदनशील

और आदर्श नारी पात्र के रूप में प्रस्तुत की गई है। वह स्वभाव से प्रसन्नचित्त, परंतु आंतरिक रूप से अत्यंत गंभीर और कर्तव्यनिष्ठ है। नैना में त्याग, प्रेम, सहानुभूति और विद्रोह का सुंदर संगम दिखाई देता है। वह अमरकान्त की छोटी बहन है और उसके प्रति अपार स्नेह और श्रद्धा रखती है। अमर के सिद्धांतों में उसकी गहरी आस्था है। जब समस्त परिवार अमर का विरोध करता है, तब अकेली नैना उसके पक्ष में डटी रहती है। भाई के लिए वह किसी से भी सहायता माँगने में संकोच नहीं करती और कष्ट सहने के लिए भी तत्पर रहती है।

नैना, बचपन में ही अपनी संवेदनशीलता और विवेकशीलता से प्रभावित करती है। वह सरल, सहज और भावुक है, परंतु अन्याय के विरुद्ध खड़ी होने का साहस भी रखती है। पिता द्वारा अमर को घर से निकालने पर वह भी विद्रोह करती है। बाद में वही पिता उसे एक दुष्चरित्र युवक मनीराम से विवाह करने पर विवश करते हैं, जिसे वह नापसंद करती है। फिर भी, नैना पिता की आज्ञा को धर्म समझकर स्वीकार करती है। वह न संतुष्ट होती है, न दुख व्यक्त करती है–बस अपने कर्तव्य की बलिवेदी पर चुपचाप आत्मबलि दे देती है। नैना नारी शक्ति, त्याग और संघर्ष की प्रतीक है।

मुन्नी: प्रेमचन्द ने 'कर्मभूमि' में मुन्नी के माध्यम से एक ऐसी नारी–छवि प्रस्तुत की है, जो अबला से सबला बनने की प्रेरक यात्रा तय करती है। वह महाली गाँव की एक ठाकुर परिवार की विवाहित स्त्री है, जो आरंभ में पिड़ित के रूप में सामने आती है। अरहर के खेत में अंग्रेज सिपाहियों द्वारा अत्याचार का शिकार बनती है, परंतु वह इस पीड़ा को आत्मबल में बदल देती है। वह न तो घर लौटती है और न ही अपने दु:ख की फरियाद करती है, बल्कि अपने आत्मसम्मान की रक्षा हेतु संघर्षशील हो उठती है।

अमरकान्त, सलीम और डॉ. शान्तिकुमार की सहायता से मुन्नी नया जीवन आरंभ करती है और अंतत: वही महिला अत्याचारियों का प्रतिकार कर उन्हें मृत्यु तक पहुँचा देती है। पहले जनता उसे दोषिनी मानती है, परंतु जब सच्चाई सामने आती है, तो समाज उसके साहस और आत्मबल का सम्मान करता है। प्रेमचन्द ने मुन्नी के माध्यम से दिखाया कि पीड़ित नारी भी अन्याय के विरुद्ध लड़ सकती है। डॉ. रामविलास शर्मा ने उसे ''वीर नारियों में सिरमौर'' माना है। सुखदा जैसे पात्र भी उसे देवी समान मानते हैं। मुन्नी

भारतीय नारी की सहनशीलता, दृढ़ता और आत्मबल का प्रतीक बन जाती है।



महत्वपूर्ण बिंदु

प्रेमचंद के उपन्यास कर्मभूमि में सेठ धनीराम, चौधरी गुदर, पठानिन, मिस्टर घोष, सलीम और सलोनी जैसे गौण पात्रों के माध्यम से समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत की गई है। ये पात्र अपने चरित्र-परिवर्तन द्वारा आदर्शों की स्थापना करते हैं। धनीराम जहां व्यवसायी से समाजसेवी बनता है, वहीं सलीम शोषक से जनता का हितैषी बन जाता है। दलित महिला सलोनी अमरकांत को पुत्रवत स्नेह देती है और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाती है। ये सभी पात्र न केवल कथानक को विकसित करते हैं, बल्कि प्रेमचंद के सुधारवादी दृष्टिकोण को भी सार्थक बनाते हैं।

8.4. प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त पक्ष और भाषा शैली

किसी साहित्यिक रचना के विश्लेषण में उसके अभिव्यक्ति पक्ष का मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक होता है। इसमें रचना की भाषा-शैली, शब्द-शक्ति, मुहावरे और लोकोक्तियों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है, क्योंकि किसी भी कृति की अभिव्यक्ति का सौंदर्य इन्हीं तत्वों पर निर्भर करता है। ये केवल विचारों को व्यक्त करने के साधन नहीं होते, बल्कि लेखक इन्हीं के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि आम जनता के दु:ख-दर्द, संघर्ष, और वेदना को कैसे विश्वसनीय स्वरूप दिया जाए, और कैसे समाज में व्याप्त कृत्रिम आडंबरों को हटाकर चारित्रिक और सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

प्रेमचन्द के उपन्यासों के अभिव्यक्ति पक्ष की चर्चा से पहले यह समझना जरूरी है कि उनके लेखन से पूर्व हिन्दी गद्य किस अवस्था में था। प्रेमचन्द से पहले जिन लेखकों ने कथा साहित्य की नींव रखी, उनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रद्धाराम फुल्लौरी, लाला श्रीनिवास दास, पं. बालकृष्ण भट्ट, देवकीनन्दन खत्री, गोपालराम गहमरी, बालमुकुन्द गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध आदि प्रमुख हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी गद्य का जन्मदाता माना जाता है। उनकी भाषा शैली में छोटे, भावपूर्ण वाक्य, बनारसी ठाट, और ठेठ लोक-भाषा के मुहावरे-लोकोक्ति याँ शामिल थीं। भट्ट जी की रचनाओं में भी पूर्वी

बोली, संस्कृत ज्ञान, अरबी-फारसी उद्धरण, तथा हिन्दी के दोहे-चौपाइयों का प्रयोग देखा जाता है।

लाला श्रीनिवास दास के उपन्यास परीक्षागुरु में 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है-उन्होंने देशी भाषा में शिक्षा पर बल दिया। इसी दौर में देवकीनंदन खत्री और गहमरी ने तिलिस्मी और जासूसी उपन्यासों की रचना की, जिनका उद्देश्य मुख्यत: मनोरंजन था और जिनमें कविता, छंद, और कथा-आख्यान का समावेश किया गया।

डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार, ''हालाँकि भारतेन्दु युग की लेखनी ने भाषा को अभिव्यक्ति योग्य तो बना दिया था, परंतु वह अब भी प्रभावशाली कथा-वाचन के योग्य नहीं थी।'' इसमें उपदेशात्मकता, काल्पनिक रोमांस, और सस्ते मनोरंजन की चमक हावी थी। बाद में द्विवेदी युग में भाषा में और परिष्कार आया। उसमें बोलचाल की प्रवृत्ति, तद्भव शब्दों का प्रयोग तथा सरलता का समावेश हुआ। इस काल में बालमुकुन्द गुप्त जैसे लेखक व्यंग्यपूर्ण, संक्षिप्त और संवादात्मक भाषा का प्रयोग कर भाषा को अधिक सजीव बना रहे थे।

प्रेमचन्द ने साहित्यिक जीवन की शुरुआत उर्दू लेखन से की। उनकी आरंभिक रचनाओं जैसे असरारे मआविद, हमखुर्मा ओ हमसवाब, प्रेमा आदि में तिलिस्मी प्रभाव दिखाई देता है लेकिन वे यथार्थ के अधिक निकट हैं। बाद में उन्होंने वरदान, सेवासदन, रंगभूमि आदि उपन्यास उर्दू में लिखे, जिनका हिन्दी अनुवाद किया गया। प्रारंभ में उन पर रतननाथ सरशार जैसे उर्दू कथाकारों का प्रभाव था, परंतु जैसे-जैसे उन्होंने हिन्दी की ओर रुख किया, उनकी भाषा सहज, प्रवाहमयी, और जन-जीवन के अनुकूल होती गई। प्रेमचन्द की भाषा को वे स्वयं एक बहती हुई नदी कहते थे, जिसमें विभिन्न धाराएँ और स्रोत समाहित होते हैं।

उन्होंने जनसाधारण की भाषा को अपनाया क्योंकि उनका साहित्य जनता के लिए, जनता के विषय में और जनता की ही भाषा में था। इसलिए उनकी भाषा में हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, और अंग्रेज़ी के सहज और स्वाभाविक शब्द मिलते हैं। प्रेमचन्द अनावश्यक शब्दाडंबर, क्लिष्टता, और अलंकारों के बोझ से बचते हैं। उनका मानना था कि उपन्यास की शैली ऐसी होनी चाहिए जो पाठक को भ्रमित न करे, बल्कि सीधे और प्रभावी ढंग से बात कहे। सरलता

को ही उन्होंने साहित्य की असली विशेषता माना। नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार, प्रेमचन्द की भाषा की सरलता किसी पत्रकार की भाषा नहीं है, बल्कि यह जीवन की सादगी को व्यक्त करने का एक मौलिक प्रयास है।

प्रेमचन्द की भाषा नदी की तरह बहती है, इसलिए उसमें प्राकृतिक प्रवाह है, और पाठक को न कोई कृत्रिमता महसूस होती है, न ही समझने में कठिनाई। उन्होंने कहीं-कहीं मनोवैज्ञानिक वर्णन भी किए हैं, जो उनके बौद्धिक कौशल और कल्पनाशक्ति का परिचय देते हैं। प्रेमचन्द की भाषा की एक खास विशेषता यह है कि उन्होंने उसे पात्रानुकूल बनाया। जिस पात्र का जैसा चरित्र है, उसकी भाषा भी वैसी ही है। शिक्षित हिन्दू पात्र संस्कृतनिष्ठ भाषा बोलते हैं, शिक्षित मुस्लिम पात्रों की भाषा में अरबी-फारसी शब्द मिलते हैं, जबकि ग्रामीण पात्रों की भाषा में लोक-शब्दों की भरमार होती है। मुंशी प्रेमचन्द का मानना है कि ''उपन्यास की रचना-शैली सजीव और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम शब्दों का गोरखधंधा रचकर पाठक को इस भ्रम में डाल दें कि इसमें जरूर कोई-न-कोई गूढ़ आशय है। जिस तरह किसी आदमी का ठाठ-बाट देखकर हम उसकी वास्तविक स्थिति के विषय में गलत राय कायम कर लिया करते हैं, उसी तरह उपन्यासों के शाब्दिक आडम्बर देखकर भी हम खयाल करने लगते हैं कि कोई महत्व की बात छिपी हुई है। सम्भव है ऐसे लेखक को थोड़ी देर के लिये यश मिल जाय, किन्तु जनता उन्हीं उपन्यासों को आदर का स्थान देती है, जिनकी विशेषता उनकी गूढ़ता नहीं उनकी सरलता होती है।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों की भाषा को समाज के विभिन्न वर्गों से जोड़कर यथार्थ, प्रभावशीलता, और सामाजिक उद्देश्य के साथ प्रस्तुत किया।



अपनी प्रगति जाँचें

प्रश्न 1.कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्रों के नाम लिखिए।

प्रश्न 2. ''जिस धर्म की रक्षा गोलियों से होती है वह कैसा धर्म है?''-यह कथन किसका है?

प्रश्न संख्या 3.समरकांत का व्यक्तित्व कैसा था?

8.5 कर्मभूमि उपन्यास की भाषा

भाषा के बिना साहित्यकार किसी उद्देश्य तक पहुँच नहीं सकते हैं। 'प्रेमचंद ने भाषा के संबंध में लिखा- ''समाज की बुनियाद भाषा है, भाषा के बगैर किसी समाज का ख्याल भी नहीं किया जा सकता है। हमारी भाषा का सीधा संबंध हमारी आत्मा से है। मनुष्य में मेल-मिलाप के कितने साधन हैं, उनमें सबसे मजबूत असर डालने वाला रिश्ता भाषा का है।''

उपन्यास की भाषा को लेकर डॉ. त्रिभुवन सिंह कहते हैं-''उपन्यासकार शिल्प के माध्यम से जिस प्रभाव की सृष्टि करता है, उसमें भाषा का महत्वपूर्ण योग रहता है। उपन्यास में भाषा का महत्व इतना अधिक है कि शैली से कभी-कभी हम भाषा का अर्थ समझ बैठते हैं। भाषा के माध्यम से विषय एक निश्चित शिल्प के द्वारा उपन्यास में प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास के विषय और स्वरूप को एक-दूसरे से अलग करके देख पाना कठिन होता है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही खतरे में है। निश्चित मानिए कि विषय के रूप में जितने सुन्दर विचारों को उपन्यास में ग्रहण किया जायेगा, उतने ही सुन्दर वाक्यों एवं भाषा की उसमें सहज ही सृष्टि होगी। उपन्यास को अर्थवत्ता प्रदान करने का कार्य भाषा को है। उपन्यास साहित्य के सन्दर्भ में जब हम भाषा का प्रयोग करते हैं तो उसका तात्पर्य सार्थक भाषा से है, न किसी ध्वनि से..... उपन्यास शिल्प को सार्थकता प्रदान करने में भाषा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।''



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 4.नलिन विलोचन शर्मा ने प्रेमचंद की भाषा के सम्बन्ध में क्या कहां था?

प्रश्न 5. अमरकांत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

'प्रेमचंद' हिन्दुस्तानी भाषा के समर्थक थे, यही कारण है कि वे अपनी रचनाओं में बोलचाल की भाषा इस्तेमाल ज्यादा किया है। भाषा की सहजता और सरलता को समझने के लिए 'कर्मभूमि' उपन्यास के मुख्य पात्र 'अमरकांत' के इस कथन पर ध्यान देना जरूरी है- ''मैं जिन्दगी की आरजुओं को जिन्दगी समझता हूँ। मुझे जिन्दा रहने के लिए एक ऐसे दिल की जरूरत है, जिसमें आरजुएँ हों, दर्द हो, त्याग हो, सौदा हो। जो मेरे साथ रो सकता हो, मेरे साथ

जल सकता हो। महसूस करता हूँ कि मेरी जिन्दगी पर रोज-ब-रोज जंग लगता जा रहा है। इन चन्द सालों में मेरा कितना रुहानी जवाल हुआ, इसे मैं ही समझता हूँ। मैं जंजीरों में जकड़ा जा रहा हूँ।''

'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने किसानों की प्रमुख समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है। सहज-सरल भाषा-शैली के कारण उपन्यास के पात्रों या घटनाएँ पाठकों के मन में बहुत दिनों तक जगह बना लेती है। इस उपन्यास में 'प्रेमचंद' ने पूँजीवाद और शिक्षा व्यवस्था पर भी लिखा है- ''हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय। देर में आइये तो जुर्माना; न आइये तो जुर्माना; सबक न याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिये तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाये तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है जुर्मानालय है। यह हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है।''

रामरतन भटनागर 'प्रेमचंद' की शैली को वैयक्तिक बताया है। उनके अनुसार गोदान आते-आते भाषा में गलतियाँ कम होने लगी थीं। वे लिखते हैं- ''उनकी अपनी वैयक्तिक शैली है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं से लेकर उनकी अन्तिम रचनाओं तक शैली में विशेष अन्तर नहीं आया है। हाँ, उसके भिन्न-भिन्न रूप प्रकाश में आते रहे रहे हैं और वह बराबर पुष्प होती रही है। 'कायाकल्प' तक शैली में धीरे-धीरे तत्समता और काव्यात्मकता का बराबर विकास होता गया है। अशुद्ध प्रयोग कम होने लगे हैं। 'कायाकल्प' से 'गोदान' तक की भाषा-शैली विभिन्न और प्रौढ़ता में अद्वितीय है। वह धीरे-धीरे काव्यात्मकता से हटकर संयम और मितव्यता की ओर जा रही है। 'गोदान' में हम उसके सबसे सुन्दर, सुष्ठ और संयमित रूपों से परिचित होते हैं।''

'प्रेमचंद' ने अपने उपन्यास में व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। सभी प्रकार की विसंगतियों पर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार कर उसमें सुधार लाने का प्रयास किया जाता है। 'प्रेमचंद' ने व्यंग्य के माध्यम से भ्रष्टाचार और पाखंड पर करारा प्रहार किया है। भ्रष्टाचार पर प्रहार करते हुए वे लिखते हैं- ''यह बड़े-बड़े महकमें किसलिए? ऐसा मालूम होता है, गरीबों की लाश नोंचने वाले गिद्धों का समूह है। जिसके पास जितनी ही बड़ी डिग्री है, उसका स्वार्थ भी उतना ही बढ़ा हुआ है। मानो लोभ और स्वार्थ ही विद्वत्ता का लक्षण है। गरीबों को रोटियाँ, मयस्सर न हो, कपड़ों को तरसते हों, पर हमारे शिक्षित भाइयों को मोटर चाहिए, बंगला चाहिए, नौकरों की एक पलटन चाहिए। इस संसार

को अगर मनुष्य ने रचा है तो अन्यायी हैं, ईश्वर ने रचा है तो उसे क्या कहें।''

'प्रेमचंद' ने अनेक जगहों पर भावात्मक भाषा का प्रयोग किया है। 'कर्मभूमि' में भी ऐसे भावुकतापूर्ण शैली के इस्तेमाल देखने को मिल जाता है। उदाहरण के लिए- ''सलोनी का पीड़ित हृदय पक्षी के समान पिंजड़े से निकलकर भी कोई आश्रय खोज रहा था। सज्जनता और सत्प्रेरणा में भरा हुआ यह तिरस्कार उसके सामने जैसे दाने बिखेरने लगा। पक्षी ने दो- चार बार गर्दन झुकाकर दोनों को नेत्रों से देखा, फिर अपने रक्षक को 'आ-आ' करते धुन और पर फैलाकर दानों पर उतर आया।''

गाँव का चित्रण करते हुए भाषा का सरस प्रयोग दिखाई देता है। पूरा का पूरा दृश्य मूर्तिमान हो उठा है। अपना घर परिवार छोड़कर अमर जिस पहाड़ी गाँव में रहता है उसका वर्णन करते हुए प्रेमचन्द ने लिखा है ''उत्तर की पर्वत श्रेणियों के बीच एक छोटा सा रमणीक पहाड़ी गांव है। सामने गंगा किसी बालिका की भांति हँसती, उछलती, नाचती, गाती, दौड़ती चली जाती है। पीछे ऊँचा पहाड़ किसी वृद्धयोगी की भांति जटा बढ़ाये, शान्त, गम्भीर, विचारमग्न खड़ा है। यह मानो उसकी बाल स्मृति है। आमोद-विनोद से रंजित, या कोई युवावस्था का सुनहरा मधुर स्वप्न । वह अब भी उन स्मृतियों को हृदय में सुलाए हुए, उस स्वप्न को छाती से चिपकाए हुए है। ''

'प्रेमचंद' अपने उपन्यास में उर्दू-फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया है। 'प्रेमचंद' के मुसलमान पात्र उर्दू-फारसी शब्दों का प्रयोग करते हुए नजर आते हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग लगभग उनके हर उपन्यास में देखने को मिलता है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में शान्ति कुमार सलीम से कहता है- ''मेरे खयालात तुम्हें मालूम हैं। यह किराए की तालीम हमारे कैरेक्टर को तबाह किये डालती है। हमने तालीम को भी व्यापार बना लिया है। व्यापार में ज्यादा पूँजी लगाओ, ज्यादा नफ़ा होगा। तालीम में भी ज्यादा खर्च करो, ज्यादा ओहदा पाओगे।''

'प्रेमचंद' ने अपनी रचनाओं में देशज, अरबी-फारसी, तद्भव और तत्सम सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है, जो पात्रानुकूल है।



8.6 सारांश

'कर्मभूमि' उपन्यास में मुख्य पात्र कम है, गौण पात्र अधिक है। मुख्य पात्रों में प्रमुख हैं- 'अमरकांत', 'सुखदा' और 'सकीना'। किसान और दलितों की समस्याओं को मुख्य रूप से इस उपन्यास में स्थान दिया गया है, जो इन मुख्य पात्रों माध्यम दर्शाने का सफल प्रयास किया है। 'अमरकांत' घर छोड़कर

एक 'चमार' गाँव में रहने लगता है और धीरे-धीरे दलितों की समस्याओं से अवगत होता है और उन समस्याओं की समाधान के लिए प्रयास करता है। धीरे-धीरे सुखदा भी अमरकांत से प्रभावित होकर किसान और दलितों के पक्ष में आंदोलन में भाग लेती है। सकीना भी उससे प्रभावित है। उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल है तथा बोलचाल, उर्दू, अरबी, फारसी के शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है।

8.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न संख्या 1 का उत्तर: कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्रों का नाम हैं- अमरकांत, सुखदा, सकीना, समरकांत।

प्रश्न संख्या 2 का उत्तर: यह कथन सुखदा का है।

प्रश्न संख्या 3 का उत्तर: पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़ें।

प्रश्न संख्या 4 का उत्तर: पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़ें।

प्रश्न 5 का उत्तर: 'अमरकांत' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है और गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। समस्याओं का समाधान गांधीवादी ढंग से करना चाहता है। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेता है। अधिक जानने के लिए 'कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्र' को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

8.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- प्रेमचंद,(1932). कर्मभूमि. बनारस: सरस्वती प्रेस।
- गुप्त, डॉ. सुरेश चन्द्र(सं). (1965). उपन्यासकार प्रेमचंद. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।
- गुप्त, डॉ. श्रीमती शीला. (1972). प्रेमचन्द और उनका साहित्य. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- गुप्त, डॉ. रामदीन. (1961). प्रेमचन्द और गांधीवाद. पटना: हिंदी साहित्य संसार।
- गुर्टू, शचीरानी (सं). (1955). प्रेमचन्द और गोर्की. बम्बई: राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, डॉ. प्रेम नारायण. (1941) प्रेमचन्द और ग्राम समस्या. आगरा: रामप्रसाद एंड संस।

- कोहली, डॉ. नरेन्द्र. (1966). प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धांत. दिल्ली: अशोक प्रकाशन।
- शर्मा, डॉ. रामविलास. (1952). प्रेमचन्द और उनका युग. दिल्ली: मेंहरचन्द मुंशीराम।
- गुरु, डॉ. राजेश्वर(1961). प्रेमचंद: एक अध्ययन. भोपालःमध्य प्रदेशीय प्रकाशन समिति।
- पाठक, जितेन्द्रनाथ(1954). कथाकार प्रेमचंद. बनारस: सरस्वती मंदिर।

8.9 अभ्यास प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. 'कर्मभूमि' के पात्र अमरकांत के चरित्र की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. कर्मभूमि उपन्यास के रचनाकार का नाम लिखिए?
3. उपन्यास की पात्र मुन्नी का व्यक्तित्व कैसा था?
4. प्रेमचंद ने उपन्यास की रचना-शैली के संबंध में क्या मत प्रदान किया था?
5. पूंजीवाद और शिक्षा के संबंध में प्रेमचंद का दृष्टिकोण किस प्रकार का था?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए।
2. प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त पक्ष और भाषा पर एक आलेख तैयार कीजिए।
3. 'कर्मभूमि' उपन्यास की भाषा-शैली पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'कर्मभूमि' उपन्यास का सबसे प्रभावशाली पात्र कौनसा है और क्यों-इस पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
5. 'प्रेमचन्द की भाषा नदी की तरह बहती है'-कथन को तर्क के साथ स्पष्ट कीजिए।

******

इकाई-9 : गुनाहों का देवता (भाग-I)

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' का परिचय

9.4 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में धर्मवीर भारती का योगदान

9.5 गुनाहों का देवता उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

9.6 सारांश

9.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

9.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

9.9 अभ्यास प्रश्न

9.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' से परिचय प्राप्त करेंगे।
- उनके साहित्य में निहित विविध पक्षों से अवगत होंगे।
- 'गुनाहों की देवता' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा के बारे में जानेंगे।
- हिंदी साहित्य के विकास में धर्मवीर भारती के योगदान को समझ सकेंगे।
- उपन्यास में निहित कथावस्तु के माध्यम से विद्यार्थी सामाजिक जीवन के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

9.2 प्रस्तावना

एक साहित्यकार को जानने के लिए उसके जीवन के बारे में जानना आवश्यक है। साहित्यकार का समाज से गहरा संबंध होता है और वे समाज के प्रति संवेदनशील होते हैं। धर्मवीर भारती को हम मानवतावादी साहित्यकार कह सकते हैं। वे किसी एक विचारधारा में कभी नहीं बंधा। मानव जाति के हित के लिए उन्हें जो पसंद आया, वह किया। उन्होंने किसी विचारधारा के पीछे अपना समय बर्बाद नहीं किया और न ही किसी विचारधारा की कटु

आलोचना की। ''दुनिया में जहाँ कहीं भी मानवता की प्रगति का महान प्रयोग हो रहा है, जो कोई भी वह महान प्रयोग कर रहा है, इतिहास के जिस क्षण में भी वह महान प्रयोग हुआ है। तुम्हें उस राष्ट्र, उस व्यक्ति, उस क्षण के सामने श्रद्धानत होना है चाहे वह रूस हो या चीन, फ्रांस हो या अमेरिका, गाँधी हो या लेनिन, गोर्की हो या पंत, रूसी क्रांति हो या भारतीय असहयोग।''

एक साहित्यकार पर परिस्थितियों का, समाज का, वर्ग का प्रभाव पड़ना ही है। इस बारे में 'धर्मवीर भारती' लिखते हैं- ''मेरी परिस्थितियाँ, मेरे जीवन में आने और आकर चले जाने वाले लोग, मेरा समाज, मेरा वर्ग, मेरे संघर्ष, मेरी प्रवृत्तियाँ इन सभी का मेरे और मेरी कविता के रूप गठन और विकास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग रहा है।''

प्रस्तुत इकाई में हम 'धर्मवीर भारती' का परिचय और 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु पर विचार करेंगे।

9.3 उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' का परिचय

सामान्य परिचयः डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद में हुआ था और 4 सितंबर 1997 को इस महान साहित्यकार का देहांत हो गया। 'धर्मवीर भारती' के पिताजी का नाम 'चिरंजीवलाल' था और माता का नाम 'चंदा देवी' था। महात्मा गाधी के आंदोलन में भाग लेने के कारण उनके पिता ने नौकरी इस्तीफा दे दिया। बचपन को याद करते हुए 'भारती' जी ने लिखा- ''मैंने होश सभाला तो अतरसुइया की गली और माँ-बाप के आर्य समाजी वातावरण में। माँ कट्टर आर्य समाजी थीं। मेरे जन्म के पहले मेरे 10 भाई-बहन पैदा होकर मर चुके थे, अतः वे हमेशा मुझे साथ रखती थीं। संध्या, हवन, जनेऊ, ब्रह्मचर्य सभी विधिवत । पिता समझदार आर्य- समाजी थे। वे मुझे हर तरह की किताबें पढ़ने को देते, जिनसे माँ परहेज करती थी।'' माँ आर्यसमाजी और अनुशासन प्रिय होने के कारण मेलों-ठेलों में जाने में बाधा आरोप करती थी। इस बारे जिक्र करते हुए 'भारती' जी लिखते हैं- ''माँ आर्य समाजी है। इन मेलों-ठेलों ने देश का नाश किया, अतः उन्हें इसमें दिलचस्पी नहीं। बगल वाले घर की जीजी का मैं लाडला था। उनके ठाकुर जी के लिए स्कूल के आहाते से कनेर और मधुमालती के फूल लाने से लेकर दोपहर को

चिल्लाकर राधेश्याम की रामायण गाना मेरा रोज का कार्यक्रम था। फलस्वरूप हर छठ पर छोटी-छोटी कुल्हियों में भुने चने, मकाई, मटर भरने में, जन्माष्टमी पर पंजीरी, पंचामृत बनाने में और कार्तिक के मेले से साल भर की खरीद-फरोख्त करने में मैं उनका सलाहकार और छोटा सिपाही था।''

'भारती' जी की शिक्षा की प्रारंभ घर पर हुई, उसके बाद चौथी कक्षा में डी. ए. वी. स्कूल में भर्ती हुआ; जब वे आठवीं कक्षा में थे, तब उनके पिताजी का देहांत हो गया। बीच में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। सन् 1945 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा 1947 एम. ए. की परीक्षा पास की। उसके उपरांत 'धीरेंद्र वर्मा' के निर्देशन में पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। पिताजी के देहांत के बाद आर्थिक तंगी के कारण 'भारती' जी को ट्यूशन करना पड़ा। 1948 ई. में 'संगम' और 1960 में 'धर्मयुग' के संपादक बने।



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'धर्मवीर भारती' के पिताजी का नाम 'चिरंजीवलाल' और माता का नाम 'चंदा देवी' था।
- 'धर्मवीर भारती' सन् 1948 'संगम' और 1960 में 'धर्मयुग' पत्रिका के संपादक बने।

'भारती' जी ने 1945 ई. में पहली शादी की, जो असफल रही। उन्होंने दूसरी शादी 'पुष्पा शर्मा' से की, जो सफल साबित हुई। उन्होंने अपनी पत्नी 'पुष्पा' के बारे में लिखते हैं- ''पुष्पा भारती से विवाह हुआ, जिसने बहुत सुख, संतोष और शांति दी। केवल जीवन में नहीं वरन् विचारों और साहित्य-चिंतन के क्षेत्र में भी उसका एक सार्थक, गहरा, प्रेरणास्पद साथ मिला।'' गिरिधर गोपाल 'डॉ. धर्मवीर भारती' के व्यक्तित्व के बारे में वर्णन करते हुए लिखते हैं- ''सफ़ेद कुर्ता, पैजामा, काली जवाहर जैकेट, शैतान आँखों पर लापरवाही से लगा रिमलेस चश्मा, एक हाथ में अकड़ से पकड़ा गया पोर्टमैंटू तथा दूसरे में दो चार पुस्तकें। दुबले-पतले भारती के अंग-अंग में कला है। बातों में कला की रसमसाहट, नजरों में कला की शबनमी रंगीनी, चाल-ढाल में कला की शोख मधुमासी नजाकत और घनी काली भौहों के बीच मस्तक पर पड़ी रेखाओं में कला की विराट जिम्मेदारी। हरसिंगार-सा सुकुमार, फौलाद-सा कठोर। एक

अजब आकर्षण है उसके व्यक्तित्व में।''

साहित्यिक परिचय : भारती' जी कवि, कहानीकार, नाटककार, आलोचक, निबंधकार और उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-

कविता संग्रह : 'ठण्डा लोहा' (1952), 'सात गीत' (1959) 'कनुप्रिया' (1959), 'सपना अभी भी' (1993) 'आद्यन्त' (1999), 'मेरी वाणी गौरिक वसना' (1999)।

'डॉ. धर्मवीर भारती' कवि के रूप में भी प्रसिद्ध थे और वे अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' के माध्यम से कविता लिखना शुरू की थी। वे लिखते हैं- ''कविता की शहजादी इन अपार्थिव कल्पनाओं, टेढ़े-मेढ़े शब्दजालों, अस्पष्ट रूपकों और उलझे हुए जीवन दर्शन की शिलाओं में बंधी उदास जलपरी की तरह कैद है और भारतीय को चाहिए कि वह उसे मुक्त कर सर्वथा मानवीय धरातल पर उतार कर लाये, ताकि वह फैली-फैली चाँदी की बालू पर आदम की संतानों के साथ बेहिचक आँख मिचौली खेल सके, उसके सीधे-सादे सुख-दु:ख, वासनाओं-कामनाओं को समझ सके। उन्हीं की बोली में बोल सके।''

हम यहाँ 'भारती' जी की प्रमुख कविताओं की संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे। 'भारती' जी की कविताओं का प्रथम संकलन 'ठंडा लोहा' है। इसका प्रकाशन 1942 ई. में हुआ था। इस कविता संग्रह में 39 कविताएँ हैं। इन कविताओं का विषय विरह वेदना, प्रेम आदि हैं। सामाजिक बंधनों के कारण ज्यादातर कविताओं में प्रेम सफल नहीं हो पाता है। विरह का एक सुंदर उदाहरण 'ठंडा लोहा' कविता में देखने को मिलता है-

''मेरी दुखती हुई रगों पर ठंडा लोहा!
मेरी स्वप्न-भरी पलकों पर
मेरे गीत-भरे होठों पर
मेरी दर्द-भरी आत्मा पर
स्वप्न नहीं अब
गीत नहीं अब
दर्द नहीं अब...
एक पर्त ठण्डे लोहे की !
मैं जमकर लोहा बन जाऊँ।''

'भारती' जी वासना को पाप नहीं समझते हैं। बहुत जगह ऐसा लगता है कि 'भारती' जी सामाजिक बंधनों को तोड़ना चाहते हैं, जैसे प्रयोगवादी कवि सभी प्रकार के सामाजिक बंधनों से मुक्त रहना चाहते हैं। उदाहरण के लिए 'गुनाह का गीत' कविता को लिया जा सकता है-

''किसी की गोद में सिर धर
घटा घनघोर बिखराकर, अगर विश्वास सो जाये
धड़कते वक्ष पर मेरा अगर व्यक्तित्व खो जाये?
न हो यह वासना तो जिंदगी की माप कैसे हो?
किसी के रूप का सम्मान मुझ पर पाप कैसे हो?
नसों का रेशमी तूफ़ान मुझ पर शाप कैसे हो?''

'भारती' जी का दूसरा कविता संग्रह 1959 ई. में 'सात गीत वर्ष' नाम से प्रकाशित हुआ। इस कविता संग्रह में 51 कविताएँ हैं। इस कविता संग्रह की कविताओं में 'रोमांटिकता' कम है। इन कविताओं में सामाजिक समस्या, प्रकृति आदि की अभिव्यक्ति हुई है। प्रकृति चित्रण का एक उदाहरण 'ढीठ चाँदनी' कविता में देखने को मिलता है-

''आज-कल तमाम रात
चांदनी जगाती है
मुंह पर दे दे छींटे
अधखुले झरोखे से
अंदर आ जाती है
दबे पांव धोखे से
माथा छू
निंदिया उचटाती है
बाहर ले जाती है
घंटों बतियाती है
ठंडी-ठंडी छत पर
लिपट-लिपट जाती है।''

सन् 1959 में 'कनुप्रिया' का प्रकाशन हुआ। यह एक प्रबंधकाव्य है। इसमें राधा और कृष्ण के प्रेम को एक नई दृष्टि से चित्रण किया गया है। 'कनुप्रिया' चार भागों में विभाजित हैं- 'पूर्वराग', 'मंजरी परिणय', 'सृष्टि संकल्प' और 'इतिहास'। 'सपना अभी भी' 'धर्मवीर भारती' का अंतिम कविता संग्रह है।

इसका प्रकाशन सन् 1993 में हुआ था। इस कविता संग्रह में 39 कविताएँ हैं। इस कविता संग्रह में सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ का चित्रण हुआ है। भारत की आजादी के बाद जातिगत भेदभाव, राजनीति में भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला रहा। फिर भी कवि 'भारती' निराश नहीं है-

''सब कुछ खो गया है दिशाएँ, पहचान, कुंडल, कवच
लेकिन शेष हूँ मैं, युद्धरत मैं, तुम्हारा मैं
....इसीलिए तलवार टूटी, अश्व घायल
कोहरे डूबी दिशाएँ
कौन दुश्मन, कौन अपने लोग, सब कुछ धुंध धूमिल
किंतु कायम युद्ध का संकल्प है अपना अभी भी
.... क्योंकि है सपना अभी भी।''



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'कनुप्रिया' एक प्रबंधकाव्य है।
- 'धर्मवीर भारती' को 1972 ई. में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

कहानी संग्रह : 'मुर्दों का गाँव' (1946), 'स्वर्ग और पृथ्वी' (1949), 'चाँद और टूटे हुए लोग'(1955), 'बन्द गली का आखिरी मकान'(1959), 'सांस की कलम से' (2000)।

1. **चाँद और टूटे हुए लोग :** इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 1955 ई. में हुआ था। इसमें नौ कहानियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं- 'हरिनाकुस और उसका बेटा', 'कुलटा', 'मरीज नंबर सात', 'धुआं', 'युवराज', 'अगला अवतार', 'चाँद और टूटे हुए लोग' आदि।
2. **बंद गली का आखिरी मकान :** इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1969 में हुआ। इसमें 'भारती' जी की महत्वपूर्ण कहानियाँ शामिल हैं। यथा- 'गुलकी बन्नो', 'सावित्री नंबर दो', 'यह मेरे लिए नहीं', 'बंद गली का आखिरी मकान' आदि।

उपन्यास :

'गुनाहों का देवता' (1949):

गुनाहों का देवता '' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1949 में हुआ था और

यह डॉ. धर्मवीर भारती का प्रथम उपन्यास है। यह एक भावनात्मक प्रेमकथा है जिसमें लेखक ने मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं और संघर्षों को प्रभावशाली और सरस शैली में प्रस्तुत किया है। उपन्यास की मुख्य कथा चंदर और सुधा के प्रेम के इर्द-गिर्द घूमती है। कैलाश जोशी के अनुसार, इस रचना में प्रेम के ऊँचे और पवित्र रूप का चित्रण किया गया है। यह प्रेम ऐसा है जो व्यक्ति के आत्मविकास में सहायक होता है। सहायक कथाओं में पम्मी, बिनती और गेसू जैसे पात्रों के माध्यम से आपसी रिश्तों की उलझनों को उकेरा गया है। चंदर का इन तीनों महिलाओं से किसी न किसी रूप में जुड़ाव दिखाया गया है। कथा को तीन मुख्य भागों में बाँटा गया है और अंत में एक संक्षिप्त उपसंहार दिया गया है। उपन्यास का समापन सुधा की मृत्यु के साथ होता है, जबकि उपसंहार में चंदर द्वारा बिनती को अपनाने की बात कही गई है।

उपन्यास के शीर्षक ''गुनाहों का देवता'' की सार्थकता को सिद्ध करने हेतु लेखक ने पात्रों के संवादों में चंदर के लिए ''देवता'' शब्द का प्रयोग करवाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि वह संसारिक दोषों से अछूता नहीं, फिर भी उसकी आत्मा में एक दिव्यता और नैतिक ऊँचाई विद्यमान है।

'सूरज का सातवां घोड़ा'(1952):

सूरज का सातवाँ घोड़ा '' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1952 में हुआ था, और यह डॉ. धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास माना जाता है। यह उपन्यास हिंदी साहित्य में अपने विशिष्ट प्रयोगात्मक शिल्प के कारण विशेष स्थान रखता है। इसकी रचना शैली पारंपरिक उपन्यासों से भिन्न है, क्योंकि इसमें कथा कहने की एक अलग संरचना और ढंग अपनाया गया है। यह एक शिल्पप्रधान रचना है, जिसमें लेखक ने मध्यम वर्ग के जीवन के यथार्थ पक्षों को उभारने के लिए प्रेम कहानियों का माध्यम चुना है।

कहानी की शुरुआत ''पहली दोपहर'' से होती है और यह ''सातवीं दोपहर'' तक क्रमशः आगे बढ़ती है। उपन्यास का मुख्य पात्र माणिक मुल्ला है, जो एक असफल प्रेमी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसके जीवन में तीन स्त्रियाँ-जमुना, लिली और सत्ती-प्रेम के रूप में आती हैं, लेकिन वह किसी के भी प्रेम को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाता। ''सातवीं दोपहर'' की जो कथा है, वही इस उपन्यास का सार है-''सूरज का सातवाँ घोड़ा''-जो प्रतीकात्मक

रूप से उस आशा, स्वप्न और आदर्श की ओर संकेत करता है, जो मनुष्य के भीतर भविष्य के प्रति एक उजाले की आकांक्षा को जीवित रखता है। उपन्यास के शीर्षक में प्रयुक्त ''सात घोड़े'' सूर्य के प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, और यह कथा सात दिन चलने का यही कारण है।

इस उपन्यास को लेकर अज्ञेय का कथन है कि ''यह एक ऐसी रचना है जिसमें अनेक कहानियाँ मिलकर एक समग्र कथा की रचना करती हैं। यह केवल व्यक्तिगत प्रसंगों का चित्रण नहीं, बल्कि एक पूरे समाज की सामूहिक अनुभूतियों और जटिलताओं का विश्लेषण है। जिस प्रकार समाज की विविध शक्तियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं, वैसे ही इन कहानियों का आपसी संबंध भी गहरा और बहुआयामी है।''

नाटक एवं एकांकी:

डा. धर्मवीर भारती का एकांकी संग्रह ''नदी प्यासी थी'' वर्ष 1954 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल पाँच एकांकियों को शामिल किया गया है। इनमें से चार एकांकियाँ रंगमंच पर मंचित किए जाने हेतु लिखी गई हैं, जबकि एक विशेष रूप से रेडियो प्रसारण के लिए रची गई है। इन एकांकियों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

1. नदी प्यासी थी
2. नीली झील
3. आवाज़ का नीलाम
4. संगमरमर की एक रात
5. सृष्टि का अखिरी आदमी

इन रचनाओं में धर्मवीर भारती ने जीवन के मूल प्रश्नों, मानवीय संघर्षों और सामाजिक सरोकारों को आस्था और आशावाद की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनके एकांकियों में विचार और संवेदना की गहराई के साथ-साथ भावनात्मक संप्रेषण की सशक्तता भी दिखाई देती है।

''अंधायुग'' डॉ. धर्मवीर भारती की अत्यंत महत्वपूर्ण नाट्य कृति है, जिसका प्रकाशन 1955 में हुआ। इसे कविता और नाटक दोनों विधाओं का संगम कहा जाता है। यह नाटक रंगमंच के लिए लिखा गया है, और इसका

कथानक महाभारत के युद्ध के अंतिम चरण–यानी रण के बाद की परिस्थितियों–पर आधारित है । धर्मवीर भारती की किशोरावस्था से ही उनके भीतर युगचेतना की जागृति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जिसकी सबसे तीव्र अभिव्यक्ति ''अंधायुग'' में हुई है। मूलत: यह नाटक रेडियो प्रसारण के लिए तैयार किया गया था, जिसे बाद में उन्होंने मंचीय स्वरूप प्रदान किया।

''अंधायुग'' का केंद्रीय उद्देश्य है–दर्शकों के मन में नए नैतिक मूल्यों और मानवीय दृष्टिकोणों की चेतना को जागृत करना। यह नाटक केवल अतीत का चित्रण नहीं करता, बल्कि समकालीन समाज को भी आईना दिखाता है।

निबंध:

डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध–साहित्य में उनकी गहन वैचारिकता, संवेदनशील दृष्टिकोण और जीवन के प्रति चिंतनशीलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनके तीन प्रमुख निबंध–संग्रह हैं–ठेले पर हिमालय'', ''पश्यन्ती'' और ''कहनी–अनकहनी''।

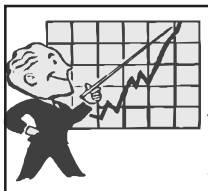
''ठेले पर हिमालय'' (1958) एक बहुआयामी निबंध संग्रह है जिसमें यात्रा–वृत्तांत, संस्मरण, व्यंग्य, श्रद्धांजलियाँ और डायरी अंश आदि विभिन्न शैलियों का समावेश है। इसमें एक मित्र लेखक के माध्यम से हिमालय की स्मृतियों के बहाने जीवन की गहराइयों का संवेदनात्मक चित्रण किया गया है।

''पश्यन्ती'' (1969) में 17 निबंध संकलित हैं जो आत्मकथात्मकता से लेकर समकालीन समाज, इतिहास और व्यक्तित्व पर केंद्रित हैं। ये रचनाएँ 1959 से 1967 के बीच लिखी गईं और भारती के संपूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं।

''कहनी–अनकहनी'' (1970) में 45 संक्षिप्त निबंध हैं जो हास्य–व्यंग्य, सामाजिक और व्यक्तिगत विषयों पर आधारित हैं। इनमें गंभीर चिंतन के साथ विनोद का स्पर्श भी है। इनके अतिरिक्त, ''शाब्दिता'' (1997) भारती की अंतिम रचना है, जो उनके गहरे दार्शनिक विचारों का संकलन है और उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुई थी।

आलोचना: 'प्रगतिवाद' 'एक समीक्षा'(1949), 'मानव मूल्य और साहित्य'(1960)।

पुरस्कार: 'धर्मवीर भारती' जी को सन् 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वे सन् 1967 में 'संगीत नाटक अकादमी' सदस्य बने। सन् 1984 में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा 'हल्दीघाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार' से सम्मानित। 1985 ई. में 'साहित्य अकादमी रत्न सदस्यता' सम्मान, 1986 ई. में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा 'संस्था सम्मान', 1988 ई. में 'संगीत नाटक अकादमी', नयी दिल्ली द्वारा सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार, सन् 1989 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान से सम्मानित, 1989 ई. में 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा' द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, 1989 ई. में 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा भारत भारती पुरस्कार, 1990 ई. में महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'महाराष्ट्र गौरव' सम्मान, 1994 ई. में के. के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा 'व्यास सम्मान', 1997 ई. में अभियान सम्मान संस्थान द्वारा 'उत्तर प्रदेश गौरव' सम्मान आदि।



अपनी प्रगति जाँचे

प्रश्न 1. धर्मवीर भारती को किस वर्ष पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया था?

प्रश्न 2. 'कहनी-अनकहनी' निबंध संग्रह का मूल विषय किया है?

प्रश्न संख्या 3.'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में किस विषय पर चर्चा की गई है ?

9.4 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में धर्मवीर भारती का योगदान

स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य में डॉ. धर्मवीर भारती ने अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की। उन्होंने साहित्य को केवल रचना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे नई दिशा और दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके लेखन की नींव उनके निजी अनुभवों और जीवन में घटित घटनाओं पर आधारित है। जीवन की कठिन परिस्थितियों-जैसे माता-पिता का बचपन में निधन, वैवाहिक जीवन की असफलता-ने उनके साहित्य को भावात्मक गहराई प्रदान की।

घर्मवीर भारती एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। वे पहले एक पत्रकार और संपादक के रूप में प्रसिद्ध हुए, फिर साहित्य की कई विधाओं-कविता, नाटक, उपन्यास, निबंध-में समान रूप से सफलता प्राप्त की। उनका व्यक्तित्व

रोमांटिक प्रवृत्ति का था, जिसका प्रभाव उनकी कृतियों ''कनुप्रिया'' और ''गुनाहों का देवता'' में स्पष्ट देखा जा सकता है। उनके काव्य पर छायावाद का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। भारती जी ने विश्वयुद्धों की त्रासदी को देखा और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। यही अनुभव उनके प्रसिद्ध नाटक ''अंधायुग'' की पृष्ठभूमि बना। उनका अधिकतर जीवन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन सीखने की जिजीविषा ने उन्हें साहित्य के शिखर तक पहुँचाया।

''गुनाहों का देवता'' में चंदर के माध्यम से उन्होंने युवा अवस्था की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। यह स्थिति लेखक स्वयं की भी थी, जिससे चंदर और भारती के अनुभव एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। इसी तरह, ''सूरज का सातवाँ घोड़ा'' में कथावाचक माणिक मुल्ला का चरित्र भी स्वयं लेखक के व्यक्तित्व के काफी करीब प्रतीत होता है। धर्मवीर भारती एक मानवतावादी, समाजोन्मुख, संवेदनशील और मौलिक साहित्यकार थे। उन्होंने जितना लिखा, वह मात्रा में भले ही सीमित हो, परंतु उसकी गुणवत्ता और प्रभाव अत्यंत गहन और स्थायी है।

9.5 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथा इलाहाबाद शहर की है। इस उपन्यास का नायक 'चंद्रनाथ कपूर' है। 'चंदर' सौतेली माँ से परेशान होकर इलाहाबाद आ जाता है और इलाहाबाद में उसका परिचय डॉ. शुक्ला से होता है और डॉ. शुक्ला अपने घर के सदस्य के रूप में पालन-पोषण करते हैं। 'चंदर' भी उनको सम्मान करता था। 'डॉ. शुक्ला की बेटी का नाम है सुधा। बचपन में ही 'सुधा' की माँ मर गयी थी। अब 'सुधा' पर सिर्फ 'चंदर' का नियंत्रण था। दोनों एक दुसरे के बिना नहीं रह सकते थे। हम इस प्रकार भी कह सकते हैं दो शरीर एक जान। 'सुधा' कॉलेज में पढ़ती थी। उसकी दोस्त 'गेसू' थी। 'सुधा' भोली थी, पर 'गेसू' समझदार। 'गेसू' धीरे-धीरे समझ रही थी 'सुधा' के मन में पल रहे प्रेम को।

'सुधा' और 'चंदर' के बीच जो संबंध था, उसका कोई नाम नहीं दिया जा सकता था। वे खुद भी नहीं जानते थे। ऐसे ही दिन कट रहे थे, पर एक

दिन 'सुधा' के घर उसकी बुआ और उनकी बेटी बिनती आयी। 'सुधा' की माँ की देहांत के बाद वह बुआ के साथ ही रह रही थी। बुआ विधवा थी। बुआ डॉ. शुक्ला से 'सुधा' की शादी के बारे में बतायी और 'सुधा' की उम्र भी हो गयी थी। डॉ. शुक्ला 'सुधा' की शादी के लिए राजी हो गए, पर 'सुधा' उत्साही न थी। इसलिए 'सुधा' को मनाने का काम 'चंदर' को सौंपा गया। 'चंदर' जब शादी के बारे में 'सुधा' को पूछता है तो वह मना कर देती है। 'चंदर' सुधा को बहुत समझाने के बाद मजबूरन मान जाती है और कैलाश मिश्र से शादी कर लेती है। इस प्रकार 'सुधा' सारी इच्छाओं को अंदर ही दफन कर लेती है।

'सुधा' की शादी के बाद 'चंदर' में धीरे-धीरे बदलाव आता है। अपनी मित्र 'पम्मी डिक्रूज' आकर्षित होता है और 'सुधा' को भूलकर पम्मी की वासना के जाल में फंस जाता है।

एक दिन 'सुधा' की सहेली गेसू चंदर को उसके प्रति सुधा की प्रेम के बारे में बताती है, तो उसे अपने पर ग्लानि होती है। फिर धीरे-धीरे वह पम्मी से दूर हो जाता है और पम्मी भी अपने पति के पास चली जाती है। फिर एक दिन जब 'सुधा' और उसका पति घर आते हैं, तो चंदर सुधा को देखकर दुखी हो जाता है; क्योंकि 'सुधा' पहले जैसी नहीं थी, उसको बीमार ने जकड़ रखा था। अब 'चंदर' फिर 'सुधा' के साथ जीने-मरने का सपना देखता है। वह फिर से पवित्र बन जाता है।

एक दिन 'चंदर' को दिल्ली जाने का बुलावा आता है। दिल्ली जाने के बाद 'चंदर' को पता चलता है कि 'सुधा' की हालत बहुत गंभीर है। वह 'सुधा' की हालत देखकर चिंतित हो उठता है। 'सुधा' चंदर को पास में पाकर खुश हो जाती है और पास बुलाकर बैठने के लिए बोलती है। उसके बाद 'सुधा' का सिर चंदर की बाँह में लुड़क जाता है और इस प्रकार 'सुधा' इस दुनिया से विदा लेती है।

समीक्षा: 'गुनाहों का देवता' धर्मवीर भारती का पहला उपन्यास है। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 'धर्मवीर भारती' इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं- ''मेरे लिए इस उपन्यास का लिखना वैसा ही रहा है जैसा पीड़ा के क्षणों में पूरी आस्था से प्रार्थना करना और इस समय भी मुझे ऐसा लग रहा है। जैसे मैं वह प्रार्थना मन-ही-मन दोहरा रहा हूँ, बस?''



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 4. 'धर्मवीर भारती' का सामान्य परिचय दीजिए।

प्रश्न 5. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

प्रस्तुत उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन की कथा कहता है। ''गुनाहों का देवता' के शीर्षक के साथ मध्यमवर्गीय जीवन की कहानी लिखने में लेखक ने संकोच नहीं किया है और आगे यह भी कहा है एक ऐसी ही खुशनुमा सुबह थी और जिसकी कहानी मैं कहने जा रहा हूँ, वह सुबह से भी ज्यादा मासूम युवक... तो यह कहानी एक व्यक्ति की भी है और मध्यमवर्गीय जीवन की भी है।''

'गुनाहों का देवता' उपन्यास के माध्यम से धर्मवीर भारती ने जिस सामाजिक संस्कृति का चित्रण किया है, वह समाज, वह संस्कृति मध्यवर्गीय जीवन की है। जाति, धर्म, संस्कृति और संस्कार के नाम पर किनते ही प्रेमी-प्रेमिका को प्रेम और जीवन से हाथ धोना पड़ता है, उसका ज्वलंत उदाहरण है 'गुनाहों का देवता'।



9.6 सारांश

'धर्मवीर भारती' के दो उपन्यास हैं- 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'। दोनों ही उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय है। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में भारती जी ने मनोविश्लेषण शैली का उपयोग किया है, जबकि 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में भारती जी ने शिल्प और शैली अनूठा प्रयोग किया है। प्रस्तुत इकाई में हमने 'धर्मवीर भारती' का जीवन परिचय के अतिरिक्त 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु और इस उपन्यास की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत की है।

'धर्मवीर भारती' हर विधा में लिखा। कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, अनुवाद, संपादक आदि प्रत्येक क्षेत्र में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। भारती जी ने मानव समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया, यही कारण है उनकी रचनाओं का विषय लौकिक, सामाजिक और मानवीय है। ''डॉ. भारती ने अपने समस्त चिन्तन में, साहित्य क्षेत्र में लौकिक, मानवीय, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारधारा को प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने साहित्य हेतु तथा रचना प्रक्रिया के

सन्दर्भ में प्रतिभा अथवा अन्य किसी भी मानव जीवन से असम्पृक्त, आरोपित अलौकिक शक्ति को स्वीकार नहीं किया है। साहित्य-प्रयोजन के क्षेत्र में भी उन्होंने मानव जीवन के सौन्दर्य तथा उत्कृष्टता पर ही बल दिया है। साहित्य स्वरूप सम्बन्धी अपनी धारणाओं में पहली बार उन्होंने विशेषकर अन्य देश की राजनीतिक, सांस्कृतिक परम्पराओं का बोझ ढोने से इन्कार कर स्वतन्त्र चिन्तन का परिचय दिया है। भारती जी उन रचयिताओं में से है, जिनमें नये को, आधुनिक और सामयिक को ग्रहण करने में झिझक नहीं है, परन्तु मन में परम्परा से अपने सम्बन्ध के तलाश की प्रक्रिया एक गहरे वैचारिक और भावनात्मक स्तर पर अनिवार्य रूप से चलती रहती है और रचनाओं के माध्यम से व्यक्त होती रहती है।''

9.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: सन् 1972 में धर्मवीर भारती को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया था।

प्रश्न 2 का उत्तर: उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर: उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 4 का उत्तर: 'भारती' जी की शिक्षा की प्रारंभ घर पर हुई, उसके बाद चौथी कक्षा में डी. ए. वी. स्कूल में भर्ती हुआ; जब वे आठवीं कक्षा में थे, तब उनके पिताजी का देहांत हो गया। बीच में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। अधिक जानने के लिए 'उपन्यासकार धर्मवीर भारती का परिचय' को ध्यानपूर्वक पढ़े।

प्रश्न 5 का उत्तर: 'गुनाहों का देवता' धर्मवीर भारती का पहला उपन्यास है। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 'धर्मवीर भारती' इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं- ''मेरे लिए इस उपन्यास का लिखना वैसा ही रहा है जैसा पीड़ा के क्षणों में पूरी आस्था से प्रार्थना करना और इस समय भी मुझे ऐसा लग रहा है। जैसे मैं वह प्रार्थना मन-ही-मन दोहरा रहा हूँ, बस?'' अधिक जानने के लिए पढ़ें 'गुनाहों का देवता उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा'।



9.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- भारती, धर्मवीर. (1949/2019). गुनाहों का देवता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- वर्मा, शैलेंद्र. (2001). गुनाहों का देवता- एक पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य सदन।
- शर्मा, राकेश. (2012). भारती और गुनाहों का देवता: एक आलोचनात्मक दृष्टि. भोपाल: शोध प्रकाशन।
- मिश्रा, प्रीति. (2018). गुनाहों का देवता: पात्र और भाषा-शैली का विश्लेषण. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन।
- सिंह, नरेन्द्र. (1992). धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य. नई दिल्ली: किताब महल।
- मिश्र, अशोक. (2004). धर्मवीर भारती- आलोचना और पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- शुक्ल, विजय. (2010). भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड।
- चौबे, रमेश. (2015). धर्मवीर भारती के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन. लखनऊ: प्रकाशन संस्थान।
- अग्रवाल, विनय. (2021). गुनाहों का देवता का पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली: साहित्य संगम।
- त्रिपाठी, सीमा. (2023). गुनाहों का देवता: प्रेम और सामाजिक यथार्थ. लखनऊ: नवभारत प्रकाशन।

9.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. धर्मवीर भारती द्वारा संपादित दो पत्रिकाओ का नाम उल्लेख कीजिए।
2. धर्मवीर भारती की किन्हीं चार कविता संग्रह का नाम उल्लेख कीजिए।

3. 'ठेले पर हिमालय' निबंध संग्रह के विविध निबंधों में किस विषय पर चर्चा की गई है?
4. 'अंधायुग' नाटक की कथानक किस पौराणिक कथा से सम्बंधित है?
5. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख चार पात्रों के नाम लिखिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. 'धर्मवीर भारती' का सम्पूर्ण परिचय लिखिए।
2. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु पर विचार कीजिए।
3. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।
4. 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में धर्मवीर भारती का योगदान' विषय पर आलेख प्रस्तुत कीजिए।
5. धर्मवीर भारती द्वारा रचित नाटकों की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।

******

इकाई-10 : गुनाहों का देवता (भाग-II)

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 गुनाहों का देवता उपन्यास की मूल संवेदना और उद्देश्य

10.4 गुनाहों का देवता उपन्यास में संघर्ष के विविध आयाम

10.5 गुनाहों का देवता उपन्यास में मूल्यबोध

10.6 सारांश

10.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

10.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

10.9 अभ्यास प्रश्न

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- 'गुनाहों की देवता' उपन्यास की मूल संवेदना के बारे में जानेंगे।
- इस उपन्यास के उद्देश्य से परिचय प्राप्त करेंगे।
- उपन्यास में चित्रित संघर्ष के विविध आयामों से परिचित होने में सक्षम होंगे।
- उपन्यास में परिवर्तित मूल्यबोध से अवगत हो सकेंगे।
- उपन्यास में चित्रित मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने में सफल होंगे।

10.2 प्रस्तावना

उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि विविध परिस्थितियों के चित्रण में सबसे महत्वपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। उपन्यासों के द्वारा मानव जीवन का सम्पूर्ण चित्रण संभव है। ''उपन्यास में जीवनगत सत्य की पूर्ण अवतारणा होती है। उपन्यास में मानव जीवन का तटस्थ वर्णन मिल जायेगा, जीवन की आलोचना के दर्शन हो जाएंगें और भावी जीवन निर्माण के लिए कलात्मक सुझावों द्वारा संकेत मिल जाएंगे। हम समाज में कई कुरीतियों या

बातों को होते प्राय: देखते हैं, अनुभव करते हैं, पर कह नहीं पाते। स्पष्ट चिन्तन का भाव अभिव्यक्ति में बाधा बनता है, पर उपन्यास में इन सबका सच्चा वर्णन देख सकते हैं।''

डॉ. धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख और लोकप्रिय रचनाकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखन-प्रतिभा का सफल परिचय दिया है। वे अनुवाद-कला के भी जानकार और संवेदनशील कलाकार हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध- इन सभी साहित्यिक रूपों को उन्होंने अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उन्होंने एक विशिष्ट और प्रभावशाली स्थान अर्जित किया है।

भारती का समग्र साहित्य मूल्यों से परिपूर्ण है। वे परंपरागत सामाजिक मूल्यों को चुनौती देने का प्रयास करते हैं, हालांकि इस दिशा में उन्हें पूर्ण सफलता नहीं मिल पाई है। वे एक ऐसे साहित्यकार हैं जो मानवीय गरिमा और आत्म-मर्यादा की स्थापना के लिए सतत प्रतिबद्ध हैं। उनके भीतर आस्था की गहराई विद्यमान है और वे अंतर्मन की पुनर्स्थापना की तीव्र आकांक्षा रखते हैं।

भारतीय समाज की विकृत परंपराएँ, सामाजिक कुरीतियाँ और नैतिक पतन उन्हें गहराई से आहत करते हैं। इसी पीड़ा के अनुभव से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी रचनाओं में इन असंगतियों के विरुद्ध आवाज उठाई है। वे यथार्थ के त्रासदीपूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हुए भी आशा की एक किरण बनाए रखते हैं। यही कारण है कि उनकी अधिकांश सृजनात्मक रचनाओं का समापन एक आशावादी दृष्टिकोण के साथ होता है । प्रत्येक साहित्यकार किसी न किसी उद्देश्य से साहित्य रचते हैं। इसी को ध्यान में रखकर हम प्रस्तुत इकाई में 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की मूल संवेदना और इस उपन्यास के उद्देश्यों पर विचार करेंगे।

10.3 गुनाहों का देवता उपन्यास की मूल संवेदना और उद्देश्य

'गुनाहों का देवता' उपन्यास के माध्यम से 'धर्मवीर भारती' ने एक आदर्शवादी प्रेम का चित्रण किया है और ये चित्रण मनोवैज्ञानिक है। अत: हम कह सकते हैं यह उपन्यास प्रेम पर आधारित है। इस उपन्यास का नायक 'चंदर' और नायिका 'सुधा' है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। इलाहाबाद शहर का

मनोरम चित्रण इस उपन्यास में मिलता है, जिसमें मनुष्य, प्रकृति, सौंदर्य, यथार्थ, समाज सब विद्दमान है। ''गुनाहों का देवता' का पहला इलाहाबाद का भास्वर चित्र ही लेखक की समग्र जीवन दृष्टि का बोध कराता है। जिसमें प्रकृति और मनुष्य नगर और गाँव, समाज और व्यक्ति, रोमान और यथार्थ, सौन्दर्य और वास्तविकता, गम्भीरता और मज़ाक एक साथ सारे भाव में विद्यमान है। इसमें कुछ किशोरवयी भावुकता भी है परन्तु अनुभव की प्रक्रिया में है, परिणाम में नहीं।



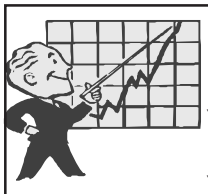
महत्वपूर्ण बिंदु-

- धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' एक गहन भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कृति है, जिसमें प्रेम, त्याग और सामाजिक परंपराओं के विरुद्ध संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है। चंदर और सुधा का संबंध एक ऐसे प्रेम का प्रतीक है जो केवल पाने की इच्छा नहीं, बल्कि त्याग की महानता को दर्शाता है। यह प्रेम सामाजिक नियमों, जातिगत पूर्वाग्रहों और मध्यवर्गीय रूढ़ियों की दीवारों से टकराता है, किंतु फिर भी आदर्श की भूमि पर टिके रहने का प्रयास करता है।
- उपन्यास में प्रेम और वासना के बीच चलने वाला मानसिक संघर्ष पात्रों की आंतरिक जटिलताओं को उजागर करता है। चंदर का आत्मसंघर्ष, सुधा का भावनात्मक समर्पण, और पम्मी की आधुनिक सोच ये सभी समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य को सामने लाते हैं। उपन्यास आधुनिक शिक्षित मध्यवर्ग की उस मानसिकता की पड़ताल करता है जो एक ओर नैतिकता की दुहाई देती है, तो दूसरी ओर भावनाओं को समझने में असमर्थ रहती है।

सहज, सरल, भावुकता और करुण कहानी के कारण यह उपन्यास कालजयी बन गया है। सामाजिक समस्याओं तथा विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से 'धर्मवीर भारती' ने परंपरागत विवाह प्रथा पर भी चोट किया है। 'राजेन्द्र यादव' ने इस उपन्यास को रसात्मक और एक सफल कृति के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार

इस उपन्यास में पीड़ा भी है और रस भी। वे लिखते हैं- ''इसे स्वीकार करने में किसी को तनिक भी हिचक नहीं है कि गुनाहों का देवता एक पूर्ण रसात्मक और सफल कृति है। इसमें अनुभूतियाँ है जो जितनी रसमयी है, उतनी ही पुरदर्द भी; परिस्थितियाँ है, जो एक मधुर पीड़ा युक्त छाप हृदय पर छोड़ चलती है; शैली है जो प्राणों का स्पन्दन बनकर उमड़ती चलती है; चरित्र है जो प्रारंभ से ही पाठक की चेतना पर एक अदभूत कुहल की भाँति हो जाते हैं और सबसे ऊपर उपन्यास है। जो समाप्त करने पर एक दीर्धश्वास बलात बाहर निकाल लेता है।''

इस उपन्यास के माध्यम से 'धर्मवीर भारती' ने मध्यवर्गीय सामाजिक और पारिवारिक आदि विभिन्न पक्ष को सफलतापूर्वक चित्रण किया है, जिसमें समाज और संस्कृति का व्यक्ति विशेष पर प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इस उपन्यास में नायिका 'सुधा' का अंत में देहांत हो जाता है, इस कारण इस उपन्यास को 'प्रेम की ट्रेजेडी' भी कहा जाता है। पुष्पा भारती 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के बारे में लिखती है- ''इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुनाहों का देवता प्रेम का नया समाज शास्त्र है। इस शास्त्र का रूप घोर आक्रमक है और उसने परम्परागत विवाह-व्यवस्था पर करारी चोट की है। आरंभ में ही मिस डीक्रोज के द्वारा एक मार्मिक बात कहलवायी जाती है %शादी अपने को दिया जाने वाला सबसे बड़ा धोखा। ऐसे धोखे की ओर कच्ची आयु के भोले-भावुक नादान प्रेमी वासनारहित निर्मल प्रेम लिए पूरे उल्लास के साथ बढ़ते तो हैं, परन्तु एक सीमा पर पहुँच जो चतुर्दिक विद्रोह-विस्फोट होता है, वही यथार्थ का केन्द्रीय मर्म होता है।''



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 1. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 2.पुष्पा भारती ने 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के समबन्ध में किस प्रकार का मत प्रकट किया था?

प्रश्न 3.'गुनाहों का देवता' उपन्यास के नायक और नायिका का नाम उल्लेख कीजिए।

प्रस्तुत उपन्यास भावात्मक और मार्मिक है। इस उपन्यास के नायक-नायिका भावुक है और इस भावुकता के कारण दोनों की जिंदगी अंत में बिखर जाती है। इस उपन्यास के माध्यम से भारती जी ने नैतिकता का सवाल भी उठाया है। राजपाल हुकुमचंद इस उपन्यास का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं- ''गुनाहों का देवता एक तथाकथित आदर्शोन्मुख यथार्थवादी समाजिक उपन्यास है। इसमें भारती जी ने मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त समस्याओं का विस्तृत एवं मनोरम ढंग से निरूपण किया है। प्राय: सभी पात्र इसी वर्ग से संबंधित हैं तथा संबंधों को अपने-अपने ढंग से बनाए हुए हैं। चन्दर (चन्द्रकुमार कपूर) का तथा सुधा का पारस्परिक संबंध उपन्यास के प्रारम्भ से अंत तक बना रहता है। वस्तुत: लेखक का मन्तव्य पुरुष और नारी के पारस्परिक बाह्य संबंधों के साथ ही उनके अन्तस को परखने का उपक्रम रहा है। पुरुष-स्वभाव की विभिन्नता पर कम और नारी-स्वभाव की विविधता प्रस्तुत उपन्यास की उपलब्धि कही जा सकती है।''

10.4 गुनाहों का देवता उपन्यास में संघर्ष के विविध आयाम

धर्मवीर भारती के कथा-साहित्य में व्यक्ति, परिवार और समाज जीवन्त रूप में उभरकर सामने आती है। ये तत्व न केवल उनकी रचनाओं की आधारभूमि हैं, बल्कि उनके साहित्य को जीवंतता और प्रामाणिकता भी प्रदान करते हैं। श्रेष्ठ साहित्य वही होता है जिसमें पात्र सजीव प्रतीत हों, पारिवारिक ताने-बाने में संवेदनाओं की गहराई हो, और समाज अपने समस्त विरोधाभासों, जटिलताओं और संघर्षों के साथ प्रस्तुत हो। भारती ने अपने जीवन में आर्थिक संघर्षों को नज़दीक से महसूस किया था, जिसका प्रभाव उनके लेखन में स्पष्ट झलकता है। 'गुनाहों का देवता' उनके साहित्य की पहली कड़ी है जो केवल एक प्रेम कथा न होकर व्यक्ति, परिवार और समाज की गहन पड़ताल भी करती है। उपन्यास के पात्र जैसे चन्दर और सुधा, केवल मुख्य पात्र नहीं हैं, बल्कि उनके इर्द-गिर्द का सामाजिक परिवेश, परिवार के सदस्य और अन्य सामान्यजन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दूबे जी, जो अशिक्षित हैं, लेकिन उनके विचारों में मानवीय समानता और सरलता दिखाई देती है। हाथरस स्टेशन के सेठ-सेठानी या सुधा की बुआ जैसे

पात्र अशिक्षित, रुढ़िवादी और सीमित सोच के बावजूद समाज की एक बड़ी सच्चाई को दर्शाते हैं। बुआ का चरित्र विशेष रूप से ग्रामीण समाज की संकीर्ण सोच और स्त्रियों की स्थिति को दर्शाता है-जहाँ लड़की की जल्दी शादी, पर्दा प्रथा और स्त्री के अधिकार गौण समझे जाते हैं। भारती ने इन पात्रों के माध्यम से दिखाया है कि साहित्य केवल कल्पना नहीं, समाज का दर्पण भी होता है-जिसमें व्यक्ति की गहराई, परिवार का संघर्ष और समाज की वास्तविकताएँ पूरी सच्चाई से परिलक्षित होती हैं।

1. वर्गीय आधार पर पात्रों की संरचना

भारती के कथा-साहित्य में समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व मिलता है, लेकिन 'गुनाहों का देवता' विशेष रूप से उच्च मध्यवर्गीय परिवेश के जीवन को सामने लाता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र-चन्दर, सुधा, डॉक्टर शुक्ला, कैलाश, गेसू, पम्मी और बिनती-सभी उसी वर्ग से सम्बंधित हैं, जिनकी सामाजिक चेतना रुढ़ियों, संकोच और प्रतिष्ठा के दायरे में बंधी हुई है। सुधा जैसे पात्र की संकोचपूर्ण प्रवृत्तियाँ - जैसे बिना चन्दर के लाइब्रेरी न जाना या बाजार न जाना - मध्यवर्गीय लड़कियों की पारिवारिक परवरिश और उनकी सामाजिक भूमिका की सीमाओं को दर्शाती हैं। विवाहोपरांत भी सुधा अपने पति के साथ नौकरों के सामने नहीं बैठती, जो मध्यवर्गीय संस्कारों में बुजुर्ग सेवकों के प्रति आदर के भाव को दिखाता है।

2. पुरुष प्रधान मानसिकता और स्त्री की सामाजिक सीमाएँ

डॉ. शुक्ला जैसे शिक्षित पात्र भी अपनी बेटी के लिए ट्यूशन नियुक्त करते समय उसकी सुरक्षा को लेकर अत्यधिक चिंतित रहते हैं। यह इस बात का द्योतक है कि शिक्षित समाज भी अपनी बेटियों की स्वतंत्रता और सुरक्षा को लेकर अत्यधिक सजग रहता है, कभी-कभी सीमा लांघकर। इसी तरह, जब सुधा की शादी की बात आती है, तो जातिगत शुद्धता को प्राथमिकता दी जाती है। डॉक्टर शुक्ला के विचारों से स्पष्ट है कि जाति की दीवारें अभी भी मानसिक रूप से मजबूत हैं-''विभिन्न जातियों के रीति-रिवाजों में अंतर होने से लड़की संतुलन नहीं बना पाएगी''-यह कथन उस मानसिकता को उजागर करता है जो सामाजिक संतुलन की आड़ में स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी पसन्द को नकार देती है।

3. चन्दरः मध्यवर्गीय मानसिकता का प्रतिनिधि

चन्दर का चरित्र भावनात्मकता, आदर्शवाद और रुढ़िवादिता का संगम है। वह एक ओर भावनात्मक प्रेम की ऊँचाइयों में जीना चाहता है, तो दूसरी ओर स्त्री की स्वच्छंदता को स्वीकार नहीं कर पाता। उसे सुधा का अकेले घूमना, सह-शिक्षा में पढ़ना और होस्टल में रहना अस्वीकार्य लगता है। वह सुधा से प्रेम करता है, लेकिन विवाह की बात आते ही पीछे हट जाता है। उसकी यह मानसिकता न केवल भावनात्मक पलायन है, बल्कि समाज के नैतिक जाल में फंसे एक आधुनिक युवक की विवशता को भी दर्शाती है।

4. स्त्री पात्रों का वर्गीय और सामाजिक चित्रण

उपन्यास की स्त्रियाँ सुधा, गेसू, पम्मी और बिनती सभी किसी-न-किसी सामाजिक दबाव या मानसिक बंधन से बंधी हुई हैं। गेसू भले ही आधुनिक हो, परन्तु उसकी पोशाक और उपस्थिति में एक सजगता है जो सामाजिक स्वीकृति पाने के लिए आवश्यक बन चुकी है। पम्मी, जो तलाकशुदा और ईसाई पृष्ठभूमि की है, समाज द्वारा खारिज की गई स्त्री है, जो अपनी स्वतंत्रता की कीमत अकेलेपन से चुकाती है। वहीं बिनती जो कि गाँव से आई है अशिक्षित और रुढ़िवादी माँ की उपेक्षा झेलती हुई एक कोमल, संवेदनशील युवती बनती है। सुधा के साथ रहकर उसमें भी जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण आता है, लेकिन सामाजिक संरचना उसे भी आत्मनिर्भर नहीं बनने देती।

5. ग्रामीण बनाम नगरीय जीवन का द्वंद्व

उपन्यास में जहाँ एक ओर इलाहाबाद जैसे शिक्षित शहर की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर गाँव की रुढ़ियाँ, खान-पान, और सोच भी उतनी ही प्रमुखता से दिखाई गई हैं। सुधा जब गाँव से लौटती है तो उसमें ग्रामीण जीवन की सहजता और उग्रता दोनों होती हैं वह दूधिया चाय को पसंद करती है, कम घी वाली सब्जी पर नाराज़ हो जाती है। वहीं उसकी बुआ, जो पूरी तरह अशिक्षित और परंपरावादी हैं, पर्दा प्रथा, जाति-ब्याह और स्त्री की मर्यादा को अत्यधिक महत्व देती हैं। सुधा की शादी बिना घूँघट के होते देख वे बिफर पड़ती हैं -''हमारी लड़की कोई ऐसी-वैसी नहीं...'-यह प्रतिक्रिया ग्रामीण मानसिकता की गहराई को दर्शाती है।

6. प्रेमः भावना बनाम वासना का संघर्ष

'गुनाहों का देवता' प्रेम के इंद्रधनुषी रंगों से सजा हुआ उपन्यास है, लेकिन यह प्रेम एक आदर्श और वासना के द्वंद्व में लगातार झूलता रहता है। चन्दर और सुधा का प्रेम आत्मिक है, जहाँ शरीर गौण और भावना प्रमुख है। लेकिन जब सुधा विवाह बंधन में बंध जाती है, तब चन्दर का मानसिक संतुलन डगमगाने लगता है। वह पम्मी की ओर आकर्षित होता है, और वहाँ उसकी दमित वासना को तृप्ति मिलती है। पम्मी स्वयं एक स्वतंत्र विचारों की युवती है, परन्तु वह भी उस समाज में खुद को पवित्रता की आड़ में सुरक्षित करना चाहती है। वह कहती है – ''तुम्हारी आँखों में भूख नहीं थी... तुमने मुझे पवित्रता दी।'' यह कथन बताता है कि शारीरिक संबंधों की स्वीकृति भी तभी मिलती है जब उसमें 'भावना' की झलक हो।

7. विवाह : सामाजिक संस्था या बाध्यकारी व्यवस्थाः

उपन्यास में विवाह एक प्रमुख सामाजिक संस्था के रूप में मौजूद है, लेकिन इसके प्रति पात्रों का दृष्टिकोण विरोधाभासी है। सुधा, पम्मी, चन्दर और बिनती –चारों विवाह को लेकर संशय में हैं। सुधा कहती है– ''हम शादी नहीं करेंगे, पापा का ध्यान कौन रखेगा।'' पम्मी कहती है –''अगर यह संस्था हट जाए तो कितना अच्छा हो।'' बिनती तो कहती है –''जहर दे दीजिए मामा जी, पर मैं शादी नहीं करूंगी।'' ये संवाद इस बात की पुष्टि करते हैं कि विवाह अब केवल धार्मिक या सामाजिक बंधन नहीं रहा, बल्कि एक बोझ बनता जा रहा है, विशेषकर मध्यवर्ग की युवतियों के लिए।

8. जाति व्यवस्था और विवाह में असमानता

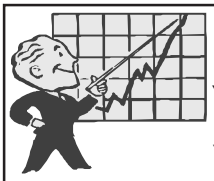
डॉ. शुक्ला जैसे शिक्षित व्यक्ति भी अंततः जाति के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाते। जब चन्दर और सुधा के संबंध की बात आती है, तो वे इसे सामाजिक व्यवस्था के लिए असंतुलन मानते हैं। उनके अनुसार, अलग जातियों का विवाह व्यवस्था को विकृत कर सकता है। यह सोच दर्शाती है कि शिक्षा और आधुनिकता के बावजूद जातिगत पूर्वग्रह आज भी समाज के रीढ़ में समाए हुए हैं।

9. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण : दमित इच्छाएँ और सामाजिक बंधन

धर्मवीर भारती के इस उपन्यास में फ्रायडीय मनोविश्लेषण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। चन्दर का चरित्र अचेतन स्तर पर काम और प्रेम

के द्वंद्व से जूझता रहता है। फ्रायड के अनुसार, दमित इच्छाएँ मनुष्य के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। चन्दर के साथ भी यही होता है–जब वह सुधा के लिए अपने प्रेम को दबा देता है, तो यह भावना पम्मी के साथ उत्पन्न होता है ।

धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य में ऐसे साहित्यकार हैं जिनके लेखन में समाज की बदलती चेतना, भावनात्मक जटिलताएँ और वर्गीय अन्तर्विरोध अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत हुए हैं। विशेषत: उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में नगरीय मध्यवर्ग के जीवन, प्रेम, विवाह, जाति, रुढ़ियाँ और मानसिक द्वंद्व का बहुआयामी चित्रण मिलता है। यह उपन्यास न केवल प्रेम का गहन भावनात्मक दस्तावेज है, बल्कि मध्यवर्गीय समाज की संरचना और उसकी मानसिकता को भी अत्यंत सूक्ष्मता से उजागर करता है।



अपनी प्रगति जांचे

प्रश्न 4. राजेन्द्र यादव ने 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के सम्बन्ध में क्या कहा था?

प्रश्न 5. 'शादी अपने को दिया जाने वाला सबसे बड़ा धोखा। ''–यह कथन किस पात्र का है?

10.5 गुनाहों का देवता उपन्यास में परिवर्तित मूल्यबोध

डॉ. धर्मवीर भारती ऐसे साहित्यकार हैं, जिनकी मानवीय मूल्यों में अटूट आस्था रही है। गुनाहों का देवता उनके इसी मूल्यनिष्ठ दृष्टिकोण का सशक्त प्रमाण है। इस उपन्यास में जब कुछ पात्र नैतिकता की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, तो भारती अपनी नैतिक चेतना के माध्यम से उन्हें नियंत्रित करते हैं। सुधा और चन्दर के बीच पवित्र प्रेम है, लेकिन सामाजिक मर्यादाओं के पालन हेतु सुधा, चन्दर को छोड़कर कैलाश से विवाह कर लेती है।

जब सुधा को एकांत में अपमानित किए जाने की आशंका होती है, तब वह अपने पतिव्रता धर्म की दृढ़ता से रक्षा करती है। वहीं, पम्मी जैसी स्वतंत्र जीवन जीनेवाली स्त्री अंतत: यह महसूस करती है कि एक पत्नी के रूप में नारी का गौरव अधिक सुरक्षित है, और वह अपने पति के पास लौट जाती है। चन्दर, जो भावना और वासना के द्वंद्व में उलझा होता है, अंत में एक शुद्ध और नैतिक जीवन की प्रतीक विनती से विवाह करता है।

घर्मवीर भारती, एक ओर जहाँ जर्जर और सड़ चुकी सामाजिक मान्यताओं की आलोचना करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे नये और सुदृढ़ मूल्यों की स्थापना की ओर भी प्रेरित करते हैं। वे डॉ. शुक्ला के माध्यम से यह विचार प्रकट करते हैं कि ''यह जात-पात, विवाह जैसी परंपराएँ अब बहुत ही खराब हो चुकी हैं। इन्हें समाप्त कर देना चाहिए।'' इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि भारती सड़ी-गली परंपराओं को नकारते हैं और एक नवीन, अधिक मानवीय समाज की कल्पना करते हैं।

फिर भी, वे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को पूरी तरह नकारते नहीं, बल्कि उनमें नयापन भरकर उन्हें बनाए रखने की आकांक्षा रखते हैं। डॉ. हुकुमचंद राजपाल का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि-''भले ही इस उपन्यास की बाहरी सतह पर मूल्यों का विघटन दिखता हो, लेकिन इसमें मूल्यबोध, संकटबोध और आधुनिकता का गहन चित्रण मौजूद है।'' इन सबके मूल में भारती की आस्था स्पष्ट झलकती है, जो परंपरा और युगानुकूल दृष्टि के संतुलन को प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज एक गहरे परिवर्तन और मानसिक द्वंद के दौर से गुजर रहा है। इस परिवर्तनशील समय में जहाँ एक ओर व्यक्ति स्वयं को असमंजस और द्विविधा में घिरा पाता है, वहीं साहित्यकार भी सामाजिक विसंगतियों के मध्य नए सृजन की संभावनाओं को तलाश रहा है। ऐसी ही संक्रांति की पृष्ठभूमि में धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' प्रस्तुत होता है, जो न केवल एक कोमल प्रेमकथा है, बल्कि सामाजिक मूल्यों, रुढ़ियों और आन्तरिक टकरावों की पड़ताल भी करता है।

यह उपन्यास मूलत: उस संक्रमणशील समाज की अभिव्यक्ति है जहाँ एक ओर परंपरागत मूल्यों की जड़ें अभी तक मजबूत हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक चेतना और मानव स्वतंत्रता की आकांक्षा भी आकार ले रही है। यही कारण है कि उपन्यास में मूल्य विघटन और मूल्य निर्माण की दो समानांतर धाराएँ दिखाई देती हैं। एक ओर सामाजिक बंधनों और रूढ़ मान्यताओं की कसक है, तो दूसरी ओर आत्मा की पुकार, प्रेम की स्वतन्त्रता और नवीन सोच की आवश्यकता का स्वर।

'गुनाहों का देवता की कहानी चन्दर और सुधा के इर्द-गिर्द घूमती है। चन्दर एक होनहार शोध छात्र है, जो डॉ. शुक्ला के मार्गदर्शन में कार्य कर रहा

है। डॉ. शुक्ला उसे न केवल शिष्य के रूप में, बल्कि पुत्रवत स्नेह देते हैं। वहीं सुधा, डॉ. शुक्ला की पुत्री, चन्दर के साथ बचपन से स्नेह में पली-बढ़ी है। यह स्नेह समय के साथ गहरा होता जाता है, परन्तु सामाजिक संबंधों और पारिवारिक दायित्वों की दीवार उन्हें एक-दूसरे से अलग रखने लगती है।

चन्दर और सुधा का प्रेम एक उच्च आदर्श की ओर संकेत करता है, जो केवल शारीरिक आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मिक जुड़ाव है। उनका प्रेम आध्यत्मिक है, जिसमें त्याग और आदर्श की भावना सर्वोपरि है। चन्दर अपने प्रेम को सामाजिक नियमों की बलि चढ़ा देता है, क्योंकि वह मानता है कि परिवार और समाज की मर्यादाओं को तोड़ना उचित नहीं। इसी कारण वह सुधा को विवाह के लिए तैयार करता है, लेकिन किसी और से।

यहाँ धर्मवीर भारती ने उस मानसिक द्वन्द्व को उजागर किया है जहाँ व्यक्ति अपनी भावनाओं को कुचलकर सामाजिक मर्यादाओं के आगे झुक जाता है। चन्दर का चरित्र इसी आन्तरिक संघर्ष का प्रतीक है-एक ओर वह सुधा से प्रेम करता है, दूसरी ओर समाज के तथाकथित नियमों को नकार नहीं पाता। वह सुधा से विवाह न कर पाने की विवशता में बार-बार अपनी अंतरात्मा से संघर्ष करता है।

उपन्यास में सुधा का चरित्र भी अत्यंत सशक्त और भावनात्मक रूप से परिपक्क दिखाया गया है। उसका चन्दर पर विश्वास अटूट है। वह स्वयं को चन्दर के अस्तित्व से जुड़ा हुआ महसूस करती है। परन्तु परिस्थितियाँ उन्हें अलग कर देती हैं। यह जुदाई केवल दो प्रेमियों की नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच चल रहे निरंतर द्वन्द्व की भी प्रतीक बन जाती है। उपन्यास मं। बिनती का प्रसंग, बुआजी की प्रतिक्रियाएँ, चन्दर के विचार उन रूढ़ सामाजिक धारणाओं को चुनौती देते हैं, जो व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना को दबाने का प्रयास करती हैं। धर्मवीर भारती इन सामाजिक रुकावटों को नकारात्मक मानते हैं और ऐसे मूल्य जो व्यक्ति के अनुकूल नहीं, उन्हें त्याज्य मानते हैं।

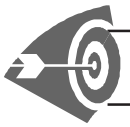
इस प्रकार 'गुनाहों का देवता' एक यथार्थपरक उपन्यास बन जाता है जो समाज की प्रचलित नैतिकता और व्यक्ति की अंतरात्मा के बीच की खाई को उजागर करता है। इसमें पुरानी परंपराओं की जकड़न के विरुद्ध एक मौन विद्रोह है, और आधुनिक चेतना की ओर एक सतत प्रयाण। यह उपन्यास प्रेम, त्याग, सामाजिक विडंबनाओं और मानवीय मूल्यों के मध्य खिंचे संघर्ष की गहन प्रस्तुति है।



10.6 सारांश

'गुनाहों का देवता' एक कालजयी उपन्यास है। उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की भावात्मक प्रेम कथा को 'चंदर' और 'सुधा' के माध्यम से कही गयी है। यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक है।

भारती जी ने समाज में व्याप्त विसंगतियों को, रूढ़ियों को करीब से देखा और भोगा था। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में समाज में व्याप्त विविध विसंगतियों का चित्रण मिलता है। 'धर्मवीर भारती' मध्यवर्गीय जीवन की सच्चाई को जानते थे, समझते थे; यही कारण है कि उनकी रचनाओं का पात्र भी इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। मृत परम्परा और रूढ़ियों के प्रति भारती जी नाराज दिखाई पड़ते है। जिसे भारती जी ने इस उपन्यास के प्राय सभी पात्रों के माध्यम से उभारा है।



10.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: सहज, सरल, भावुकता और करुण कहानी के कारण यह उपन्यास कालजयी बन गया है। सामाजिक समस्याओं तथा विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया गया है। अधिक जानकारी के लिए **'गुनाहों का देवता' उपन्यास की मूल संवेदना और उद्देश्य'** को ध्यानपूर्वक पढ़े

प्रश्न 2 का उत्तर पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर : उपन्यास का नायक चंदर और नायिका सुधा।

प्रश्न 4 का उत्तर: पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 5 का उत्तर : यह कथन मिस डीक्रुज का है।



10.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- भारती, धर्मवीर. (1949/2019). गुनाहों का देवता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- वर्मा, शैलेंद्र. (2001). गुनाहों का देवता: एक पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य सदन।

- शर्मा, राकेश. (2012). भारती और गुनाहों का देवता: एक आलोचनात्मक दृष्टि. भोपाल: शोध प्रकाशन।
- मिश्रा, प्रीति. (2018). गुनाहों का देवता: पात्र और भाषा-शैली का विश्लेषण. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन।
- सिंह, नरेन्द्र. (1992). धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य. नई दिल्ली: किताब महल।
- मिश्र, अशोक. (2004). धर्मवीर भारती: आलोचना और पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- शुक्ल, विजय. (2010). भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड।
- चौबे, रमेश. (2015). धर्मवीर भारती के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन. लखनऊ: प्रकाशन संस्थान।
- अग्रवाल, विनय. (2021). गुनाहों का देवता का पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली: साहित्य संगम।
- त्रिपाठी, सीमा. (2023). गुनाहों का देवता: प्रेम और सामाजिक यथार्थ. लखनऊ: नवभारत प्रकाशन।

10.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्रों का नामोल्लेख कीजिए।
2. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ था?
3. गुनाहों का देवता' एक तथाकथित आदर्शोन्मुख यथार्थवादी समाजिक उपन्यास है।''- कथन किसका है?
4. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में सुधा और चंदर के बीच किस प्रकार के प्रेम को उजागर किया है?
5. हम शादी नहीं करेंगे, पापा का ध्यान कौन रखेगा।''- यह कथन किसका है?

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।
2. 'प्रेम की ट्रेजेडी' के रूप में गुनाहों का देवता उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।
3. गुनाहों का देवता उपन्यास में चित्रित संघर्ष के विविध आयाम पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।
4. ''गुनाहों का देवता' में नगरीय मध्यवर्ग के जीवन, प्रेम, विवाह, जाति, रुढ़ियाँ और मानसिक द्वंद्व का बहुआयामी चित्रण मिलता है''-इस कथन को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
5. गुनाहों का देवता उपन्यास में परिवर्तित मूल्यबोध पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।

******

इकाई-11 : गुनाहों का देवता (भाग-III)

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्र

11.4 पात्रों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का चित्रण

11.5 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा-शैली

11.6 प्रतीक और बिंबों का प्रयोग

11.7 सारांश

11.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

11.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

11.10 अभ्यास प्रश्न

11.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्रों से परिचय प्राप्त करेंगे।
- इस उपन्यास में नारी पात्र और पुरुष पात्र किस प्रकार कार्य कर रहा है उसको जानेंगे।
- पात्रों की गहनता और उनकी मानसिकता के सूक्ष्म चित्रण से परिचित होंगे।
- प्रमुख विषय वस्तु और चिंतन को समझ पाएंगे।
- धर्मवीर भारती जी की भाषा कैसी है उसको समझेंगे।
- 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा-शैली के बारे में जानेंगे।

11.2 प्रस्तावना

धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' हिंदी साहित्य में प्रेमकथाओं का एक अमूल्य रत्न माना जाता है। यह उपन्यास केवल एक रोमांटिक कहानी

नहीं है, बल्कि इसमें मानवीय संवेदनाओं, नैतिक द्वंद और सामाजिक मूल्यों का गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्र, विशेषकर चंदर और सुधा, पाठक को केवल उनके प्रेम के माध्यम से नहीं, बल्कि उनके व्यक्तिगत संघर्ष, भावनात्मक द्वंद और सामाजिक जिम्मेदारियों के टकराव के द्वारा जीवन के जटिल अनुभवों से परिचित कराते हैं। पात्रों की गहनता और उनकी मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण पाठक को उनके साथ एक आत्मिक यात्रा पर ले जाता है। उपन्यास की विषय-वस्तु और चिंतन भी अत्यंत व्यापक हैं। प्रेम, त्याग, नैतिकता और सामाजिक प्रतिबद्धताओं का मिश्रण न केवल कहानी को गहराई देता है, बल्कि पाठक को जीवन और मानवीय मूल्यों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करता है। प्रेम केवल आकर्षण और भावनात्मक लगाव तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यक्तिगत इच्छा और सामाजिक कर्तव्य के बीच संतुलन का गंभीर प्रश्न उपस्थित होता है। यही कारण है कि यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक और विचारोत्तेजक बना हुआ है। साथ ही, 'गुनाहों का देवता' की भाषा-शैली भी इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। भारती की भाषा सहज, संवेदनशील और प्रवाहपूर्ण है। वह पात्रों के मनोभावों और मानसिक संघर्षों को इतनी सूक्ष्मता से व्यक्त करते हैं कि पाठक स्वयं उस भावनात्मक परिदृश्य का हिस्सा महसूस करता है। शैली में भावनाओं की प्रामाणिकता, संवेदनशील संवाद और मनोवैज्ञानिक चित्रण इसे केवल एक कथा नहीं, बल्कि साहित्यिक उत्कृष्टता की कृति बनाते हैं।

इस इकाई में हम उपन्यास के प्रमुख पात्रों, उनकी मानसिकता और संघर्षों, उपन्यास की विषय-वस्तु और चिंतन, तथा भाषा-शैली की विशिष्टताओं का विस्तृत अध्ययन करेंगे, जिससे पाठक 'गुनाहों का देवता' को न केवल एक प्रेमकथा के रूप में, बल्कि एक जीवन-दर्शन और साहित्यिक उत्कृष्टता के उदाहरण के रूप में समझ सके।

11.3 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्र

'गुनाहों का देवता' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्र 'तनाव' में जीते हैं, इन पात्रों का व्यवहार सामान्य व्यक्ति से अलग होता है। ''मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन करने पर निष्कर्ष यह निकला है कि इन पात्रों के जीवन में बिखराव है। ये पात्र घुटन तथा तनाव

में जी रहे हैं। ये सामान्य व्यक्ति से भिन्न व्यवहार करते हैं। सामान्य व्यक्ति अपने जीवन में कुछ सीमा तक परिस्थितियों के अनुसार ढल जाता है तथा कुछ सीमा तक परिस्थितियों को अपने अनुसार बना लेता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्र न तो परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करते हैं और न ही परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। ये पात्र असामान्य जीवन जीते हैं।''

अब हम 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पात्रों से परिचय प्राप्त करेंगे-

'गुनाहों का देवता' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र :

सुधाः 'सुधा' इस उपन्यास की नायिका है, वह 'चंदर' से बहुत प्यार करती है। 'सुधा' खुबसूरत, विश्वास के योग्य और पवित्र है। 'सुधा' चंदर को बहुत मानती है और इसी कारण 'चंदर' के कहने पर शादी के लिए राजी हो जाती है। इस प्रकार सुधा 'कैलाश' से शादी कर लेती है। ''उपन्यास का मुख्य पात्र चन्दर अवश्य है परन्तु महत्वपूर्ण चरित्र सुधा का है। नारी के रूप में वह विशुद्ध नारी तत्व है। सहजता, मिठास और आकर्षण की दृष्टि से वह हिन्दी साहित्य का बेजोड़ नारी चरित्र है।''

'सुधा' को धर्मवीर भारती ने एक भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया है। उसमें क्षमा, करुणा, समझ आदि सभी गुण विद्दमान हैं। वह त्यागी है, अंत तक 'चंदर' से प्यार करती है। 'सुधा' की अंतिम परिणति करुण है, पर अंत में भी वह पापा के रुढ़िग्रस्त विचार और समाज के प्रति उनकी मान्यताओं को बदल जाती है। इस प्रकार इस उपन्यास में कभी भी 'सुधा' कमजोर नहीं दिखाई देती है। प्रभाकर क्षत्रिय 'सुधा' के चरित्र बारे में लिखते हैं- ''सुधा के भोलेपन की सृष्टि अद्भूत है। वह न आधुनिक है न पुरानी, न ग्रामीण न नागरिक, न अनपढ़ और न पढ़ी-लिखी, न गढी-न तराशी, वह सनातन नारी भाव की नैसर्गिक पुतली है। उसके रेखाचित्रों को उकेरने में कथाकार अकथक भाव से उपमा, रुप और प्रतीक बिम्बों की बोछार करता चलता है।''



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'गुनाहों का देवता एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।
- स्त्री पात्र पम्मी का पूरा नाम 'प्रमिला डिक्रूज' है।
- 'चंदर' का पूरा नाम चंदर कपूर है।
- 'बर्टी' प्रमिला डिक्रूज का भाई है।

बिनती : इस उपन्यास का एक महत्वपूर्ण नारी पात्र है 'बिनती'। 'बिनती' सुधा की बुआ की बेटी है और दोनों में अपार स्नेह है। 'बिनती' सुधा और चंदर के संबंध से अवगत है और खुश भी। 'बिनती' चंदर को भी सम्मान की दृष्टि से देखती है। वह चंदर से कहती है–''चन्दर, मैं अपने को कुछ समझ नहीं पाती। सिर्फ इतना जानती हूँ कि मेरे मन में तुम जाने क्या हो इतने महान, इतने महान हो कि मैं तुम्हें प्यार नहीं कर पाती, लेकिन तुम्हारे लिए कुछ भी करने से अपने को रोक नहीं सकती।''

'बिनती' के पिताजी का बचपन में ही देहांत हो जाता है। पर 'बिनती' स्वाभिमानी है, स्पष्टवादी और समझदार है। अपनी स्वाभिमानी प्रवृत्ति का परिचय देते हुए वह अपनी माँ और चंदर से कहती है–''आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रही, मैंने तुम्हें दीदी से बढ़कर माना। तुम भी ठोकरें लगाने से बाज नहीं आये फिर भी मैं सब सहती गई। उस दिन जब मण्डप के नीचे मामाजी ने जबरदस्ती हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया तो मुझे उसी क्षण लगा कि मुझमें भी कुछ सत्व है, मैं इसीलिए नहीं बनी हूँ कि दुनिया मुझे कुचलती रहे। अब मैं विरोध करना, विद्रोह करना भी सीख गयी हूँ। जिन्दगी में स्नेह की जगह है, लेकिन स्वाभिमान भी कोई चीज है।''

'बिनती' समझदारी का परिचय तब भी देती है, जब 'चंदर' पम्मी के प्रति आकर्षित होता है। 'बिनती' सुधा की चंदर के प्रति प्रेम को जानती है, इसलिए नहीं चाहती है कि चंदर 'पम्मी' से मिले। उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' ने 'बिनती' को ग्रामीण रीति-रिवाज और संस्कृति को माननेवाली लड़की के रूप में चित्रित किया है।

पम्मी (प्रमिला डिक्रुज): 'पम्मी' सुधा, बिनती और गेसू की तुलना में अधिक आधुनिक है। 'पम्मी' एक ईसाई लड़की है और वह आजाद है। वह अत्यंत चालाक है, यही कारण है कि धीरे-धीरे 'चंदर' उसकी प्रेम जाल में फंसता चला जाता है। उदाहरण के लिए- ''पम्मी, तुम्हारे वक्ष पर सिर रखकर मैं जाने क्यों सबकुछ भूल जाता हूँ? पम्मी, दुनिया वासना से इतना घबराती क्यों है? मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि अगर किसी को वासनाहीन प्यार करके, किसी के लिए त्याग करके मुझे जितनी शक्ति मिलती है, पता नहीं क्यों मांसलता में भी उतनी ही शान्ति मिलती है, ऐसा लगता है कि शरीर के विचार अगर आध्यात्मिक प्रेम में जाकर शान्त हो जाते हैं, तो लगता है आध्यात्मिक प्रेम में,

प्यासे रह जाने वाले अभाव फिर किसी के मांसल बन्धन में ही आकर बुझ पाते हैं। कितना सुख है तुम्हारी ममता में।'' 'चंदर' जब सुधा के बारे में गेसू से जानता है, तो 'पम्मी' के प्रति आकर्षण कम हो जाती है। पर इससे 'पम्मी' को बुरा नहीं लगता है। वह 'चंदर' को एक हिन्दू लड़की से शादी करने के लिए बोलती है और अपने पति के पास चली जाती है।

गेसू: 'गेसू' एक मुस्लिम लड़की है और वह 'सुधा' की अच्छी दोस्त है। कॉलेज में पढ़ती है। कविता, शेर-शायरी उसे काफी पसंद है। 'गेसू' व्यावहारिक और समझदार है। जीवन को लेकर उसकी धारणा स्पष्ट थी। वह कहती है- ''बदला, गुरेज, नफरत इससे आदमी न कभी सुधरा है न सुधरेगा? बदला और नफरत तो अपने मन की कमजोरी को जाहिर करते हैं। और फिर बदला मैं लूं किससे? उससे, दिल की तनहाइयों में मैं जिसके सजदे पढ़ती हूँ।''

'धर्मवीर भारती' ने इस उपन्यास में एक महत्वपूर्ण पात्र के रूप में चित्रण किया है। प्रेम में असफल होने के बावजूद वह अपनी जीवन को लेकर स्पष्ट रहती है। इस उपन्यास के नायक 'चंदर' को सही रास्ता दिखाने में भी इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

'गुनाहों का देवता' उपन्यास के प्रमुख पुरूष पात्र:

चंदर: 'चंदर' इस उपन्यास का नायक है। 'चंदर' का घर प्रयाग में है, पर सौतेली माँ के अत्याचार के कारण वह इलाहाबाद आ जाता है। इलाहाबाद में ही 'चंदर' का परिचय डॉ. शुक्ला से होता है। डॉ. शुक्ला की बेटी अर्थात् इस उपन्यास की नायिका 'सुधा' से 'चंदर' बहुत प्रेम करता है। वह 'सुधा' से कहता है- ''नहीं सुधा, तुम नहीं समझती। मेरी जिन्दगी में एक ही विश्वास की चट्टान है। वह हो तुम। मैं जानता हूँ कि कितने ही जल प्रलय हो, लेकिन तुम्हारे सहारे मैं हमेशा ऊपर रहूँगा। तुम मुझे डूबने नहीं दोगी। तुम्हारे ही सहारे मैं लहरों से खेल भी सकता हूँ लेकिन तुम्हारा विश्वास अगर कभी हिला तो मैं किन अँधेरी गहराइयों में डूब जाऊँगा, यह कभी मैं सोच नहीं पाता।''

'चंदर' सुधा की शादी के बाद बदल जाता है और पम्मी की वासना के जाल में फंस जाता है। 'चंदर' सुधा से प्रेम तो करता है, पर बोल नहीं पाता है। यही कारण है कि कुछ आलोचकों ने इस उपन्यास की आलोचना करते हुए इस उपन्यास के नायक 'चंदर' को विश्वासघाती और स्वार्थी माना है। प्रेम करता है 'सुधा' से, पर धीरे-धीरे उसका आकर्षण 'पम्मी' के शरीर के प्रति बढ़ता

जाता है। ''देवता चन्दर अपनी एकाकी आत्मा के साथ भयानक चकवात में गिरता जाता है। जिसके हर झोंके में गुनाह, मानसिक दर्द एवं अनार्हद हृदय की असह्य पीड़ा थी। उसके प्रबल विश्वास पर अविश्वास का कालार्पन उसे अंधेरे में डूबोये जाता था। वह सबका निषेध कर पूर्णता का स्वप्न देखता रहता है। इस स्थिति में चन्दर का वर्तमान वैषम्यपूर्ण बनता जाता है। मनुष्य का वर्तमान वैषम्यपूर्ण रहता है। इस वैषम्य का उसे स्वीकार करते हुए चलना पड़ता है। पर समरस की स्थिति को प्राप्त करने के लिए उसकी साधना भी चलती रहती है। वर्तमान से विद्रोह करता हुआ वह उस स्थिति को पहुँचना चाहता है जहाँ वैषम्य का विष उसका दम घोटे। इस स्थिति में वह पूर्णता का स्वप्न देखता है।'' पर अंत में वह 'पम्मी' को छोड़कर 'सुधा' के पास आ जाता है।

'चंदर' इस उपन्यास में एक मध्यवर्गीय युवा का प्रतिनिधित्व करता है। 'चंदर' प्रेम, विश्वास, वासना आदि से प्रभावित रहता है, पर अंत में इन सबसे निकलकर ऊंचाई प्राप्त कर लेता है। ''प्रेम और मानवीय गुणों से परिपूर्ण है। जब-जब उत्तरदायित्व का बोझ उठाने की नोबत आयी। चन्दर भाग खड़ा हुआ। भारती के कथानुसार चन्दर के कार्य करने की पद्धति अलग थी। उसका व्यक्तित्व प्लेटोनियम की तरह था। उसके आकर्षण से ही सुधा इतनी ऊँचाई पर उठी। चन्दर भले ही भटक गया हो किन्तु किसी के विश्वास का गला उसने नहीं घोंटा। लेखक के कथानुसार चन्दर वह नींव और सीढ़ी का पत्थर था जिस पर होकर सारे पात्र आगे बढ़ रहे थे। हकीकत में चन्दर देवता था, लेकिन गुनाहों का देवता।''

बर्टी: 'पम्मी' (प्रमिला डिक्रूज) का भाई है 'बर्टी', जो मानसिक रूप से बीमार है। 'बर्टी' को संदेह है कि उसकी पत्नी सार्जण्ट से प्यार करती है। अपनी बेटी और पत्नी से वह बहुत प्यार करता है और दोनों की मृत्यु के बाद मानसिक रूप से टूट जाता है।

एक समय 'बर्टी' चंदर का दार्शनिक गुरू बन जाता है। वह चंदर से कहता है- ''इसका मतलब यह है कि तुम औरतों को समझते नहीं। देखो, एक औरत उसी चीज को ज्यादा पसन्द करती है उसीके प्रति समर्पण करती है जो उसकी जिन्दगी में नहीं होता। जो मसलन एक औरत है जिसका ब्याह हो गया है... मैं तो समझता हूँ कि कोई भी पति अपनी पत्नी को यदि कोई अच्छा उपहार दे सकता है तो वह यह है एक नया प्रेमी और कोई भी प्रेमी अपनी रानी को

यदि कोई अच्छा उपहार दे सकता है तो वह यह कि उसे एक पति प्रदान कर दे।''

'धर्मवीर भारती' जी ने बर्टी को एक बौद्धिक पात्र के रूप में चित्रण किया है। वह मानसिक रोगी होने के बाद भी रास्ता नहीं भटकता, जबकि इस उपन्यास का नायक 'चंदर' उसी की बातों में आकर रास्ता भटक जाता है।

डॉ. शुक्ला: डॉ. शुक्ला इस उपन्यास की नायिका 'सुधा' के पिता है। हर जगह लोग इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। 'चंदर' को इन्होंने अपने बेटे की तरह पाला था।

डॉ. शुक्ला सामाजिक रीति-रिवाज और परंपरा को माननेवाले पात्र के रूप में हमारे सामने आते हैं। लेकिन कुछ घटनाओं के बाद (बिनती की शादी में छल-कपट और सुधा की मृत्यु) इनका सिद्धांत बदल जाता है। वे कहते हैं- ''इस महिने भर में मेरा सारा विश्वास हिल गया। सुधा का विवाह कितनी अच्छी जगह किया गया, मगर सुधा पीली पड़ गयी है। कितना दु:ख हुआ देखकर और बिनती के साथ यह हुआ। सचमुच यह जाति, विवाह सभी परंपराएँ बहुत ही बुरी है। बुरी तरह सड़ गयी है। उन्हें तो काट फेंकना चाहिए। मेरा तो वैसे इस अनुभव के बाद सारा आदर्श ही बदल गया है।''

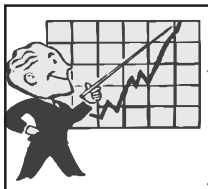
'धर्मवीर भारती' ने डॉ. शुक्ला को पुरानी और नयी पीड़ी के प्रतिनिधि पात्र के रूप में चित्रित किया है। समय के साथ-साथ उनके सोच में भी परिवर्तन आता है। यही कारण है कि वे अंत में 'बिनती' और 'चंदर' की शादी के लिए भी राजी हो जाते हैं।

कैलाश मिश्र: समाजवादी पार्टी का नेता और उपन्यास की नायिका सुधा का पति है-कैलाश मिश्र। 'कैलाश मिश्र' सुधा और चंदर के संबंध को जानता है। वह चंदर से कहता है-''न इसमें मेरा कसूर न इनका। मैं चाहता था कोई लड़की जो मेरे साथ राजनीति का काम करती, मेरी सबलता और दुर्बलता दोनों की संगिनी होती। इसीलिए इतनी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी की। मेरे व्यक्तित्व को ग्रहण भी नहीं कर पायीं। वैसे मेरी शारीरिक प्यास को इन्होंने चाहे समर्पण किया, वह भी एक बेमनी से, उससे तन की प्यास भले ही बुझ जाती हो कपूर, लेकिन मन तो प्यासा ही रहता है... बुरा न मानना... और स्वास्थ्य के मामले में ये इतनी लापरवाह है कि मैं बहुत दुखी रहता हूँ।'' इस उपन्यास में 'भारती' जी ने कैलाश मिश्र को एक व्यवहारिक और स्पष्ट पात्र के रूप में चित्रण किया

है।

'गुनाहों का देवता' उपन्यास मनोवैज्ञानिक होने के कारण पात्रों के अंत:करण और उनकी मानसिक स्थिति का चित्रण सुन्दर हुआ है। इस उपन्यास में पात्रों की संख्या कम है, पर प्रत्येक पात्र महत्वपूर्ण है।

अपनी प्रगति जांचें-



प्रश्न 1. उपन्यास की नायिका 'सुधा' के बारे में संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 2. 'धर्मवीर भारती' ने डॉ. शुक्ला को किस रूप में चित्रित क्या है?

प्रश्न 3. इस उपन्यास की केन्द्रीय धुरी क्या है?

प्रश्न 4. मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्र कैसे जीते हैं?

प्रश्न 5.धर्मवीर भारती की भाषा कैसी है?

11.4 पात्रों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का चित्रण

धर्मवीर भारती जी का 'गुनाहों का देवता' उपन्यास अपने पात्रों के माध्यम से उस समय के भारतीय समाज की गहरी झलक प्रस्तुत करता है। नायक चंदर एक शिक्षित, संवेदनशील और नैतिकता से बँधा युवक है, चंदर का चरित्र उस मध्यमवर्गीय युवक का प्रतिनिधि है, जो शिक्षा, संस्कार और नैतिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा है। जो सुधा से प्रेम करता है, लेकिन सामाजिक परम्पराओं और जातिगत बंधनों के कारण अपने प्रेम को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। चंदर के माध्यम से उस समय के सामाजिक दबाव, जातिगत सीमाएँ और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष को उजागर किया गया है। सुधा परम्परागत भारतीय नारी का रूपक है, जो व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक परिवार और समाज की अपेक्षाओं को प्राथमिकता देती है। वह भी चंदर से प्रेम करती है, परन्तु समाज और परिवार की मर्यादाओं के आगे अपने प्रेम का त्याग कर देती है। सुधा का पात्र स्त्री के त्याग, मर्यादा और सामाजिक बंधनों की स्वीकृति का प्रतीक है। उसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्री की भूमिका मुख्यत: परिवार और समाज द्वारा निर्धारित की जाती थी। सुधा की विपरीत पम्मी

आधुनिकता और आत्मनिर्भरता की प्रतीक है, जो बदलते हुए समाज में नारी के नए रूप और सोच को सामने लाती है। उसके माध्यम से समाज में उभरती हुई नई नारी-छवि सामने आती है, जो परम्परागत मर्यादाओं से बाहर निकलकर अपनी राह स्वयं चुनना चाहती है। यह पात्र भारतीय समाज में परम्परा और आधुनिकता के टकराव को दर्शाता है। बिनती की जीवन समाज के उपेक्षित और शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, यह चरित्र समाज के उस उपेक्षित वर्ग को स्वर देता है, जहाँ स्त्रियाँ असुरक्षा और शोषण का शिकार होती हैं। बिनता का पात्र समाज की वर्गीय असमानता और स्त्री-शोषण की त्रासदी को सामने लाता है। गेसु मुस्लिम समाज से है और वह चंदर का सच्चा मित्र है अर्थात गेसु मित्रता, धार्मिक सौहार्द और साझा संस्कृति का परिचायक है, जो उपन्यास को केवल प्रेमकथा न रहकर एक व्यापक सामाजिक सन्दर्भ प्रदान करता है। उसके माध्यम से भारतीय समाज की साझी संस्कृति और हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द का चित्रण मिलता है। गेसु यह दिखाता है कि सामाजिक और धार्मिक विविधता के बावजूद मित्रता और मानवीयता सबसे ऊपर है।

इन पात्रों की विविधता और उनके अनुभवों से उपन्यास में जातिगत भेदभाव, स्त्री की स्थिति, परम्परा और आधुनिकता का संघर्ष, वर्गीय विषमता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द जैसे पहलू उजागर होते हैं। इस प्रकार 'गुनाहों का देवता' पात्रों की गहराई और सामाजिक यथार्थ के चित्रण के कारण प्रेमकथा से आगे बढ़कर एक मूल्यवान सामाजिक उपन्यास सिद्ध होता है।

11.5 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा शैली

भाषा-शैली उपन्यास की प्राण है। उपन्यास की भाषा सहज, सरल और बोधगम्य होना चाहिए। भाषा शैली के माध्यम से लेखक की प्रतिभा, विचारधारा और रुचि-अभिरुचियों के बारे में पता चलता है। धर्मवीर भारती ने उपन्यास में नवीन भाषा शैली का प्रयोग किया है। 'गुनाहों का देवता' मनोवैज्ञानिक उपन्यास होने के कारण भारती जी ने पात्रों के मनोदशा को बहुत ही सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास का कथानक जटिल और उलझा हुआ होता है, पर इन उपन्यासों में उपन्यासकार स्वतंत्र होता है। ''मनोविश्लेषण वादी शिल्प-विधान के उपन्यासों का कथानक सूक्ष्म-व्यंजना प्रधान तथा आंतरिक संसार की

अभिव्यक्ति करने वाला होता है, ऐसा संसार जो जटिल, सूक्ष्म और उलझा हुआ है। सूक्ष्म कथानक भी किसी नियोजित या संगठन क्रम में नहीं, विश्रृंखलित होता है। इन उपन्यासों का लेखक एकदम स्वतन्त्र होता है।''

इस उपन्यास में उपन्यासकार 'धर्मवीर भारती' ने पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण सुंदर ढंग से किया है। 'धर्मवीर भारती' प्रकृति प्रेमी है, यही कारण है कि उन्होंने पात्रों के सौंदर्य चित्रण में भी प्राकृतिक उपमानों का उपयोग किया है। उपन्यासकार ने 'चंदर' को 'मासूम सुबह' कहा है। इसी प्रकार वे 'सुधा' का परिचय देते हुए लिखते हैं- ''सुधा बास की टहनी की तरह लहराकर बोलती है। उसकी हँसी में दुधिया बचपन छलक उठता है। चन्द्र किरण की सुधा, पुरवाई के अल्हड़ और विद्रोही झोंकों सी सुधा, चन्दर के इशारे पर सुबह की रोशनी सी सुधा जैसी मार्मिक चित्रमयता में उसे प्रस्तुत करता है।''

'सुधा' की बुआ ग्रामीण अवधि भाषा में बात करती है, जिसमें ग्रामीण संस्कृति का झलक भी दिखाई देती है। इसी प्रकार 'बर्टी' की भाषा में दार्शनिकता है। 'गेसू' शेर-शायरी में माहिर है। उदाहरण के लिए -

''बादशाहों की मुअत्तर ख्वबगाहों में कहाँ
वह मजा जो भीगी भीगी घास पर सोने में है,
मुतमइन बेफिक्र लोगों की हँसी में भी कहाँ
लुत्फ जो एक-दूसरे को देखकर रोने में है।''

'धर्मवीर भारती' ने इस उपन्यास में सांकेतिक और व्यंगात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। सांकेतिक भाषा में उपन्यासकार कभी कभी किसी बात की संकेत मात्र करता है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में भारती जी ने पात्रों की आतंरिक द्वंद को प्रस्तुत करने के लिए बिम्ब का सहारा लिया है। बिंब का अर्थ है- ''मूर्त रूप प्रदान करना।'' बिंब के माध्यम से बातों को सरलता से प्रस्तुत किया जाता है और पाठक भी इसे आत्मसात कर लेता है। बिंब के प्रयोग के कारण अनावश्यक वर्णन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ''प्रतिबिम्ब हँसा मैं तुम्हारी नस-नस जानता हूँ। तुम वही हो न जिसने आज से डेढ़ साल पहले सपना देखा सुधा के हाथ से लेकर अमृत बाँटने का, दुनिया को नया सन्देश देकर पैगम्बर बनने का। नया सन्देश! खूब नया सन्देश दिया मसीहा।

पम्मी... बिनती.. सुधा... कुछ और छोकरियाँ बटोर ले। चरित्र हीन।''

हम पहले ही कह चुके हैं कि भाषा-शैली उपन्यास की प्राण होती है। इस भाषा-शैली को हम मुख्यत: दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- एक साहित्यिक और दूसरी वैज्ञानिक। साहित्यिक शैली में रसात्मकता, ओज आदि साहित्यिक गुणों का भरमार होता है, जबकि वैज्ञानिक शैली तार्किक होती है।

'धर्मवीर भारती' ने इस उपन्यास में संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है, जैसे- ''सन्नाटा होना'', ''फुट-फुट कर रोना'', ''मुँह ही मुँह देखना'', ''साँप सुंघ जाना'', ''उलटे पाँव लौट जाना'', ''बोझ टले सिर से'', ''आँखे फाडकर देखना'', ''घोड़े बेचकर सोना'', ''सिसक-सिसककर रोना'', ''मुँह फेर लेना'', ''तीज का चाँद होना'', ''छाती पर मुंग दलना'' आदि।

'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा मौलिक और भावानुकूल है। भारती जी ने इस उपन्यास में कहीं भी बनावटी भाषा का प्रयोग नहीं किया है। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है।

11.6 प्रतीक और बिंबों का प्रयोग

धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता' प्रतीक और बिंबों के कलात्मक प्रयोग के कारण अत्यंत प्रभावशाली उपन्यास सिद्ध हुआ है। भारती ने कथा की संवेदनात्मक गहराई को व्यक्त करने के लिए भाषा में अनेक प्रतीकात्मक और बिंबात्मक अभिव्यक्तियों का सहारा लिया है। उपन्यास का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है- ''गुनाहों का देवता।'' यह शीर्षक नायक चंदर की उस मानसिक स्थिति का प्रतीक है जिसमें वह प्रेम और मर्यादाओं के बीच झूलता हुआ अनेक त्रुटियाँ करता है, किन्तु उसका हृदय पवित्र और भावनाएँ सच्ची बनी रहती हैं। इस प्रकार वह गुनाह करते हुए भी देवतुल्य दिखाई देता है। यह शीर्षक मानव जीवन में पाप और पुण्य, त्रुटि और आदर्श के द्वंद का प्रतीक है। सुधा और चंदर के संबंधों को व्यक्त करने के लिए लेखक ने बार-बार फूलों, बगीचों और ऋतुओं के बिंबों का प्रयोग किया है। फूल सुधा की मासूमियत, कोमलता और निष्कलुष प्रेम का द्योतक बन जाते हैं, वहीं ऋतु-परिवर्तन पात्रों के मनोभावों का संकेत देता है। इसी प्रकार जल और वर्षा के प्रतीक उपन्यास में अत्यंत

महत्वपूर्ण हैं। जब-जब चंदर के भीतर द्वंद और पीड़ा बढ़ती है, वातावरण में उमस, वर्षा या आंधी का चित्रण मिलता है। इस तरह बाह्य प्रकृति पात्रों की आंतरिक मन:स्थिति का दर्पण बन जाती है। धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का भी प्रयोग हुआ है- मंदिर, देवी-देवताओं और संस्कारों के उल्लेख पात्रों पर परम्परा और समाज के बंधनों का द्योतक हैं। सामाजिक स्तर पर भी पात्र प्रतीकात्मक रूप ग्रहण करते हैं- पम्मी आधुनिक नारी की छवि का प्रतीक है, सुधा परम्परागत नारी-आदर्श की और बिनती समाज के उपेक्षित वर्ग की त्रासदी का। गेसु हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द और मित्रता का प्रतीक है। इन सबके कारण उपन्यास केवल प्रेमकथा न रहकर भारतीय समाज और मनुष्य की जटिल मानसिकताओं का प्रतीकात्मक आख्यान बन जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रतीक और बिंबों के प्रयोग ने 'गुनाहों का देवता' को गहन संवेदनशीलता और कलात्मकता से भर दिया है, जिससे यह उपन्यास हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली कृतियों में गिना जाता है।



11.7 सारांश

'गुनाहों का देवता' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है और मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्र सामान्य व्यक्ति से अलग होते हैं। ये पात्र घुटन और तनाव में जीते हैं तथा न परिस्थितियों के अनुकूल चलते हैं और न ही परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के पात्र कम है, पर सभी महत्वपूर्ण है। पात्रों के अंत:करण और उनकी मानसिक स्थिति का चित्रण उपन्यासकार ने सफलतापूर्वक किया है। 'गुनाहों का देवता' के पात्र केवल काल्पनिक चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की वास्तविकताओं का जीवंत रूपक हैं। चंदर और सुधा सामाजिक मर्यादाओं और व्यक्तिगत भावनाओं के संघर्ष को दर्शाते हैं। पम्मी आधुनिक सोच और बदलती नारी-छवि को उभारती है। बिनती वर्गीय असमानताओं और स्त्री-शोषण का प्रतीक है। गेसु धार्मिक सौहार्द और मित्रता की मिसाल है। इस प्रकार उपन्यास के पात्र सामूहिक रूप से भारतीय समाज के उस दौर की जातिगत बंधन, स्त्री की स्थिति, परम्परा और आधुनिकता का संघर्ष, तथा सांप्रदायिक सहअस्तित्व को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं।

'गुनाहों का देवता' की सफलता में प्रतीक और बिंबों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। धर्मवीर भारती ने इस उपन्यास में ऐसे प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग किया है जो कथा को गहराई देते हैं और पात्रों के भावनात्मक द्वंद को प्रभावशाली बनाते हैं।

उपन्यासकार धर्मवीर भारती ने प्रस्तुत उपन्यास में नवीन भाषा-शैली का प्रयोग किया है। इस उपन्यास में प्राकृतिक उपमान, सांकेतिक भाषा तथा देशी भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है। संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषा के शब्दों के साथ-साथ मुहावरों का प्रयोग भी आवश्यकता के अनुसार किया गया है।

11.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: ''उपन्यास का मुख्य पात्र चन्दर अवश्य है परन्तु महत्वपूर्ण चरित्र सुधा का है। नारी के रूप में वह विशुद्ध नारी तत्व है। सहजता, मिठास और आकर्षण की दृष्टि से वह हिन्दी साहित्य का बेजोड़ नारी चरित्र है।'' अधिक जानकारी के लिए पढ़े ''गुनाहों का देवता' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र।''

प्रश्न 2 का उत्तर: 'धर्मवीर भारती' ने डॉ. शुक्ला को पुरानी और नई पीढ़ी के प्रतिनिधि पात्र के रूप में चित्रित किया है।

प्रश्न 3 का उत्तर: इस उपन्यास की केन्द्रीय धुरी चंदर और सुधा का प्रेम है।

प्रश्न 4 का उत्तर: मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्र 'तनाव' में जीते हैं, इन पात्रों का व्यवहार सामान्य व्यक्ति से अलग होता है।

प्रश्न 5 का उत्तर: भारती की भाषा सहज, संवेदनशील और प्रवाहपूर्ण है।

11.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- भारती, धर्मवीर. (1949/2019). गुनाहों का देवता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- वर्मा, शैलेंद्र. (2001). गुनाहों का देवता: एक पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य सदन।

- शर्मा, राकेश. (2012). भारती और गुनाहों का देवता: एक आलोचनात्मक दृष्टि. भोपाल: शोध प्रकाशन।
- मिश्रा, प्रीति. (2018). गुनाहों का देवता: पात्र और भाषा-शैली का विश्लेषण. वाराणसी:भारतीय विद्या भवन।
- सिंह, नरेन्द्र. (1992). धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य. नई दिल्ली: किताब महल।
- मिश्र, अशोक. (2004). धर्मवीर भारती: आलोचना और पुनर्पाठ. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- शुक्ल, विजय. (2010). भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड।
- चौबे, रमेश. (2015). धर्मवीर भारती के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन. लखनऊ: प्रकाशन संस्थान।
- अग्रवाल, विनय. (2021). गुनाहों का देवता का पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली: साहित्य संगम।
- त्रिपाठी, सीमा. (2023). गुनाहों का देवता: प्रेम और सामाजिक यथार्थ. लखनऊ: नवभारत प्रकाशन।

11.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के नायक और नायिका कौन है?
2. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के तीन स्त्री पात्र का नाम लिखिए।
3. संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए-

   क) गेसू ख) बर्टी
4. चन्दर कौन है और उपन्यास में उसकी क्या भूमिका है?
5. सुधा का चरित्र गुनाहों का देवता में किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?
6. 'गुनाहों का देवता' का प्रमुख विषय क्या है?
7. उपन्यास में प्रेम और त्याग की अवधारणा कैसे चित्रित हुई है?

8. उपन्यास की भाषा-शैली की एक विशेषता लिखिए।

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के किन्हीं दो पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की भाषा-शैली पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।
3. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के पुरुष पात्रों का परिचय दीजिए?
4. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के स्त्री पात्रों का परिचय दीजिए?
5. सुधा और चन्दर के संबंधों के आधार पर उपन्यास में प्रेम की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए।
6. उपन्यास की भाषा-शैली उसकी लोकप्रियता में किस प्रकार सहायक सिद्ध हुई? विवेचन कीजिए।
7. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में प्रतीक और बिंबों का प्रयोग किस प्रकार हुआ हैं उल्लेख कीजिए।

******

इकाई-12 : तमस (भाग-I)

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 उपन्यासकार 'भीष्म साहनी' का परिचय

12.4 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

12.5 सारांश

12.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

12.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

12.8 अभ्यास प्रश्न

12.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- उपन्यासकार 'भीष्म साहनी' के परिचय प्राप्त करेंगे।
- भीष्म साहनी जी के व्यक्तित्व को समझ पाएंगे।
- साहनी जी के कृतित्व से परिचित होंगे।
- भीष्म साहनी जी के सभी विधाओं को जानेंगे।
- 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु के बारे में जानेंगे।
- प्रस्तुत उपन्यास की 'समीक्षा' से अवगत होंगे।

12.2 प्रस्तावना

हिन्दी कथा-साहित्य की प्रगतिशील धारा में भीष्म साहनी का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने मानव जीवन के विविध पक्षों को अपने लेखन में संपूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया, जो उनकी व्यापक दृष्टि को दर्शाता है। वे किसी भी व्यावसायिक प्रभाव से मुक्त रहकर स्वतंत्र और सशक्त रचनाकार के रूप में सामने आते हैं। उनकी रचनाएँ आदर्शवादी कल्पनाओं से बंधी नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को साहित्यिक स्तर पर प्रतिष्ठित करती हैं। यही कारण है कि उनके साहित्य में उनके वैचारिक व्यक्तित्व की गहरी छाप

दिखाई देती है। वे जीवन के उस यथार्थ को ही अपनी कृतियों में रूपायित करते हैं, जिसे वे आधुनिक जीवन-दृष्टि के अनुरूप और व्यवहारिक दृष्टि से उपयोगी मानते हैं। हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी जी का पदार्पण कहानीकार के रूप में हुई। 'भटकती राख', 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'पटरियाँ' आदि उनके प्रसिध्ठ कहानी-संग्रह है। उन्होंने 1967 ई. पहला उपन्यास 'झरोखे' लिखा। 'झरोखे' एक छोटा सा उपन्यास है, जिसमें उपन्यासकार ने छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से एक बालक की मनोदशा को चित्रित करने का प्रयास किया है। 'कड़ियाँ' भीष्म साहनी जी का दूसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1970 ई. में हुआ था। 'तमस' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1973 में हुआ था। यह उपन्यास सांप्रदायिक दंगों की करुण कहानी है। प्रस्तुत इकाई में हम 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु, समीक्षा और उपन्यासकार भीष्म साहनी जी से परिचय प्राप्त करेंगे।

12.3 उपन्यासकार 'भीष्म साहनी' का परिचय

साठोत्तरी हिंदी साहित्य में भीष्म सहनी एक महत्वपूर्ण नाम है। जनवादी साहित्यकार के रूप में पहचाने जाने वाले भीष्म साहनी (1915-2003) का जन्म रावलपिंडी, पाकिस्तान में हुआ था। विभाजन के उपरान्त उनका परिवार भारत आ बसा। अर्थात उनका जन्म 8 अगस्त 1915 और देहांत 12 जुलाई, 2003 को हुआ। साहनी के अनुसार- ''बचपन रावलपिंडी में बीता। रावलपिंडी छोटा-सा शहर था, लेकिन देश के जीवन की लगभग सभी प्रवृत्तियों की झलक वहाँ मिल जाती थी। नगर का एक भाग कैंटोनमेंट कहलाता था, जहाँ गोरे फौजयिों की छावनी थी, अंग्रेज हाकिमों के बँगले, क्लबें और सिनेमाघर थे। यह हिस्सा बड़ा साफ-सुथरा था, खुली सड़कें, बागीचे, सड़कों के किनारे साएदार पेड़-पौधे। यहाँ अंग्रेजों का दबदबा था और पाश्चात्य संस्कृति की अच्छी झलक भी मिलती थी। दूसरा हिस्सा शहर कहलाता था-गन्दा, तंग अँधेरी गलियाँ, कीच, लोगों की भीड़। यहाँ पर कांग्रेस के जुलूस भी निकलते, गुरुद्वारे और आर्यसमाज के भी, मुहर्रम के ताजिए भी निकलते। गाहे-ब-गाहे साम्प्रदायिक तनाव भी होता, मगर लोग आम तौर पर बड़े स्नेहभाव से एक-दूसरे के धर्म की मर्यादाओं की कद्र करते हुए रहते थे।'' उनके पिता हरवंशलाल साहनी थे और माता का नाम लक्ष्मी देवी था। बचपन में भीष्म जी का परिवार बहुत बड़ा नहीं था। उनके

माता-पिता, बड़े भाई बलराज साहनी, दो बहनें और घर का सेवक तुलसी ही परिवार के सदस्य थे। जब भीष्म उन्नीस वर्ष के थे, तभी उनकी एक बहन का देहांत हो गया। उस समय घर में उसकी शादी की तैयारियाँ चल रही थीं। संयोग से उसी समय उनकी बड़ी बहन ने एक बेटी को जन्म दिया। घर के कुछ लोग यह मानने लगे कि शायद उसी बहन की आत्मा नवजात शिशु के रूप में लौट आई है। उस समय घर में एक ओर शोक की चीख-पुकार और दूसरी ओर नवजात के रोने की आवाज गूंज रही थी। इस घटना ने भीष्म जी के जीवन पर गहरी छाप छोड़ी। वे स्वयं कहते हैं कि- ''मेरे बचपन ने मुझे और कुछ दिया हो या नहीं दिया हो, पर थोड़ा दर्द जरूर दिया है। धनी परिवारों के बच्चों का जैसा तिरता-सा बचपन मेरा नहीं था।''

साहनी जी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर शुरू हुई थी। घर में ही उन्होंने संस्कृत और हिंदी भाषा से परिचय प्राप्त की, उसके बाद उनको गुरुकुल भेज दिया गया। इसके बाद उन्होंने रावलपिंडी के डी.ए.वी. स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। दसवीं कक्षा पूरी करने के बाद वे डी.ए.वी. इंटरमीडिएट कॉलेज, रावलपिंडी में पढ़ाई करते रहे। वर्ष 1937 में उन्होंने लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए की उपाधि प्राप्त की। साहनी जी ने वर्ष 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की और लम्बे समय तक अंग्रेजी साहित्य के अध्यापक रहें।

भीष्म साहनी की शादी सन् 1943 में श्रीमती शिला से हुई थी। उनके दो बच्चे एक लड़का और एक लड़की है।

भीष्म साहनी के बारे में कृष्णा सोबती लिखती है- ''भीष्म वह चेहरा है जो आप में से किसी का बेटा हो सकता हैं, किसी का भाई, किसी का भतीजा और हर किसी का दोस्त। कहने का मतलब यह कि आप किसी भी कबीले में भीष्म जैसे बरखुरदार को मजबूती से बँधा देख सकते हैं। भीष्म जी जो हैं वह सामने हैं। जितनी आँख और सब्र आपके पास है, उतना ही सहजपन आप भीष्म के इर्द-गिर्द देख सकते हैं। भीष्म के पास कोई हाशिया नहीं है। कोई पर्दा नहीं। यह सादगी पसंद सादा मिजाज इंसान है।''

भीष्म साहनी जी ने एम.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद ही बिना वेतन के अध्यापन कार्य शुरू कर दिया। इसके साथ ही वे व्यापार में भी लगे हुए

थे, जो मुख्यत: कपड़े का व्यापार था। अनेक प्रयास करने के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य आरम्भ किया। वे प्रसिद्ध अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। साहित्य-लेखन के अतिरिक्त वे 'इप्टा' जैसी सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। कहानी, उपन्यास, नाटक और जीवनी- सभी विधाओं में उन्होंने महत्ववपूर्ण योगदान दिया। उनके चर्चित उपन्यास 'तमस' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी उपन्यास पर गोविन्द निहलानी ने प्रसिद्ध धारावाहिक 'तमस' बनाया, जिसे व्यापक ख्याति मिली। कहानी की परंपरा में उन्हें प्रेमचंद का उत्तराधिकारी माना जाता है। आलोचना जगत में यह बहस रही कि भीष्म साहनी को किस श्रेणी का यथार्थवादी लेखक कहा जाए- 'अनुभववादी', 'आलोचनात्मक यथार्थवादी' या 'समाजवादी यथार्थवादी'। स्वयं भीष्म साहनी इन वाद-विवादों से परे रहकर केवल यह स्वीकार करते हैं कि उनका लेखन समाज के निकट और समाजोन्मुखी यथार्थ पर आधारित है। भीष्म साहनी के कथाकार की निर्मिति भारत-पाकिस्तान के बँटवारे के तौर पर हुई थी जिसकी छाप उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्पष्ट देखी जा सकती है।

हिन्दी लेखकों में भीष्म साहनी पहले ऐसे लेखक हैं जिन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। यह सम्मान उन्हें वर्ष 1975 में उनकी प्रसिद्ध कृति **'तमस'** के लिए प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त उनके उपन्यास 'झरोखे' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भी उन्हें पुरस्कृत किया। भीष्म जी के नाटक **'कबिरा खड़ा बाजार में'** को भी अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। वर्ष 1975 में उन्हें पंजाब सरकार ने 'शिरोमणि लेखक पुरस्कार' से सम्मानित किया और 1980 में एफ्रो-एशियाई लेखक संघ द्वारा 'लोटस पुरस्कार' दिया गया। सन् 1970 में भारत में जब चौथा एफ्रो-एशियाई लेखक सम्मेलन आयोजित हुआ, तभी से वे इस संघ से जुड़े। बाद में, 1985 में वे इसके कार्यकारी महासचिव नियुक्त किए गए और 1986 में आठवें सम्मेलन में अध्यक्ष मंडल के सदस्य चुने गए।

भीष्म साहनी ने कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, निबंध आदि हर विधा में रचना की। जैसे-

कहानी- 'मुखदर्शन', 'अमृतसर आ गया है', 'पाली', 'ओबरा का घोंसला', 'भोलाराम का जीव' और **'साधु' आदि**। इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं-

1. **मुखदर्शन**- यह कहानी मानवीय स्वभाव की जिज्ञासा और दिखावे की प्रवृत्ति पर आधारित है। इसमें साधारण-से प्रसंग को बड़े ही रोचक और व्यंग्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

2. **अमृतसर आ गया है**- यह कहानी भारत-विभाजन की त्रासदी को दर्शाती है। ट्रेन यात्रा के दौरान बँटवारे का दर्द, भय और असुरक्षा को लेखक ने संवेदनशीलता से चित्रित किया है।

3. **पाली**- 'पाली' कहानी विभाजन की सबसे मार्मिक रचनाओं में से एक है। इसमें एक हिंदू परिवार का बच्चा, पाली, दंगों के बीच मुस्लिम परिवार में रह जाता है और फिर दोनों परिवारों के बीच उसका अपनापन एक गंभीर प्रश्न खड़ा कर देता है।

4. **ओबरा का घोंसला**- इस कहानी में मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंधों की गहरी झलक है। यह पर्यावरण, संवेदना और मानवीय सहअस्तित्व पर आधारित रचना है।

5. **भोलाराम का जीव**- व्यंग्यात्मक शैली में लिखी यह कहानी उस सरकारी व्यवस्था पर चोट करती है, जिसमें मरने के बाद भी भोलाराम की आत्मा फाइलों के चक्कर काटती रहती है। यह नौकरशाही की विसंगतियों को उजागर करती है।

6. **साधु** - इस कहानी में धर्म के नाम पर पाखंड और साधुओं की स्वार्थी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। इसमें समाज में व्याप्त अंधविश्वास और शोषण की ओर संकेत मिलता है।

कहानी संग्रह : 'भाग्य रेखा' (1953), 'पहला पाठ' (1975), 'भटकती राख' (1966), 'पटरियाँ' (1973), 'वाङ्चू' (1978), 'शोभायात्रा' (1981), 'निशाचर' (1983), 'पाली' (1989), डायन (1998) आदि।

उपन्यास:

'झरोखे' (1967), 'कड़ियाँ' (1970), 'तमस' (1973), 'बसन्ती' (1980), 'मय्यादास की माड़ी' (1988), 'कुंतो' (1993), 'नीलू नीलिमा नीलोफर' (2000) आदि।

संक्षिप्त में इन उपन्यासों का परिचय निम्नलिखित हैं-

- 'झरोखे' (1967)- यह उपन्यास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारतीय समाज और उसमें आए मूल्यों के विघटन को दर्शाता है। पात्रों के माध्यम से परिवार, रिश्तों और सामाजिक बदलावों की झलक मिलती है।
- **'कड़ियाँ'** (1970)- इसमें मानवीय संबंधों की जटिलता और उनके बीच छिपे मनोवैज्ञानिक तनावों का चित्रण किया गया है। यह जीवन को जोड़ने और तोड़ने वाली परिस्थितियों की 'कड़ियाँ' को खोलता है।
- **'तमस'** (1973)- यह भीष्म साहनी की सबसे प्रसिद्ध रचना है, जिसमें भारत विभाजन और सांप्रदायिक दंगों की त्रासदी का यथार्थपरक चित्रण है। इसमें आम आदमी की पीड़ा और राजनीतिक स्वार्थों का पर्दाफाश किया गया है। प्रस्तुत इकाई में इस उपन्यास का सभी पहलुओ पर विस्तारित रूप से विश्लेषण किया गया हैं ।
- **'बसन्ती'** (1980)- यह उपन्यास स्त्री-जीवन पर केंद्रित है। बसन्ती का चरित्र उस भारतीय नारी का प्रतीक है जो परम्परा और आधुनिकता के बीच संघर्ष करते हुए अपने अस्तित्व की तलाश करती है।
- **'मय्यादास की माड़ी'** (1988)- विभाजन-पूर्व पंजाब की पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह उपन्यास सांस्कृतिक मिश्रण, विभाजन की विडंबना और मानवीय रिश्तों की टूटन को दर्शाता है। मय्यादास की हवेली यहाँ बदलते समय का प्रतीक है।
- **'कुंतो'** (1993)- इसमें भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं का आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्पाठ किया गया है। कुंतो का चरित्र महाभारत की परंपरा से जुड़ते हुए भी समकालीन स्त्री-चेतना को उजागर करता है।
- **'नीलू नीलिमा नीलोफर'** (2000)- यह उपन्यास आधुनिक भारतीय समाज में प्रेम, विवाह और मानवीय संबंधों के नए समीकरणों की पड़ताल करता है। इसमें भावनात्मक जटिलता और मूल्यगत संकट का चित्रण है।

नाटक : 'हानूश' (1977), 'कबिरा खड़ा बाज़ार में' (1981), 'माधवी' (1984), 'मुआवज़े' (1993), 'रंग दे बसंती चोला' (1996), 'फूजीयामा' (अनुदित नाटक), 'आलमगीर' (1999) आदि। संक्षिप्त में उपर्युक्त नाटकों का

परिचय निम्नलिखित हैं-

- **हानूश** (1977) - यह नाटक कला, कलाकार और सत्ता के संबंधों पर केंद्रित है। इसमें कलाकार की संवेदनशीलता और शासकों द्वारा उसके शोषण को दिखाया गया है।
- **कबिरा खड़ा बाज़ार में** (1981) - इसमें संत कबीर के विचार, उनकी वैचारिक क्रांति और समाज की रुढ़िवादी मानसिकता से टकराव का चित्रण है। यह नाटक सामाजिक अन्याय और धार्मिक पाखंड के विरुद्ध कबीर की आवाज को सामने लाता है।
- **माधवी** (1984) - महाभारत की कथा पर आधारित यह नाटक त्याग और बलिदान की प्रतीक नारी माधवी की दुखांत कथा प्रस्तुत करता है। इसमें स्त्री की अस्मिता और शोषण का गहरा चित्रण है।
- **मुआवज़े** (1993) - यह नाटक विभाजन और दंगों से प्रभावित लोगों की पीड़ा और विस्थापन को दर्शाता है। इसमें मानवता की त्रासदी और राजनीतिक स्वार्थों का यथार्थ उभरता है।
- **रंग दे बसंती चोला** (1996)- यह नाटक स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी आंदोलन के उत्साह को सामने लाता है। इसमें शहीदों के बलिदान और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण को नाटकीय रूप दिया गया है।
- **फूजीयामा (अनुदित नाटक)**- जापानी पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक में युद्ध, हिंसा और मानव मूल्यों की समस्या को उठाया गया है। इसका अनुवाद भीष्म साहनी ने किया था।
- **आलमगीर** (1999)- यह ऐतिहासिक नाटक औरंगज़ेब (आलमगीर) के जीवन, सत्ता संघर्ष और उसकी नीतियों पर आधारित है। इसमें धर्म और राजनीति के टकराव को ऐतिहासिक संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है।

निबंध संकलन : 'अपनी बात'

यात्रा वृतान्त- 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'

जीवनी- 'माई ब्रदर- बलराज'



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 1. भीष्म साहनी जी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

प्रश्न 2. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने किस उपन्यास के लिए भीष्म साहनी जी को पुरस्कृत किया था?

प्रश्न 3. हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी जी का पदार्पण किस रूप में हुआ था?

12.4 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु और समीक्षा

अंग्रेज सरकार की हिमायती मुराद अली अंग्रेज सरकार के इशारे पर चमार नत्थू को पाँच रूपए देकर उससे एक सुअर मरवाता है और उसे मस्जिद में फेंकवा देता है। मुराद अली नत्थू से कहता है- ''इधर का इलाका मुसलमानी है। किसी मुसलमान ने देख लिया तो लोग बिगड़ेंगे। तुम भी ध्यान रखना। हमें भी यह काम बहुत बुरा लगता है। मगर क्या करें, साहब का हुक्म है, कैसे छोड़ दें।'' परिणामस्वरूप दूसरा वर्ग भी एक गाय की हत्या करवा देता है। इन दोनों घटनाओं की खबर शहर में फैलती है और शहर के लोगों में विद्वेष बढ़ने लगती है। सारे शहर में तनाव फैल जाता है। शहर में शांति स्थापित करने के लिए नागरिकों का एक शिष्टमंडल अंग्रेज कलेक्टर 'रिचर्ड' से मिलता है, पर कलेक्टर से कोई ठोस आश्वासन न पाकर वापस आ जाता है। कांग्रेस नेता श्री बख्शीजी और कमुनिस्ट नेता देवदत्त का एकता का प्रयास विफल होता है। पुरे शहर में आगजनी, हत्या और लूट का तांडव होने लगता है। यह आगजनी गावों तक फैलती है। खानपुर, इलाहीबख्श और सैयदपुर जैसे गांवों में भी लूटपाट और हत्याएँ होती हैं। सिख समुदाय भी सैयदपुर के गुरूद्वारे में एकत्र होकर मोर्चाबंदी करते हैं। यहाँ मुस्लिम लोग भी मोर्चाबंदी करते हैं। दो दिनों तक भयंकर लड़ाई होती है और पाँचवें दिन अंग्रेज सरकार शहर में शांति कायम करने का प्रयास शुरू करती है। शहर में कर्फ्यू लगा दिया जाता है और हर जगह फौजी जवान तैनात कर दिए जाते हैं। गाँव और शहर में हवाई जहाज चक्कर लगाता है। एक ही दिन में माहौल बदल जाता है। दंगे के बाद का दृश्य और भी भयंकर है। लोग अपने घर से दूर हो गए और उनकी सम्मत्ति या तो जलकर राख हो गयी या लुट ली गयी है। परिवार के लोग या तो मारे गए हैं या लापता हैं। कुछ ने अपने घरों को जलते देखा, अपने परिवार के लोगों को कत्ल होते देखा,

अपनी बहू-बेटियों की इज्जत लुटते देखा।

अंग्रेज कलेक्टर 'रिचर्ड' के पहल से शांति कायम करने के लिए एक 'अमन कमेटी' का गठन होता है। इस कमेटी में सात मुसलमान, पाँच हिन्दू और तीन सिख होते हैं। अमन कमेटी के सदस्य एक बस में बैठकर शहर में चक्कर लगाते हैं और हिन्दू-मुस्लिम एकता जिंदाबाद, अमन कमेटी जिंदाबाद के नारे लगाते हैं। नारे लगानेवाले लोगों में मुराद अली भी शामिल होता है और अधिक उत्साह से नारा लगाता है। इस प्रकार जिसने इस दंगे की शुरुआत की थी, उसी की प्रेरणा से और उसी के द्वारा इसका अंत भी होता है।



महत्वपूर्ण बिंदु-

- 'झरोखे' भीष्म साहनी का पहला उपन्यास है।
- 'तमस' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1973 में हुआ था।
- भीष्म साहनी जी के पीता हरवंश लाल साहनी कपड़ो के दलाली का कम करते थे।

समीक्षा: 'तमस' स्वतन्त्रतापूर्व भारत की पाँच दिनों की कहानी है। इस उपन्यास में भीष्म साहनी जी ने भारत विभाजन की त्रासदी और साम्प्रदायिक दंगे आदि का चित्रण बड़े ही सजग तरीके से किया है। उपन्यासकार स्वयं आजादी पूर्व की परिस्थितियों को झेला था।

इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने अंग्रेजी शासन की 'फूट डालो और राज करो' नीति के कारण हिन्दू और मुसलमानों के बीच हुए सांप्रदायिक दंगों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार ने तत्कालीन समय में मुसलमानों, हिन्दुओं और सिक्खों के आपसी मतभेद, उस मतभेद के कारणों और उसके परणामों का चित्रण इस उपन्यास में किया है।

भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितिओं के साथ साथ मद्यम वर्ग हिन्दू, मुस्लिम और सिक्ख परिवारों के आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन, विश्वास आदि का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है। हिन्दू और मुसलमान किस तरह धार्मिक कट्टरता के स्वीकार हो गए थे, किस तरह दोनों संप्रदाय में अमानवीयता घर कर गए थे, उसका सूक्ष्म चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। हिन्दू और मुसलमान एक-दुसरे पर आक्रमण के लिए हथियारों की

तैयारी किस तरह करते थे, उसका सूक्ष्म चित्रण साहनी जी ने प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए-''युवकों को तेल उबालने के लिए कड़ाही नहीं मिल रही थी। खिड़की के दासे पर तीन चाकू, एक छुरा, एक छोटी सी कृपाण साथ-साथ जोड़कर रख दिए गए थे। कमरे के कोने में दस लाठियाँ रखी थीं जिनके सिर पर पीतल की मूठ और नीली मेंखें गाढ़ दी गई थीं। दीवार के साथ, एक-के-साथ एक तीर कमान लटक रहे थे। बोधराज लेटकर बाण चला सकता था, शब्द बेधी बाण चला सकता था, शीशों में अक्स देखकर बाण चला सकता था, लटकती रस्सी को निशाना बना सकता था। बाणों के सिर पर लगाने के लिए वह धातु की तिकोनी नोंकें बनवा लाया था और अपने साथियों से उनकी संभावनाएँ बयान करता रहा था। इसकी नोंक पर संखिया रगड़ दें तो वह विषबाण बन जाएगा, इसके आगे मुश्क कपूर लगा दें तो अग्निबाण बन जाएगा। नीला थोथा लगा दें तो बाण जहाँ लगेगा इसमें से जहरीली गैस निकलेगी।'' इसी तरह मुसलमानों की तैयारियों के बारे में भीष्म साहनी लिखते हैं-''यहाँ पर गाँव के सभी मुसलमान, किसान, तेली, नानबाई अब मुजाहिद बन गये थे, हरे छज्जे वाले शेखों के मकानों में, कस्बे में मुसलमान असला इकट्ठा कर रहे थे। काफिरों के खिलाफ जिहाद की तैयारियाँ चल रही थीं। आँखों में यहाँ भी खून उतर आया था और कुर्बानी का जज्बा दिलों में लहरें मार रहा था।''



अपनी प्रगति जांचें-

प्रश्न 4. भीष्म साहनी जी द्वारा अनुदित एक नाटक का नाम लिखिए?

प्रश्न 5. भीष्म साहनी जी के घर पर कोन कोन सदस्य थे?

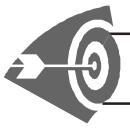
इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दोनों लड़ रहे थे। ऐसे वातावरण में सोहनसिंह और मीरदाद दोनों अपने-अपने धर्मों के लोगों को समझाते हुए कहते है- 'अंग्रेज अपने फायदे के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को आपस में लड़वा रहे हैं।' पर इनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं देते हैं। उपन्यासकार भीष्म साहनी ने अंग्रेज किस प्रकार हिन्दू और मुसलमानों में विभेद लाकर शासन करना चाहते थे, उसका स्पष्ट संकेत 'लीजा' नामक पात्र के माध्यम से स्पष्ट किया है- ''मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।''

किसी ऐतिहासिक घटना को उपन्यास का केंद्र बनाते समय आवश्यक होता है कि उपन्यासकार सचेत होकर उस घटनाचक्र को पाठकों के सम्मुख रखें। भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक दंगे, दंगे के कारणों और परिणामों को निपुणता के साथ बेनकाब किया है। इस दृष्टि से हम 'तमस' उपन्यास को एक सफल उपन्यास कह सकते हैं और भीष्म साहनी को एक सफल उपन्यासकार।



12.5 सारांश

भीष्म साहनी के उपन्यासों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उनके साहित्यिक दृष्टिकोण में यथार्थवादी चेतना प्रमुख है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में प्रगतिशीलता की ध्वनि सुनाई देती है। उनके उपन्यासों में सामान्य लोगों के मौलिक विवेक और उनकी सांस्कृतिक ऊँचाइयों की झलक मिलती है। उनका कथा-साहित्य आम जनता की पीड़ा, शोषण के विरुद्ध बेचैनी और आक्रोश का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। वे अपने समय की जटिल परिस्थितियों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहे और उन्होंने अपने युगीन परिवेश को रचनाओं में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया। 'तमस' उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिक विद्वेष कारणों और परिणामों को पाठकों के सम्मुख रखा है। 'फूट डालो और राज करो' नीति के तहत अंग्रेज सरकार किस प्रकार सांप्रदायिक दंगे और देश विभाजन का व्यूह रच रहे थे, उसका स्पष्ट संकेत इस उपन्यास में मिलता है। साहनी जी ने सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अतिरिक्त हिन्दू, मुस्लिम और सिक्खों के रहन-सहन, आचार-विचार और रीति-रिवाजों को भी सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।



12.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी जी का पदार्पण कहानीकार के रूप में हुई। उन्होंने 1967 ई. पहला उपन्यास 'झरोखे' लिखा। अधिक जानने के लिए 'प्रस्तावना' और 'उपन्यासकार भीष्म साहनी का परिचय' को ध्यानपूर्वक पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर : 'झरोखे' उपन्यास के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भीष्म साहनी जी को पुरस्कृत किया था।

प्रश्न 3 का उत्तर : हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी जी का पदार्पण कहानीकार

के रूप में हुआ था।

प्रश्न 4 का उत्तर : फूजीयामा (अनुदित नाटक) भीष्म साहनी जी द्वारा अनुदित एक नाटक है।

प्रश्न 5 का उत्तर : भीष्म साहनी जी के माता-पिता, बड़े भाई बलराज साहनी, दो बहनें और घर का सेवक तुलसी ही परिवार के सदस्य थे।



12.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- सक्सेना, राजेश्वर, ठाकूर, प्रताप. (संपा.) (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और रचना. वाणी प्रकाशन।
- बाबर, डॉ. सरेश. (2019). भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन. वाणी प्रकाशन।
- कुचेकर, डॉ. भारत. (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और कृतित्व. वाणी प्रकाशन।
- गासो, रिन्द्री. (2019). भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना. वाणी प्रकाशन।
- साहनी, भीष्म. (1973). तमस. राजकमल प्रकाशन।
- साहनी, भीष्म. (1975). तमस (उपन्यास). साहित्य अकादमी।

12.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. भीष्म साहनी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. भीष्म साहनी को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस कृति पर मिला?
3. भीष्म साहनी का प्रमुख उपन्यास तमस किस विषय पर आधारित है?
4. भीष्म साहनी के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता क्या है?
5. भीष्म साहनी का पहला उपन्यास कौनसा है?
6. 'तमस' उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ था?
7. भीष्म साहनी द्वारा रचित चार उपन्यास का नामोल्लेख कीजिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. उपन्यासकार भीष्म साहनी का परिचय दीजिए।

2. 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. 'तमस' उपन्यास की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।
4. भीष्म साहनी के जीवन एवं साहित्यिक योगदान का विवेचन कीजिए।
5. तमस उपन्यास में विभाजन की त्रासदी का चित्रण कीजिए।
6. भीष्म साहनी के चार कहानियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

******

इकाई-13 : तमस (भाग-II)

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 'तमस' उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य

13.4 'तमस' उपन्यास में प्रगतिशील जीवन मूल्य

13.5 'तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता

13.6 'तमस' उपन्यास में सामाजिक राजनैतिक परिवेश

13.7 सारांश

13.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

13.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

13.10 अभ्यास प्रश्न

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- तमस उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य को समझेंगे।
- तमस उपन्यास में उभरकर आए प्रगतिशील जीवन मूल्यों की पहचान कर पाएंगे।
- प्रस्तुत उपन्यास में हुए साम्प्रदायिकता की जड़ों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण को समझेंगे।
- राजनीतिक परिवेश का यथार्थ चित्रण को जानेंगे।
- उपन्यास में दिखाई गई गहरी संवेदनाओं और सहानुभूति की पहचान होगी।

13.2 प्रस्तावना

भीष्म साहनी का तमस उपन्यास भारतीय समाज में विभाजन-पूर्व के कठिन और संवेदनशील समय का मार्मिक दस्तावेज है। यह उपन्यास न केवल

साम्प्रदायिक दंगों और राजनीतिक गुटबंदी की त्रासदी को उजागर करता है, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यों की खोज भी प्रस्तुत करता है। तमस की मूल समस्या साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता और मानवता के प्रति उदासीनता है, जबकि इसका उद्देश्य पाठक में सहानुभूति, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं को जागृत करना है। उपन्यास में प्रगतिशील जीवन मूल्यों का चित्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साहनी ने अपने पात्रों जैसे नत्थू और मुराद अली- के माध्यम से दलित, गरीब, स्त्री और मजदूर वर्ग की समस्याओं को उजागर किया है और समाज में समानता, न्याय और मानवीयता की आवश्यकता को रेखांकित किया है। तमस में साम्प्रदायिकता केवल ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त मानसिकता और स्वार्थपूर्ण राजनीति का परिणाम है। साहनी ने धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास के कारण फैलती नफरत, हिंसा और सामाजिक विघटन का यथार्थ चित्रण किया है। सामाजिक-राजनीतिक परिवेश के संदर्भ में उपन्यास दर्शाता है कि विभाजन-पूर्व भारत में जनता किस प्रकार धर्म, जाति और सांस्कृतिक अस्मिताओं के माध्यम से अपने अस्तित्व और सुरक्षा की तलाश करती थी। अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति, राजनीतिक स्वार्थ और सामाजिक असमानताएँ इस समय की पीड़ा को और गहरा करती हैं। तमस का यह सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पाठक को केवल ऐतिहासिक घटनाओं से ही परिचित नहीं कराता, बल्कि उस युग के यथार्थ और मानवीय संघर्ष को भी सामने लाता है। इस प्रकार यह उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय दृष्टि से गहन संदेश देता है और पाठक को सोचने, समझने और वर्तमान सामाजिक समस्याओं से जोड़ने का अवसर प्रदान करता है।

13.3 तमस उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य

'तमस' उपन्यास सांप्रदायिक समस्या को उजागर करने के लिए लिखा गया है। अंग्रेज सरकार हिन्दू और मुसलमानों में विभेद लाकर शासन करना चाहती थी, उसी का परिणाम है सांप्रदायिक समस्या। लोग अज्ञानता और धार्मिक अंधविश्वास के चलते एक-दूसरे के दुश्मन बन चुके थे। अंग्रेज सरकार इस समस्या को दूर कर सकती थी, पर वह करना नहीं चाहती थी। 'तमस' उपन्यास के बारे में रमेश उपाध्याय लिखते हैं- ''समाज में व्याप्त अज्ञान और अंधविश्वास

ने लोगों को इतना धर्मान्ध बना दिया था कि विवेक के लिए कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी और दोनों तरफ से विवेकशील लोग अपना प्रभाव खो चुके थे । उनके समझाने-बुझाने से सांप्रदायिक तनाव कम नहीं हो सकता था और अंग्रेज सरकार उस तनाव को दूर करने में समर्थ होते हुए भी उसे दूर करना नहीं चाहती थी। सांप्रदायिक विष इतना फैल चुका था कि धर्म और संप्रदायों में आस्था न रखने वाले कम्युनिस्टों का भी मनोबल टूटने लगा था। यह वाकई एक जटिल परिस्थिति है और इसके समझने में किसी तरह का सरलीकरण सहायक नहीं हो सकता। इसलिए भीष्म साहनी ने बहुत-सी चीजों का फालतूपन उजागर करते हुए, उन तत्वों की तरफ पाठक का ध्यान खींचने की चेष्टा की है, जो जनता को अज्ञान में रखते हैं और अज्ञान-अंधकार का लाभ उठाकर उसकी भावनाओं को गलत दिशा में मोड़ देते हैं।''

साप्रदायिक दंगे का स्वीकार समाज के कमजोर और गरीब वर्ग होते हैं। चाहे हिंदू हो या मुसलमान सांप्रदायिक जहर का स्वीकार सर्वहारा वर्ग के लोग ही होते हैं। धर्माधतां मनुष्य के दिमाग को विकृत बना देता है और इस विकृत मानसिकता के कारण ही सांप्रदायिक दंगे होते हैं, जिसका दुष्परिणाम समाज के कमजोर वर्गों को सालों तक झेलना पड़ता है।

उपन्यासकार भीष्म साहनी ने इस उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास और धर्मांधता को कुशलतापूर्वक पर्दाफाश किया है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने धर्म और राजनितिक अंतर्विरोधों को भी सरलता के साथ स्पष्ट किया है। राजनीति का मुख्य उद्देश्य सत्ता हासिल करना हो गया है। धर्म को राजनीति का अंग बना लेने के कारण हमें सांप्रदायिक दंगे जैसे भयावह समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब धर्म के आड़ में राजनेता सत्ता हासिल करना चाहते हैं, जिसके चलते हम धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूल जाते हैं, सहिष्णुता और भाईचारा को ताक पर रख देते हैं। इस संदर्भ में भीष्म साहनी लिखते हैं- ''जहाँ पर हम अपने धर्म को अपनी राजनीति का अंग बना लेते हैं वहीं पर हम सांप्रदायिकता के वास्तविक, भयावह रूप को प्रस्तुत करने लगते हैं। राजनीति का मुख्य लक्ष्य सत्ता ग्रहण करना बन गया है। जब सत्ता ग्रहण कर पाने की होड़ में हम धर्म की आड़ लेते हैं, तब हम एक ओर धर्म के वास्तविक स्वरूप को विकृत करते हैं, उसकी मानवीयता,

उसके सदुपदेश, सहिष्णुता आदि को तो ताक पर रख देते हैं, दूसरी ओर उन तत्वों को प्राथमिकता देने लगते हैं, जो एक जाति को दूसरी जाति से अलग करते हैं, जैसे पूजा-पाठ की विधियाँ, धर्माचार, व्रत-उपवास आदि। इस तरह जब हम अपनी जाति की अलग पहचान बनाना चाहते हैं, तब एक व्यक्ति इन्सान न रहकर, एक हिन्दू, एक मुसलमान, एक सिक्ख आदि में बदल जाता है। सत्ता की होड़ इस जातीयता की भावना को उग्र और आक्रामक बनाती है। तब धर्म के नाम पर हमारे सभी कुकर्म, हिंसा, बर्बरता, घृणा, द्वेष सभी यथोचित् ठहराए जाने लगते हैं। इस तरह सांप्रदायिकता का विकराल रूप सामने आने लगता है।''

अंत में भीष्म साहनी सांप्रदायिक समस्या को समाप्त करने के लिए साम्प्रदायिकता विरोधी ताकतों को एकजुट होने पर जोर देते हैं और व्यवस्थित और संगठित होने का आग्रह करते हैं। भीष्म साहनी जानते थे कि संगठित हुए बिना इस समस्या हल असंभव है। उपन्यास के माध्यम से भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक समस्या और इस साम्प्रदायिकता के पीछे के कारणों और दुष्परिणामों को सरलता के साथ उजागर किया है और अंत में इस समस्या से छुटकारा पाने का रास्ता भी सुझाया है।



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 1. 'तमस' उपन्यास की मूल समस्या क्या है?

प्रश्न 2. 'तमस' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 3. 'तमस' में अंग्रेजी हुकूमत की भूमिका क्या है?

13.4 'तमस' उपन्यास में प्रगतिशील जीवन मूल्य

भीष्म साहनी सदा ही प्रगतिशील चिंतन के संवाहक रहे हैं। उनके साहित्य में जीवन के प्रगतिशील मूल्यों का गहन प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। वे अपने लेखन में परिवारगत जटिलताओं, वृद्धावस्था से जुड़ी कठिनाइयों, दाम्पत्य जीवन की उलझनों, विधवा एवं प्रेम विवाह की स्वीकृति, दहेज जैसी कुप्रथाओं, बहुविवाह की समस्या, स्त्री और दलित प्रश्नों जैसे विषयों को प्रमुखता से स्थान देते हैं। इन मुद्दों को वे समयबोध और युगचेतना के साथ प्रस्तुत करते हैं। हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील धारा में भीष्म साहनी को मार्गदर्शक और अग्रज की

हैसियत प्राप्त है, इसीलिए उन्हें प्रगतिशील लेखन परम्परा का 'भीष्म पितामह' कहा जाता है। प्रगतिशील जीवन मूल्यों के प्रति उनकी निष्ठा का मूल कारण उनका पारिवारिक परिवेश था। जिस वातावरण और संस्कारों के बीच साहनी ने अपना बचपन बिताई, उसी ने उनके व्यक्तित्व और चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। भारतीय जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आज भी गाँवों में निवास करता है और वास्तव में गाँव ही भारत की जीवन-रेखा माने जाते हैं। यहाँ का जीवन मुख्यत: कृषि पर निर्भर है। दुर्भाग्य से, स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक बाद भी किसानों की स्थिति में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हो पाया। आज भी अंधविश्वास, शोषण और गरीबी जैसी समस्याएँ यथावत बनी हुई हैं। जहाँ एक ओर शहर और महानगर तीव्र गति से विकसित हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गाँव निरंतर उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। सरकारों का ध्यान भी अपेक्षाकृत कम ही गाँवों की ओर जाता है। परिणामस्वरूप ग्रामीण जीवन आज भी अभावों और कठिनाइयों से घिरा हुआ है। भीष्म साहनी ने अपने समय की इन चुनौतियों को निकटता से समझा और अनुभव किया, इसी कारण उनकी रचनाओं में प्रगतिशील मानव जीवन मूल्यों का स्वर मुखर होकर सामने आता है।

भीष्म साहनी का तमस केवल विभाजन का उपन्यास नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की जटिल संरचना, विशेषकर शोषण की परंपरा, का गहरा दस्तावेज है। इसमें नत्थू और मुराद अली जैसे पात्र भारतीय समाज के उस यथार्थ को सामने लाते हैं जहाँ गरीब और दलित वर्ग निरंतर सामंती व्यवस्था और ऊँच-नीच की मानसिकता का शिकार रहा है। ये पात्र किसी व्यक्तिगत पीड़ा के प्रतीक मात्र नहीं हैं, बल्कि समाज की उस व्यापक स्थिति के प्रतिनिधि हैं जिसमें आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक आधार पर शोषण लगातार जारी है। नत्थू, जो जानवर की खाल उतारकर अपना जीवन यापन करता है, उसका संतोष भी अपने आप में विडंबना है। वह खुश है कि कम से कम मेहनत करने पर उसे अठन्नी रुपया तो मिल जाता है, परंतु उसके भीतर यह पीड़ा कहीं न कहीं दबकर रह जाती है कि समाज उसकी मेहनत और अस्तित्व को केवल 'खाल उतारने वाले' की हैसियत से ही देखता है। नत्थू का चरित्र यह बताता है कि भारतीय ग्रामीण समाज में निचली जातियों और गरीबों का शोषण किस हद तक गहराई से पैठा हुआ है। इसी प्रकार मुराद अली का जीवन भी दमन और

अन्याय का उदाहरण है। वह उस तबके का प्रतिनिधि है जो अपने श्रम और ईमानदारी के बावजूद सामंती ताकतों के आगे असहाय बना रहता है और इससे समझ आता है कि सामंती समाज किस प्रकार अपनी शक्ति और प्रभाव का उपयोग गरीबों के दमन में करता है। यहाँ 'हाकिम' का चरित्र केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे उस शोषणकारी तंत्र का प्रतीक है जो गरीब और मजलूम तबके को हाशिए पर धकेलता है।



महत्वपूर्ण बिंदु-

- शिव कुमार मिश्र का कहना है कि- ''साम्प्रदायिकता मूलत: एक राजनीतिक विचारधारा है, जिसका जन्म हिन्दू-मुसलमान अभिजात वर्ग की राजनीतिक सत्ता पाने की प्रतिस्पर्द्धा के तहत हुआ है। वह धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक समस्या नहीं है, जो कि उसके धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक पहलू हो सकते है।''
- किरण मिश्रा लिखती हैं- ''इस उपन्यास में आजादी के ठीक पहले के पंजाब और साम्प्रदायिकता का चित्रण है। उपन्यास में देश विभाजन की इस त्रासदी को भीष्म साहनी ने अपनी आँखों से देखा भी था। साम्प्रदायिक दंगों के पीछे खतरनाक मस्तिष्कों को भी प्रस्तुत किया है। यह एक वातावरण को उजागर करने वाला उपन्यास है जिसे भीष्म साहनी ने इतिहास बोध के साथ प्रस्तुत किया है।''

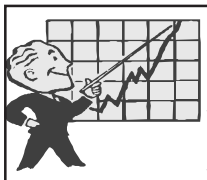
तमस के ये प्रसंग यह दिखाते हैं कि शोषण और अन्याय केवल अतीत की समस्या नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद भी समाज में ज्यों के त्यों बने रहे। नत्थू और मुराद अली का जीवन भारतीय समाज की उस कठोर सच्चाई का आईना है जहाँ गरीबों और दलितों का जीवन संघर्ष, अभाव और शोषण से भरा हुआ है। भीष्म साहनी ने इन पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया कि जब तक समाज में समानता, न्याय और मानवीयता की स्थापना नहीं होगी, तब तक यह शोषण समाप्त नहीं होगा।

13.5 तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता

भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में धर्म का स्थान प्राचीन काल से ही अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उस समय धर्म का मुख्य उद्देश्य मनुष्य

को अनुशासित करना, उसे नैतिक मूल्यों से जोड़ना तथा समाज में अच्छाइयों को प्रोत्साहन देना था। धर्म जीवन की कमियों और बुराइयों को दूर करने का एक माध्यम माना जाता था। उसमें मानवीय आचरण और नैतिकता के आदर्श सुरक्षित थे, जिसके कारण समाज में संतुलन और समरसता बनी रहती थी। किन्तु समय के साथ धर्म का स्वरूप बदलता गया। वर्तमान युग में धर्म अपनी मौलिक उपयोगिता से हटकर धीरे-धीरे व्यक्तिगत स्वार्थ साधन का साधन बनता जा रहा है। जहाँ पहले यह मानवीय उत्थान का आधार था, वहीं अब इसमें अनेक प्रकार की विसंगतियाँ, कमजोरियाँ और बुराइयाँ घर कर चुकी हैं। धर्म की आड़ में अंधविश्वास, कट्टरता और धर्मान्धता जैसी प्रवृत्तियाँ जन्म ले चुकी हैं। आज स्थिति यह है कि व्यक्ति की पहचान उसके कर्म, विचार या मानवीय गुणों से नहीं, बल्कि उसके धर्म से की जाने लगी है। समाज में आए दिन लोग एक-दूसरे को हिंदू-मुस्लिम कहकर विभाजित करते दिखाई देते हैं। धार्मिक पहचान के आधार पर व्यक्ति न केवल अलग-अलग खाँचों में बाँटा जा रहा है, बल्कि अपनी-अपनी मान्यताओं और परम्पराओं की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए निरंतर संघर्ष भी करता रहता है। यही संघर्ष आगे चलकर साम्प्रदायिकता का रूप ले लेता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म का वह स्वरूप, जो कभी नैतिकता और मानवीय उत्थान का वाहक था, आज विकृत होकर समाज में भेदभाव, संघर्ष और हिंसा को जन्म दे रहा है। साम्प्रदायिकता इसी विकृत धार्मिक चेतना की देन है, जिसने मानवता और सह-अस्तित्व के मूल्यों को गहरी चोट पहुँचाई है। साम्प्रदायिकता वह प्रवृत्ति है जिसमें धर्म का सहारा लेकर अन्य धर्मों के प्रति घृणा, अविश्वास और शत्रुता का भाव उत्पन्न किया जाता है। यह सामाजिक समरसता और मानवता की सबसे बड़ी शत्रु है। आधुनिक युग में साम्प्रदायिकता ने भारतीय समाज को जितना कलुषित और मलिन किया है, उतना प्रभाव किसी अन्य कारक ने शायद ही डाला हो। साम्प्रदायिकता न केवल समाज में विद्वेष और आपसी दूरी बढ़ाती है, बल्कि यह घृणा, अशांति और हिंसा का भी मूल कारण बनती है। इसका परिणाम यह होता है कि मनुष्य अपने मानवीय गुणों से विमुख होकर निष्ठुर और असंवेदनशील बनता चला जाता है। जब समाज में संवेदनशीलता घटने लगती है और निष्ठुरता बढ़ने लगती है, तब अशांति और विघटन का माहौल अनिवार्य हो जाता है।

भीष्म साहनी ने अपने साहित्य में इस समस्या को गहराई से समझा और उसे अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों और विभाजन की पीड़ा को आधार बनाकर श्रेष्ठ कोटि के उपन्यासों की रचना की। 'तमस' इसका सबसे सशक्त उदाहरण है, जिसमें उन्होंने विभाजन और दंगों की त्रासदी को केवल ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में ही नहीं, बल्कि गहन मानवीय करुणा और संवेदना के साथ चित्रित किया है। साहनी ने अपने लेखन के माध्यम से साम्प्रदायिकता के उस अमानवीय और विकृत स्वरूप को उजागर किया है, जो समाज को भीतर से तोड़ता और मनुष्यता के आधारभूत मूल्यों को नष्ट करता है। तमस में देश के विभाजन से पहले हुए दंगों और उन्हें भड़काने वाली साम्प्रदायिक राजनीति का यथार्थ चित्रण है। उपन्यास में स्थान का नाम स्पष्ट नहीं दिया गया है, किन्तु इसमें विभाजन-पूर्व रावलपिंडी में पाँच दिनों तक चले भीषण साम्प्रदायिक दंगों का सजीव चित्रण प्रस्तुत है। इन दंगों में न केवल शहर, बल्कि गाँव भी हिंसा की आग में झुलसते दिखाई देते हैं। ''तमस'' शब्द का शाब्दिक अर्थ है- अंधकार। उपन्यास के संदर्भ में यह अंधकार इंसानियत के लुप्त हो जाने का प्रतीक है। यह अंधकार साम्प्रदायिक मानसिकता, विनाश, रक्तपात और मानवीय संबंधों के टूटने को दर्शाता है। यहाँ 'तमस' केवल बाहरी हिंसा का चित्रण नहीं है, बल्कि यह मानवीय करुणा और नैतिकता के ह्रास का भी प्रतीक है। उपन्यास में यह भी स्पष्ट किया गया है कि 'फूट डालो और शासन करो' की अंग्रेजी नीति ने साम्प्रदायिकता को भड़काने में बड़ी भूमिका निभाई। अंग्रेजों ने योजनाबद्ध ढंग से एक धर्म के लोगों को दूसरे धर्म के विरुद्ध खड़ा किया, आपसी वैमनस्य पैदा किया और फिर मध्यस्थ बनकर शासन चलाना उनके लिए आसान हो गया। इस प्रकार विभाजन केवल राजनीतिक घटना नहीं था, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नीति का घृणित परिणाम था। भीष्म साहनी ने देवदत्त जैसे पात्र के माध्यम से यह भी दिखाया कि साम्प्रदायिक दंगों को समाप्त करने का प्रयास करना कितना कठिन कार्य है। विभिन्न पार्टियों की बैठकों और विचार-विमर्श के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि समस्या का समाधान केवल संवाद और सहअस्तित्व से ही संभव है।



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 4. 'तमस' उपन्यास का सामाजिक परिवेश कैसा है?

प्रश्न 5. 'तमस' शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

प्रश्न 6. साम्प्रदायिकता को भीष्म साहनी ने किस रूप में चित्रित किया है?

13.6 'तमस' उपन्यास में सामाजिक राजनैतिक परिवेश

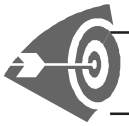
भीष्म साहनी जी द्वारा रचित 'तमस' उपन्यास विभाजन-पूर्व भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश का सजीव चित्रण है। इस समय समाज साम्प्रदायिक तनाव, अविश्वास, अंधविश्वास और गरीबी जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। सामंती मानसिकता और जातीय भेदभाव गरीब, दलित और किसानों के शोषण को और गहरा करते थे।

भीष्म साहनी का तमस उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर समान रूप से महत्व रखता है। यह केवल विभाजन और साम्प्रदायिक दंगों की ऐतिहासिक घटना का विवरण नहीं है, बल्कि उस समय के समाज की संरचना, जनमानस की संवेदनाएँ और राजनीतिक खेल-कूट का गहन अध्ययन भी प्रस्तुत करता है। साहनी अपने रचनात्मक दृष्टिकोण में केवल यथार्थ का चित्रण ही नहीं करते, बल्कि समाज को उससे मुक्ति दिलाने की संभावना को भी उभारते हैं। उनके उपन्यास में जनता की पीड़ा, असुरक्षा और भय का यथार्थवादी चित्रण मिलता है, साथ ही यह दिखाया गया है कि किस प्रकार सामाजिक असमानता, धार्मिक कट्टरता और राजनीतिक स्वार्थजनित साम्प्रदायिकता जनमानस की संवेदनाओं को प्रभावित करती है। विभाजन-पूर्व युग में जनता के लिए अपनी कोटि, धार्मिक और सांस्कृतिक अस्मिताओं की पहचान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह पहचान न केवल उनके आत्मसम्मान और सामाजिक स्थिति से जुड़ी होती है, बल्कि उन्हें राजनीतिक और साम्प्रदायिक प्रभावों के बीच बचाए रखने का माध्यम भी बनती है। तमस में साहनी ने इसी पहलू को बड़े यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे जनता अपने धर्म, जाति और सांस्कृतिक पहचान के आधार पर समाज में अपनी जगह समझती है और किन परिस्थितियों में यह पहचान खतरे में पड़ जाती है। इस प्रकार तमस उपन्यास सामाजिक संरचना, राजनीतिक खेल और मानवीय संवेदनाओं का एक ऐसा समग्र चित्र प्रस्तुत करता है, जो पाठक को यथार्थ और मानवीय दृष्टि दोनों से सोचने पर मजबूर करता है। साहनी का यह दृष्टिकोण उन्हें केवल उपन्यासकार ही नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ के संवेदनशील चिंतक भी बनाता है।



13.7 सारांश

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक दंगे, इस सांप्रदायिक दंगे के पीछे की कारणों और दंगे की दुष्परिणामों को उजागर किया है। सांप्रदायिक दंगे में सबसे ज्यादा नुकसान हमेशा समाज के गरीब और सर्वहारा वर्ग को होता है। भीष्म साहनी का तमस उपन्यास विभाजन-पूर्व भारत के साम्प्रदायिक दंगों और सामाजिक विघटन पर केंद्रित है। यह उपन्यास न केवल धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास और नफरत के प्रभाव को उजागर करता है, बल्कि समाज में समानता, न्याय और मानवीय संवेदनाओं की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। साहनी ने पात्रों जैसे-नत्थू, मुराद अली और खिज़र-के माध्यम से दलित, गरीब, स्त्री और मजदूर वर्ग की समस्याओं को दिखाया है और उनके संघर्ष और पीड़ा को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उपन्यास में साम्प्रदायिकता को एक संक्रामक रोग की तरह चित्रित किया गया है, जो समाज में विभाजन, हिंसा और भय पैदा करती है। सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' नीति, राजनीतिक स्वार्थ और सामाजिक असमानताएँ उपन्यास की घटनाओं को और गहरा करती हैं। तमस केवल ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह मानवता, सहानुभूति और प्रगतिशील जीवन मूल्यों का संदेश भी देता है।



13.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : तमस' की मूल समस्या साम्प्रदायिकता और उसके कारण समाज में उत्पन्न नफरत, हिंसा और विभाजन की त्रासदी है।

प्रश्न 2 का उत्तर : मानवता की रक्षा करना, साम्प्रदायिकता की राजनीति का पर्दाफाश करना और प्रगतिशील जीवन मूल्यों को सामने लाना है।

प्रश्न 3 का उत्तर : अंग्रेजों ने ''फूट डालो और राज करो'' की नीति से हिंदू-मुसलमानों के बीच वैमनस्य पैदा कर दंगे भड़काए और अपने शासन को सुरक्षित रखा।

प्रश्न 4 का उत्तर :- आम जनता का जीवन, उनकी पीड़ा, भय, धार्मिक

असहिष्णुता और विभाजन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया गया है।

प्रश्न 5 का उत्तर : तमस' का अर्थ अंधकार है, जो साम्प्रदायिक हिंसा, नफरत, विभाजन और मानवीय संवेदनाओं के क्षरण का प्रतीक है।

प्रश्न 6 का उत्तर : साम्प्रदायिकता को एक संक्रामक रोग की तरह चित्रित किया है, जो मानवता को नष्ट कर समाज को हिंसा और विनाश की ओर ले जाती है।



13.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- सक्सेना, राजेश्वर, ठाकूर, प्रताप. (संपा.) (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और रचना.वाणी प्रकाशन.
- बाबर, डॉ. सरेश. (2019). भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन. वाणी प्रकाशन.
- कुचेकर, डॉ. भारत. (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और कृतित्व. वाणी प्रकाशन.
- गासो, रिीन्द्र. (2019). भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना. वाणी प्रकाशन.
- साहनी, भीष्म. (1973). तमस.राजकमल प्रकाशन.
- साहनी, भीष्म. (1975). तमस(उपन्यास). साहित्य अकादमी.

13.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. भीष्म साहनी ने तमस उपन्यास किस सामाजिक समस्या पर केंद्रित किया है?
2. उपन्यास में प्रगतिशील जीवन मूल्यों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
3. साम्प्रदायिकता को उपन्यास में किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?
4. उपन्यास में विभाजन-पूर्व सामाजिक परिवेश का संक्षिप्त चित्रण कीजिए।

5. तमस में मानवता और इंसानियत की क्या भूमिका है?
6. उपन्यास का मूल उद्देश्य क्या है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. तमस उपन्यास की मूल समस्या और उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. भीष्म साहनी ने किस प्रकार अपने उपन्यास तमस में प्रगतिशील जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति दी है?
3. उपन्यास में साम्प्रदायिकता को एक संक्रामक रोग के रूप में कैसे चित्रित किया गया है?
4. विभाजन-पूर्व भारत के सामाजिक और राजनैतिक परिवेश का तमस में किस प्रकार चित्रण हुआ है?
5. तमस उपन्यास में राजनीतिक शक्तियों और उनके स्वार्थों का विश्लेषण कीजिए।
6. भीष्म साहनी ने तमस के माध्यम से किस प्रकार मानवता को सबसे बड़ा जीवन मूल्य माना है? विस्तार से लिखिए।

******

इकाई-14 : तमस (भाग-III)

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 तमस उपन्यास का पात्र परिचय

14.4 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली

14.5 'तमस' उपन्यास में संवाद योजना

14.6 सारांश

14.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

14.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

14.9 अभ्यास प्रश्न

14.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- 'तमस' उपन्यास के पात्र योजना को आप समझ पाएंगे।
- तमस उपन्यास में प्रमुख और गौण पात्रों की विशेषताओं, उनकी सामाजिक और मानसिक स्थिति को पहचानेंगे।
- तमस उपन्यास के भाषा शैली को आप जानेंगे।
- तमस उपन्यास के संवाद योजना से परिचित होंगे।
- संवाद-योजना के माध्यम से कथा की गतिशीलता, पात्रों की जीवंतता और यथार्थ परकता को पहचानेंगे।
- उपन्यास में व्यक्त गहरी संवेदनाएँ और सहानुभूति को जानेंगे।

14.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी का नाम उन साहित्यकारों में लिया जाता है जिन्होंने समाज की सच्चाइयों को अपनी रचनाओं के माध्यम से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। उनका उपन्यास तमस विभाजन-कालीन भारतीय समाज की त्रासदी को उजागर करने वाली एक कालजयी कृति है। विभाजन का दौर केवल

राजनीतिक परिवर्तन का समय नहीं था, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक मूल्यों और इंसानियत के बिखरने का भी काल था। तमस में इस पूरे वातावरण को भीष्म साहनी ने अत्यंत संवेदनशीलता और गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसकी पात्र-योजना बहुत ही व्यापक और सशक्त है। यहाँ न केवल मुख्य पात्र जैसे नत्थू, बक्शी जी, हयात बख्श, हज़ारा सिंह और रिचर्ड सामने आते हैं, बल्कि स्त्रियाँ, बच्चे, बूढ़े और साधारण जनता भी पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। हर पात्र केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि उस समय की एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परत का प्रतीक है। भीष्म साहनी ने इन पात्रों के माध्यम से विभाजन की पीड़ा, भय, असहायता और विड़ंबनाओं को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उभारा है। इसी प्रकार तमस की भाषा-शैली भी इसे विशिष्ट बनाती है। भीष्म साहनी ने भाषा को बोझिल या कृत्रिम न बनाकर उसे आम जनता की बोलचाल के बहुत निकट रखा है। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है, जिसमें तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों का संतुलित प्रयोग हुआ है। प्रतीक और बिंबों का ऐसा सशक्त प्रयोग मिलता है जिससे भाषा केवल सूचनात्मक न रहकर संवेदनाओं को भी गहराई से व्यक्त करती है। शीर्षक तमस स्वयं अंधकार, हिंसा और अमानवीयता का प्रतीक है। यही भाषा उपन्यास की जीवन्तता और प्रभावोत्पादकता को बढ़ाती है। साथ ही, उपन्यास में प्रयुक्त संवाद-योजना इसकी गतिशीलता का आधार है। संवादों के माध्यम से न केवल कथा आगे बढ़ती है, बल्कि पात्रों का चरित्र-चित्रण भी गहराई से सामने आता है। भीष्म साहनी ने हर पात्र को उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और मानसिक स्थिति के अनुसार संवाद दिए हैं, इसलिए वे पूर्णत: स्वाभाविक और जीवंत प्रतीत होते हैं। संवादों ने उपन्यास को न केवल यथार्थपरक बनाया है, बल्कि उसकी प्रभावोत्पादकता भी बढ़ाई है। इस प्रकार, तमस केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि विभाजन-कालीन समाज का सजीव दस्तावेज़ है। इसकी गहन प्रभावशीलता की जड़ें इसकी सशक्त पात्र-योजना, सहज और व्यंजना-समृद्ध भाषा-शैली तथा जीवन्त संवाद-योजना में निहित हैं। यही तत्व इसे हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय कृतियों में स्थान प्रदान करते हैं।

14.3 तमस उपन्यास का पात्र परिचय

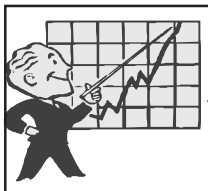
भीष्म साहनी के तमस की पात्र-योजना अत्यंत सशक्त और यथार्थपरक है। इसमें विभाजन-कालीन समाज का जीवंत चित्र मिलता है। लेखक ने सभी वर्गों और समुदायों के पात्रों को स्थान दिया है, जिससे उपन्यास का कैनवास व्यापक बन गया है। नत्थू चर्मकार दलित और शोषित वर्ग का प्रतिनिधि है,

जो विवश परिस्थितियों के कारण साम्प्रदायिक षड़यंत्र का हिस्सा बनता है। बक्शी जी कांग्रेस के नेता हैं, जिनके भीतर आदर्श और व्यवहार की खींचतान दिखाई देती है। हयात बख्श मानवीय दृष्टि वाला मुस्लिम चरित्र है, जबकि सरदार हजारा सिंह सिख अस्मिता और साहस का प्रतीक बनकर उभरता है। अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड उपन्यास में औपनिवेशिक दृष्टिकोण और राजनीति को उजागर करता है। इनके अतिरिक्त स्त्रियाँ, बच्चे और बूढ़े पात्र भी अपनी पीड़ा और असहायता के माध्यम से विभाजन की त्रासदी को और अधिक सजीव बना देते हैं। इन पात्रों की विशेषता यह है कि ये केवल व्यक्तित्व नहीं, बल्कि पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें किसी प्रकार की आदर्शवादी कृत्रिमता नहीं है, बल्कि उनके मानवीय गुण-दोषों के साथ यथार्थ रूप सामने आता है। यही कारण है कि तमस के पात्र विश्वसनीय और प्रभावोत्पादक प्रतीत होते हैं। पात्र-योजना के माध्यम से भीष्म साहनी ने विभाजन-कालीन समाज की सम्पूर्ण छवि प्रस्तुत की है और यही इस उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति है। 'तमस' उपन्यास में चित्रित कुछ पात्रों का परिचय निम्नलिखित हैं-

नत्थू : नत्थू उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जो एक साधारण और गरीब मजदूर है। वह आर्थिक रूप से कमजोर है और जीविका चलाने के लिए रोज मेहनत करता है। उसकी जिंदगी में संघर्ष और बेबसी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो उसे आसान शिकार बना देती है। उपन्यास की शुरुआत में, नत्थू को एक सुअर को मारने और उसकी लाश को मस्जिद के सामने फेंकने के लिए बहलाया-फुसलाया जाता है। उसे यह कार्य एक मामूली मजदूरी के बदले में करने को कहा जाता है, लेकिन वह नहीं जानता कि उसका यह छोटा-सा काम एक बड़े सांप्रदायिक दंगे का कारण बन जाएगा। उसका यह कार्य अनजाने में उस हिंसक चक को शुरू कर देता है, जो पूरे शहर को आग की लपटों में झोंक देता है। उसका चरित्र यह दिखाता है कि कैसे असहाय और अज्ञान व्यक्तियों को सांप्रदायिक राजनीति के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

बख्शीजी : बख्शीजी उपन्यास का एक ऐसा पात्र है जो राजनीति और सत्ता के समीकरणों को भली-भांति समझता है। वह एक प्रभावशाली नेता है, जो समाज में सांप्रदायिक तनाव को जान बूझकर हवा देता है ताकि उसे राजनीतिक लाभ मिल सके।उसका मुख्य उद्देश्य दंगों की आग को इस तरह भड़काना है

कि जनता के बीच असुरक्षा की भावना फैले और वह स्वयं 'रक्षक' की भूमिका में उभरे। बख्शीजी जैसे चरित्रों के माध्यम से लेखक ने दिखाया है कि कैसे कुछ नेता धर्म और भावनाओं का इस्तेमाल करके समाज को तोड़ते हैं और खुद की सत्ता मजबूत करते हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'नत्थू' पर एक टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 2. नत्थू पात्र किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है?

प्रश्न 3. तमस' उपन्यास में बक्शी जी किस राजनीतिक दल से जुड़े हैं?

रिचर्ड : रिचर्ड एक अंग्रेज अधिकारी है, जो ब्रिटिश शासन का प्रतिनिधि है और भारत में तैनात प्रशासनिक अफसरों में से एक है। वह उपन्यास में एक ऐसा पात्र है, जो अपने आपको तटस्थ और विवेकशील समझता है, लेकिन घटनाओं के केंद्र में होने के बावजूद वह निष्क्रिय बना रहता है। रिचर्ड का दृष्टिकोण एक पर्यवेक्षक जैसा है- वह दंगों, तनाव और सामाजिक टूट-फूट को होते हुए देखता है, पर उनमें हस्तक्षेप करने से बचता है। उसकी निष्क्रियता यह दर्शाती है कि कैसे ब्रिटिश शासन ने जानबूझकर ऐसे सांप्रदायिक तनावों को पनपने दिया, ताकि 'फूट डालो और राज करो' की नीति को बल मिले। रिचर्ड का चरित्र विशेष रूप से महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि वह 'सभ्यता' और 'शासन' का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन जब आम लोग अपनी जान बचाने के लिए तड़प रहे होते हैं, तब वह केवल बैठकर 'समझने' की कोशिश करता है, 'समाधान' की नहीं।

अज़ीज़ : अज़ीज़ एक संवेदनशील, भावनाशील और आम मुस्लिम नागरिक है, जो उपन्यास में दंगों की विभीषिका से जूझता हुआ दिखाई देता है। वह न तो कट्टर है, न ही राजनीति से जुड़ा हुआ कोई व्यक्ति- बल्कि एक साधारण इंसान है, जो अपने परिवार और समाज की भलाई चाहता है। जब शहर में सांप्रदायिक हिंसा भड़कती है, तो अज़ीज़ खुद को और अपने परिवार को सुरक्षित रखने के लिए संघर्ष करता है। वह यह सब देखकर टूट जाता है कि कैसे वर्षों की साझी विरासत, मोहल्ले की मित्रता और इंसानियत की भावना अचानक गायब हो गई है। अज़ीज़ का किरदार उस मानसिक द्वंद को दर्शाता है जो उस समय के आम

मुसलमानों ने झेला- उन्हें यह समझ ही नहीं आ रहा था कि वे किससे डरें और किससे उम्मीद करें। उसके मन में डर है, पर साथ ही विश्वास भी कि शायद सब ठीक हो जाए। वह हिंसा से घृणा करता है और शांति का पक्षधर है।

मास्टर रामदास : मास्टर रामदास एक पढ़े-लिखे, शिक्षित और सजग नागरिक हैं, जो अपने आदर्शों में गहराई से विश्वास रखते हैं। वे पेशे से शिक्षक हैं और उनके भीतर समाज के प्रति गहरी जिम्मेदारी और संवेदनशीलता है। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवन भर इंसानियत, शांति और सौहार्द के पक्षधर रहे हैं। जब दंगे भड़कते हैं, मास्टर रामदास बहुत ही आंतरिक संकट से जूझने लगते हैं। उन्होंने अपने जीवन में हमेशा नैतिक मूल्यों और भाईचारे की शिक्षा दी थी, लेकिन अब वही समाज नफरत, हिंसा और अलगाव में डूब चुका है।

मेहता : मेहता एक प्रबुद्ध, शिक्षित और वैचारिक रूप से जागरूक पात्र हैं, जो सामाजिक और राजनीतिक हलचलों को गहराई से समझने का प्रयास करते हैं। वे लेखक के विचारों के प्रवक्ता जैसे प्रतीत होते हैं- ऐसे व्यक्ति जो सीधे हिंसा या सत्ता में शामिल नहीं हैं, लेकिन अपने चिंतन के माध्यम से समाज का विश्लेषण करते हैं। मेहता उन लोगों में से हैं जो स्वतंत्रता संग्राम, धर्मनिरपेक्षता और मानवतावाद जैसे सिद्धांतों में विश्वास रखते हैं। वह उस शिक्षित मध्यवर्ग का प्रतिनिधि हैं, जो खुद को तटस्थ, विवेकशील और सिद्धांतवादी मानता है। लेकिन जब सांप्रदायिक दंगे और हिंसा की आग समाज को घेर लेती है, तब यह वर्ग पूरी तरह निष्क्रिय और बेबस नजर आता है।

लिज़ा: लिज़ा एक अंग्रेज महिला है, जो रिचर्ड की मित्र और सांस्कृतिक साथी के रूप में उपन्यास में प्रस्तुत की गई है। वह एक गहरी संवेदनशीलता और कलात्मक रुचियों वाली स्त्री है, जो भारत की संस्कृति, संगीत और कला से आकर्षित है। लिज़ा का चरित्र उपन्यास में बाहरी यानी पश्चिमी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है- वह भारतीय समाज को एक 'रूमानी', रहस्यमय और आकर्षक रूप में देखती है। लेकिन जब वह भारत की जमीनी सच्चाई, विशेषकर सांप्रदायिक हिंसा और सामाजिक टूट-फूट से परिचित होती है, तो उसके अंदर एक गहरी बेचैनी और असमंजस पैदा होता है।

14.4 तमस उपन्यास की भाषा-शैली

किसी भी उपन्यास की सफलता में उसकी भाषा और शैली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा ही वह माध्यम है जो कथा, पात्र और लेखक की दृष्टि को पाठक तक पहुँचाती है। भीष्म साहनी का तमस भाषा-शैली की दृष्टि से अत्यंत सशक्त और विशिष्ट कृति है।

1. जन-सामान्य की भाषा का प्रयोग

भीष्म साहनी ने भाषा को साहित्यिक आडंबर से दूर रखा है। उनकी भाषा में न तो कृत्रिमता है, न ही शब्दाडंबर। उन्होंने वही शब्द और वाक्य चुने हैं जो आम जनता बोलचाल में प्रयोग करती है। इससे उपन्यास का वातावरण यथार्थपरक और जीवंत हो उठता है।

2. संवाद-प्रधान शैली

तमस में संवाद पात्रों के विचार, भावनाएँ और परिस्थितियाँ स्पष्ट करने का प्रमुख साधन हैं। संवाद छोटे, सहज और प्रभावशाली हैं। पात्रों के बीच होने वाली बातचीत इतनी स्वाभाविक है कि पाठक को लगता है मानो वह प्रत्यक्ष सुन रहा हो।

3. तद्भव, तत्सम और देशज शब्दों का संतुलित प्रयोग

भीष्म साहनी ने भाषा में विविध शब्दों का प्रयोग किया है-

- तत्सम शब्द (जैसे- अंधकार, समाज, राजनीति) गंभीर और औपचारिक स्थितियों में आए हैं।
- तद्भव शब्द (जैसे- बुरा, अच्छा, डर) सहज बोलचाल के संदर्भों में प्रयोग हुए हैं।
- देशज शब्द (जैसे- कुर्सी, गली, पगड़ी) पात्रों की स्थानीयता और सामाजिक पृष्ठभूमि को प्रकट करते हैं।

इस संतुलन ने भाषा को न केवल जीवंत बनाया, बल्कि पात्रों और परिवेश को भी स्वाभाविकता प्रदान की।

4. मध्यवर्गीय संस्कार का प्रभाव

उपन्यास में प्रयुक्त शब्दावली और अभिव्यक्ति मुख्यत: मध्यवर्गीय समाज

की है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि उपन्यास के अधिकांश पात्र इसी वर्ग से आते हैं। इससे भाषा पाठक को सहज रूप से निकटता का अनुभव कराती है।

5. प्रतीक और बिंबों का प्रयोग

भाषा में प्रतीक और बिंबों के प्रयोग से संप्रेषण शक्ति बढ़ जाती है। तमस शब्द स्वयं ही अंधकार, हिंसा और अमानवीयता का प्रतीक है। सूअर का वध, खून, आग, भीड़-ये सभी बिंब भाषा को गहराई और व्यंजना प्रदान करते हैं।

6. मिथक और उपमानों का प्रयोग

लेखक ने समय-समय पर मिथकीय संकेत और उपमानों का प्रयोग किया है, जिससे भाषा में लय और अर्थविस्तार आता है। उपमान सामान्य और जनजीवन से जुड़े हैं, जिससे पाठक आसानी से उन्हें ग्रहण कर सके।

7. स्पर्श और भावात्मक शब्दों का प्रयोग

भीष्म साहनी की भाषा भावनाओं को छूने वाली है। भय, पीड़ा, असहायता और त्रासदी की स्थिति को उकेरने में उन्होंने ऐसे शब्द चुने हैं, जो सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करते हैं।

8. सहजता और प्रवाह

तमस की भाषा में कोई बाहरीपन या कृत्रिमता नहीं है। वाक्य छोटे-छोटे, सरल और प्रवाहमय हैं। भाषा का प्रवाह ऐसा है कि पाठक बिना अटके उपन्यास को लगातार पढ़ता चला जाता है।



महत्वपूर्ण बिंदु-

1. मुख्य पात्र-

- **नत्थू (चर्मकार)**-दलित वर्ग का प्रतिनिधि। वह सूअर मारने के लिए विवश होता है, जबकि जानता है कि यह कार्य साम्प्रदायिक षडयंत्र का हिस्सा है। उसकी विवशता और असहायता समाज के शोषित वर्ग की स्थिति का प्रतीक है।
- **बक्शी जी**- कांग्रेस से जुड़े नेता, जो राजनीति और आदर्शों के बीच उलझे रहते हैं।
- **हयात बख्श**- मुस्लिम चरित्र, जो साम्प्रदायिक माहौल से आहत है,

परन्तु मानवता का पक्षधर है।

- **सरदार हजारा सिंह**- सिख समुदाय का प्रतिनिधि, जो अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करता है।
- **रिचर्ड**- अंग्रेज़ अफ़सर, जो विभाजन की राजनीति में औपनिवेशिक दृष्टिकोण को उजागर करता है।

2. तमस के पात्र केवल व्यक्तिगत न होकर पूरे समाज के दर्पण हैं।

- दलित, शोषित और मजदूर वर्ग की विवशता-नत्थू।
- मध्यवर्गीय राजनीति और दुविधा-बक्शी जी।
- सांप्रदायिक कट्टरता- उन्मादी नेता और भीड़।
- औपनिवेशिक दृष्टि - अंग्रेज़ अधिकारी।

तमस उपन्यास की भाषा-शैली इसकी सबसे सशक्त विशेषताओं में से एक है, जो लेखक की संवेदनशीलता, यथार्थवाद और कलात्मकता को दर्शाती है। तमस की भाषा अत्यंत सरल, प्रवाहपूर्ण और सहज है। लेखक ने कहीं भी जटिल या क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं किया है, जिससे आम पाठक भी उपन्यास की भावना से जुड़ पाता है। भाषा जनसामान्य की बोलचाल की शैली में है, जिससे पात्रों की मानसिक स्थिति और सामाजिक पृष्ठभूमि का यथार्थ चित्रण संभव होता है। भीष्म साहनी ने पात्रों के संवादों में पंजाबी, उर्दू और हिंदी की मिलीजुली भाषा का प्रयोग किया है। यह न केवल पात्रों की सांस्कृतिक पहचान को उजागर करता है, बल्कि उपन्यास को वास्तविकता के करीब भी लाता है। उदाहरण स्वरूप, मुस्लिम पात्रों के संवादों में उर्दू की मिठास और हिंदू पात्रों की हिंदी में स्थानीयता का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। तमस की भाषा में कहीं-कहीं तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है, जो लेखक की विचारधारा को स्पष्ट करता है। खासकर राजनीतिक नेताओं, धार्मिक ठेकेदारों और सरकारी तंत्र पर व्यंग्य करते हुए भाषा में कटाक्ष का पुट आता है। फिर भी भीष्म साहनी ने लेखन में तटस्थता बनाए रखी है- वे किसी एक पक्ष को सही या गलत ठहराने की बजाय समग्र यथार्थ प्रस्तुत करते हैं। भीष्म साहनी की भाषा शैली में चित्रात्मकता भी दिखाई देती है। चाहे वह मृत सुअर का दृश्य हो या दंगे के बीच सिहरती औरतें- सभी दृश्यों का वर्णन ऐसा है कि पाठक उन्हें अपनी आंखों के सामने घटित होते महसूस करता है। उपन्यास में संवादों

का प्रयोग भरपूर है, जो पात्रों को जीवंत बनाते हैं। संवाद नाटकीयता लाते हैं, साथ ही पात्रों की मनोवृत्ति, मानसिक तनाव और सामाजिक सोच को भी उजागर करते हैं। संवादों की शैली में स्वाभाविकता है, जिससे घटनाएं अधिक प्रभावशाली बनती हैं। तमस की भाषा शैली यथार्थपरक, संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण है। यह शैली न केवल उपन्यास के कथ्य को प्रभावी बनाती है, बल्कि पाठकों को सोचने पर भी मजबूर करती है। भीष्म साहनी ने भाषा के माध्यम से विभाजन की त्रासदी को जिस तरह से अभिव्यक्त किया है, वह हिंदी उपन्यास साहित्य में एक अनुकरणीय उदाहरण है।

14.5 'तमस' उपन्यास में संवाद योजना

उपन्यास की कथावस्तु को सजीव और रोचक बनाए रखने के लिए संवादों का विशेष महत्व होता है। संवाद कथा को गति देते हैं और उसे प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में संवादों की ऐसी योजना प्रस्तुत की है जो न केवल स्वाभाविक है बल्कि पात्रों की मानसिकता और परिस्थिति के अनुकूल भी है। जिस पात्र को जैसे बोलना चाहिए, उसका लहजा और भाषा उसी के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार गढ़ी गई है। यही कारण है कि संवाद कृत्रिम या बनावटी नहीं लगते, बल्कि सहज और स्वाभाविक प्रतीत होते हैं। इन संवादों से कथा में गति का संचार होता है और पाठक का ध्यान निरंतर जुड़ा रहता है। साहनी की संवाद योजना में प्रभावोत्पादकता है, जिसके कारण उनके पात्र अधिक जीवंत बनते हैं और चरित्र-चित्रण उत्कृष्ट रूप में सामने आता है। संवादों ने ही उपन्यास की गतिशीलता को बनाए रखा है और कथा को गहराई तथा यथार्थपरकता प्रदान की है। 'तमस' उपन्यास की संवाद योजना को हम निम्नलिखित विशेषताओं से समझ सकते हैं-

1. कथावस्तु की गति और संवाद का संबंध

उपन्यास की कथावस्तु को रोचक और गतिशील बनाए रखने में संवाद अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहाँ वर्णन मात्र कथानक को स्थिर बना सकता है, वहीं संवाद उसे आगे बढ़ाने और जीवंत बनाने का कार्य करते हैं। तमस में संवादों का प्रयोग केवल घटनाओं की सूचना देने के लिए नहीं हुआ है, बल्कि उन्होंने पूरे वातावरण को जीवंत कर दिया है।

2. सहजता और स्वाभाविकता

भीष्म साहनी के संवाद पात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि, मानसिक स्थिति और परिस्थितियों के अनुरूप ढले हुए हैं। जिस पात्र को जिस लहजे में बोलना चाहिए, वही लहजा उन्होंने दिया है। यही कारण है कि संवाद कृत्रिम या साहित्यिक नहीं लगते, बल्कि बिल्कुल सहज और स्वाभाविक प्रतीत होते हैं।

3. चरित्र-चित्रण का साधन

तमस में संवादों के माध्यम से न केवल घटनाएँ आगे बढ़ती हैं, बल्कि पात्रों का चरित्र-चित्रण भी सशक्त रूप से उभरकर आता है।

- नत्थू के संवाद उसके असहाय और विवश जीवन को प्रकट करते हैं।
- साम्प्रदायिक नेताओं और उन्मादी भीड़ के संवाद उनके आक्रामक और हिंसक मानसिकता का दर्पण हैं।
- साधारण जनता के संवाद उनकी पीड़ा, भय और असुरक्षा की अनुभूति कराते हैं।

4. प्रभावोत्पादकता

तमस के संवाद प्रभावोत्पादक हैं वे न केवल कथा को आगे बढ़ाते हैं, बल्कि पाठक को भावनात्मक रूप से भी प्रभावित करते हैं। संवादों में कभी व्यंग्य, कभी करुणा और कभी विद्रोह रूप का ऐसा समावेश मिलता है, जो उपन्यास को गहन अर्थ प्रदान करता है।

5. कथानक की मनोरंजकता और यथार्थपरकता

संवादों की बदौलत कथानक नीरस या बोझिल नहीं होता। संवाद पाठक को पात्रों के साथ जोड़ते हैं और घटनाओं को प्रत्यक्ष अनुभव की भांति प्रस्तुत करते हैं। संवादों ने उपन्यास को मनोरंजक ही नहीं बनाया, बल्कि उसकी यथार्थ परकता को भी दृढ़ किया है।

6. गतिशीलता का निर्वाह

संवादों के कारण उपन्यास में कहीं भी ठहराव नहीं आता। वे कथा को लगातार गति देते हैं। यही संवाद योजना तमस की सबसे बड़ी शक्ति है, जिसने इसे केवल घटनाओं का चित्रण नहीं, बल्कि जीवंत और गतिशील कृति बना दिया है।



अपनी प्रगति जांचे-

प्रश्न 4. यात बख्श का चरित्र किस दृष्टि और गुण का प्रतीक है?

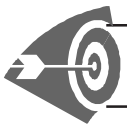
प्रश्न 5. उपन्यास में संवादों की प्रमुख विशेषता क्या है?



14.6 सारांश

भीष्म साहनी के उपन्यास तमस की भाषा-शैली उसकी विशेष पहचान है। इस उपन्यास में भाषा केवल कथा को आगे बढ़ाने का साधन नहीं है, बल्कि यह पात्रों की मनोस्थिति, सामाजिक परिवेश और घटनाओं की गंभीरता को प्रभावशाली रूप में पाठक तक पहुँचाने का माध्यम भी है। सबसे पहले, भाषा की सहजता और स्वाभाविकता इसकी प्रमुख विशेषता है। भीष्म साहनी ने जनसाधारण की बोली को अपनी लेखनी में समाहित किया है। संवाद और वर्णन ऐसे चुने गए हैं कि वे पाठक को वास्तविक जीवन के दृश्यों में ले जाते हैं। भाषा में कोई बाहरीपन या अतिशयोक्ति नहीं है, यही इसे अधिक विश्वसनीय और जीवंत बनाता है। तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों का संतुलित प्रयोग भी भाषा की विशेषता है। गंभीर और औपचारिक स्थितियों में तत्सम शब्दों का प्रयोग होता है, सहज और बोलचाल की भाषा में तद्भव शब्दों का उपयोग किया गया है और पात्रों के स्थानीयपन या सामाजिक स्तर को प्रदर्शित करने के लिए देशज शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। इस संयोजन से भाषा प्रवाहपूर्ण और अर्थपूर्ण बनती है। भाषा में प्रतीक, बिंब और उपमानोंका प्रयोग इसे और अधिक प्रभावशाली बनाता है। उपन्यास का शीर्षक तमस ही अंधकार, हिंसा और मानवता की हानि का प्रतीक है। सूअर का वध, आग, खून और भयभीत भीड़-ये सभी प्रतीक और बिंब भाषा में गहराई और व्यंजना लाते हैं। साथ ही, मिथक, उपमान और भावात्मक शब्दों का संतुलित प्रयोग पाठक को पात्रों और घटनाओं के भावों से जोड़ता है। भाषा का यह प्रवाह संवादों के माध्यम से और अधिक सजीव हो जाता है। संवाद-योजना के अंतर्गत हर पात्र की बोलचाल उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और मानसिक स्थिति के अनुसार होती है। इससे न केवल संवाद स्वाभाविक लगते हैं, बल्कि उपन्यास की गतिशीलता और पाठक पर प्रभाव भी बढ़ जाता है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि तमस की भाषा-शैली सरल, सहज, प्रभावशाली और प्रतीकात्मक है। यह पात्रों की मनोस्थिति और सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से उभारती है और उपन्यास को न केवल यथार्थपरक बनाती है, बल्कि उसे हिंदी साहित्य में कालजयी कृति का दर्जा भी प्रदान करती है।



14.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : नत्थू उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जो एक साधारण और गरीब मजदूर है। अधिक जानने के लिए 'तमस' उपन्यास का पात्र परिचय को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

प्रश्न 2 का उत्तर : नत्थू दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वह समाज के निम्न वर्ग का पात्र है, जो विभाजन और साम्प्रदायिक षड़यंत्र की परिस्थितियों में असहाय और विवश होता है।

प्रश्न 3 का उत्तर : बक्शी जी कांग्रेस राजनीतिक दल से जुड़े हैं।

प्रश्न 4 का उत्तर : हयात बख्श का चरित्र मानवता और सहिष्णुताका प्रतीक है।

प्रश्न 5 का उत्तर : तमस के संवादसहज, स्वाभाविक और प्रभावोत्पादक हैं।



14.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- सक्सेना, राजेश्वर, ठाकूर, प्रताप. (संपा.) (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और रचना.वाणी प्रकाशन.
- बाबर, डॉ. सरेश. (2019). भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन. वाणी प्रकाशन.
- कुचेकर, डॉ. भारत. (2019). भीष्म साहनी: व्यक्तित्व और कृतित्व. वाणी प्रकाशन.
- गासो, रिन्द्री. (2019). भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना. वाणी प्रकाशन.
- साहनी, भीष्म. (1973). तमस.राजकमल प्रकाशन.
- साहनी, भीष्म. (1975). तमस(उपन्यास). साहित्य अकादमी.

14.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. नत्थू कौन है ?
2. भीष्म साहनी ने पात्रों के संवादों में क्या-क्या मिलीजुली भाषा का प्रयोग हुआ है ?
3. प्रस्तुत उपन्यास में पश्चिमी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कोन सा पात्र करता हैं?
4. 'तमस' की भाषा में किस प्रकार की सहजता दिखाई देती है?
5. संवाद योजना का उपन्यास में क्या महत्व है?
6. भीष्म साहनी के संवादों की एक विशेषता लिखिए ।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. आपके मतानुसार 'तमस' उपन्यास में उल्लेखित प्रमुख तीन पात्रों पर चर्चा करे।
2. तमस उपन्यास की भाषा-शैली पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।
3. तमस उपन्यास के सामान्य पात्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
4. 'तमस' उपन्यास में संवाद योजना कैसे कथा की गतिशीलता बनाए रखती है?
5. उपन्यास का शीर्षक 'तमस' और उसमें प्रयुक्त प्रतीक एवं बिंबों का सामाजिक अर्थ समझाइए।
6. भीष्म साहनी के संवादों की प्रमुख विशेषता क्या है?

******

KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY
Headquarter : Patgaon, Rani, Guwahati - 781017, Assam, India
City Office: NH 37, Resham Nagar, Khanapara, Guwahati-781022, Assam, India
Tel. : 0361-2235971 / 2234964, Fax : 0361-2235398
Website : www.kkhsou.in

Printed at : R.R. Graphics, Rajgarh Road, Bylane:03, H.no. 15, Guwahati-781003